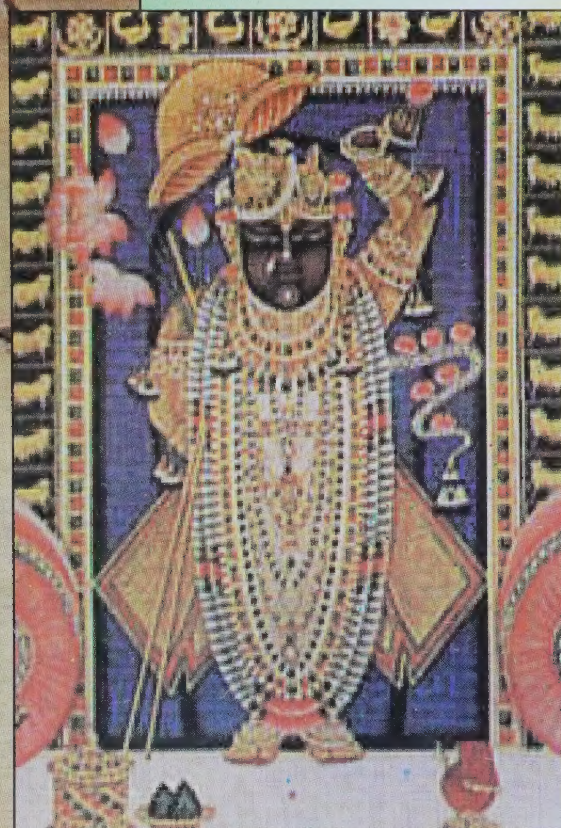
त्रैमासिक

हरिसिंगार

वर्ष २ अंक १,२





अष्टछाप के महाकवि नन्ददास अंक

॥ श्रीनाथजी ॥

श्रीनाथजी में आगत परम वैष्णवजनों को हमारी ओर से

हार्दिक शुभकामनायें

आपकी सेवा में सदैव तत्पर

श्रीनाथजी में असल स्वच्छ सूरती भोजन

का एक मात्र स्थान

श्री वल्लभा

पधारिये !



अवश्य पधारिये !

मद्रासी एवं उत्तर भारतीय अल्पाहार

के लिए एक मात्र स्थान

तृप्ति

श्री वल्लभा भोजनालय

मोती महल के सामने

पायगा ब्लॉक रोड़, पहली मंजिल

नाथद्वारा (राज.) फोन : 2143

तृप्ति

देहली बाजार

नाथद्वारा (राज.)

फोन : 2161

त्रैमासिक
हरसिंगार

ब्रज-कोकिल
नन्ददास अंक

✪ वर्षः २ ✪ अंक : १–२ ✪
✪ जनवरी–जून १९९९ ✪

✪ संरक्षक ✪
मनोहर कोठारी

✪ सम्पादक ✪
भगवती प्रसाद देवपुरा

✪ प्रबन्ध सम्पादक ✪
श्याम प्रकाश देवपुरा

✪ विज्ञापन–व्यवस्था ✪
संजय प्रकाश देवपुरा

✪ प्रकाशक ✪
साहित्य-मण्डल, श्रीनाथद्वारा

दूरभाष : ३०७८५

शुल्क :
एक अंक १५ रु.–वार्षिक ५५ रु.
(इस संयुक्तांक का मूल्य ३० रु. है)

लेज़र टाईप सेटिंग :
मेवाड़ कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स
एस.१९, मल्लातलाई, उदयपुर।

मुद्रक :
हरिहर प्रिण्टर्स, जयपुर

-अनुक्रमणिका-



सम्पादकीय

इस वर्ष पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह दिनांक ७ एवं ८ फरवरी, १९९९ को आयोज्य है, इसके अन्तर्गत सदैव की भाँति अष्टछाप के एक प्रमुख कवि श्री नन्ददासजी पर आलेख वाचन, साहित्यकार सम्मान समारोह, विराट ब्रजभाषा कवि सम्मेलन, बच्चों का विदाई समारोह, 'भाषा–भगिनी नाटिका' का मंचन' समस्यापूर्ति कार्यक्रम, संस्था कायकर्त्ताओं का सम्मान एवं 'ब्रज–कोकिल : नन्ददास' ग्रंथ' का लोकार्पण आयोज्य है। समस्यापूर्ति के लिए इस बार कवित्त, सवैया से हटकर, रोलाछन्द में सम्पूर्त्य दो समस्याएँ रखी हैं – (१.) सुनो ब्रजनागरी' और (२.) सखा सुन श्याम के।

गत वर्ष संस्था ने 'हरसिंगार' त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया था। उसके 'गोस्वामी तिलकायित 'गोविन्दलाल', 'शौर्य अंक' तथा 'अंग्रेजी हटाओं अंक' अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। इन्हें हिन्दी–संसार ने मुक्त कण्ठ से सराहा है। इसीसे उत्साहित होकर 'ब्रज–कोकिल : नन्ददास' ग्रंथ के प्रकाशन के साथ ही हमने 'हरसिंगार' का भी 'महाकवि नन्ददास' अंक प्रकाशित किया है; जिसमें नन्ददास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है और समारोह से सम्बन्धित अन्य सामग्री का पूर्ण विवरण प्रकाशित किया गया है। आशा है, यह अंक भी पूर्ववत् सम्मान प्राप्त करेगा।

पाटोत्सव के इस विशिष्ट समारोह में देश के कई मूर्द्धन्य–विद्वान, साहित्यकार, कवि तथा पत्रकार महानुभाव सम्मिलित हो रहें हैं। एक ओर उनके सामयिक सहयोग से ही सारा समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है तो दूसरी ओर नाथद्वारा के प्रबुद्ध और संभ्रान्त नागरिकगण अपनी अधिकाधिक उपस्थिति से कार्यक्रम में चार चाँद लगा देते हैं। इस अवसर पर मैं उपर्युक्त सभी महानुभावों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस वर्ष का वृहद् ग्रंथ, 'ब्रज–कोकिल: नन्ददास' तथा 'हरसिंगार' के विशेषांक का प्रकाशन संस्था ने अपने सीमित साधनों के बल पर ही किया है, निश्चित ही इसमें श्री श्याम राठी, तथा मन्दिर मण्डल का सहभाग रहा है। अत: मैं उन्हें अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ। समारोह के विविध कार्यक्रमों एवं मंडल–प्रकाशन में वैतनिक,अवैतनिक कार्यकर्त्ताओं तथा पूर्ववत: महानुभावों का यथेष्ठ सहयोग प्राप्त हुआ है– इनके प्रति भी हार्दिक आभार।

✍ भगवतीप्रसाद देवपुरा



पूज्यपाद गो. तिलकायित १०८ श्री राजीव जी (दाऊजी) महाराज श्री

।।श्रीनाथोविजयतेतराम्।।



श्रीमद्गोस्वामि तिलकायित महाराजश्री

पूज्यपाद १०८ (दाऊजी)

श्री राजीवजी

कृत

श्रीनवनीतप्रियजी

का

लालबाग में

वन-विहार-महोत्सव

३० जुलाई १९९८ से २ अगस्त १९९८ तक

नन्दनन्दन का वन विहार

विहरत विपिन विहार उदार रसिक नँदनन्दन।
नव कुमकुम घनसार चारू चिर्चित तन चन्दन।।
अद्भुत साँवल रूप अंग बन्यौ पीत वसन तनु।
मूरत धेरै श्रृंगार प्रेम अम्बर ओढ़े जनु।।
विलुतित उर वनमाल लाल जब चलत चाल वर।
कोटि मदन की भीर उठत छबि लुठत चरग तर।।

-नन्ददास- रासपंचाध्यायी

लाल बाग का वन-विहार महोत्सव

पुरुषोत्तम पालीवाल

गोसाईं श्री विट्ठलनाथजी ने जब पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के परम आराध्य भगवान श्रीनाथजी की सेवामें राग, भोग और श्रृंगार का प्रारम्भ किया तब उसमें विभिन्न मनोरथों को भी स्थान दिया गया। श्रीनाथजी का स्वरूप गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप ही है। अपने सम्पूर्ण बाल स्वरूप में बिराजते हुए भगवान श्रीकृष्ण वनों से पूरी तरह जुड़े रहे हैं, वनों में अनेक लीलाएँ की हैं। वनों की ऐसी प्रमुख भूमिका होने के कारण ही वन विहार महोत्सव को इस सम्प्रदाय में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

दो वर्ष पूर्व नगर के पश्चिम में स्थित रमणीक उद्यान 'कछवाई' में भी प्रभु का वन विहार महोत्सव हुआ था। वह आयोजन इतना भव्य था कि उसे आज तक लोग याद करते हैं। नगर से लगभग दो किलोमीटर दूर हुए इस आयोजन का दर्शन लाभ प्राप्त करने हेतु गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवं राज्य के अनेक भागों से सहस्रों श्रद्धालु उमड़ पड़े थे जिससे आवागमन के समय लोगों को कठिनाई हुई किन्तु उद्यान की सुन्दरता के साथ प्रभु श्रीनवनीतप्रियजी एवं काँकरोली से पधारे प्रभु श्री द्वारिकाधीश की नौका विहार की भव्य झाँकी के दर्शन कर कष्ट का उन्हें मान भी नहीं रहा। यह मनोरथ एक दिवसीय था।

पूज्यपाद तिलकायित महाराज श्री दाऊजी (राजीवजी) की आज्ञा से इस बार नगर के उत्तर में स्थित विशाल रमणीय उद्यान–लालबाग में चार दिवसीय 'वनविहार' महोत्सव दिनाक ३० जुलाई ९८ से २ अगस्त ९८ तक करने की घोषणा हुई। तिथियों की घोषणा होते ही लालबाग में इसकी तैयारियाँ शुरू हो गईं। भगवान श्री नवनीत प्रियजी यहाँ चार दिन बिराजने वाले थे। अतः उनके नित्य नियमित भोग के अतिरिक्त अन्यान्य मनोरथों पर बनने वाली भोग सामग्री के लिए उद्यान में रसोईघर, पानघर, फूलघर आदि का निर्माण कार्य कराया गया। इन कक्षों के अतिरिक्त दर्शन हेतु विशाल पाण्डाल भी बनाया गया। बाग को भी और अधिक आकर्षक रूप देते हुए फव्वारों, पेड़ पौधों को ठीक किया गया। रंगाई पुताई के अतिरिक्त सारे उद्यान में विद्युत सज्जा की गईं। प्रतीक्षारत दर्शनार्थियों के लिए भी उचित व्यवस्था की गईं। आवागमन को सुव्यवस्थित रूप देने हेतु मार्गों का निर्धारण भी किया गया।

वन महोत्सव के आयोजन की सूचना वैष्णव समाज को समय पर ही मिल चुकी थी। अतः देश के विभिन्न अंचलों से लाखों दर्शनार्थी टिड्डी दल की तरह उमड़ पड़े। नगर की धर्मशालाओं, होटलों, अतिथिगृहों, कॉटेजों आदि में यात्रीगण ठहरे हुए थे।

इन चार दिनों में प्रातः मंगला दर्शनों से अर्द्धरात्रि में होने वाले शयन के दर्शनों तक पूरा लालबाग मार्ग दर्शनार्थियों की भारी भीड़ से संकुल बना रहा। सुव्यवस्था और बहुत बड़ा पाण्डाल होते हुए भी श्रद्धालु दर्शनार्थियों की संख्या इतनी अधिक थी कि दर्शन हेतु घण्टों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

वन – महोत्सव में चन्दन का हिण्डोलना, मचकी हिण्डोला, कुंज मनोरथ सहित अनेक भव्य मनोरथों का आयोजन हुआ, जिनके दर्शन का अलम्य लाभ लेने हेतु दर्शनार्थियों की भारी भीड़ बराबर बनी ही रहती थी। मनोरथों में प्रभु के नियमित भोग सामग्री के अतिरिक्त इतनी अधिक प्रकार की भोग सामग्रियों का निर्माण हुआ कि उनके नाम याद रख पाना भी मुश्किल है।

पूज्यपाद गो. श्री दाऊ जी महाराज प्रभु की अनन्त लीलाओं से भक्त वैष्णव जनों को दर्शन लाभ कराने हेतु ऐसे अलौकिक आयोजन करते रहे हैं। आपने अपने तिलकायित पद पर आरूढ़ होने के थोड़े ही समय में पुष्टि सेवा दर्शन के ऐसे भव्य आयोजन कर वैष्णव भक्त जनों पर अनन्त उपकार किया है। इस चार दिवसीय महोत्सव में, अस्वस्थ रहते हुए भी, स्वंय प्रभु सेवा में पूज्या बहूजी महाराज सहित निरन्तर उपस्थित रह कर समर्पित भाव से सेवा का प्रत्यक्ष मार्ग दिखाया है।

महोत्सव पूरा होने एवं श्रीनवनीतप्रियजी के निज मन्दिर में पुनः पधार जाने के अनन्तर पूज्यपाद महाराजश्री ने समस्त सेवादारों और कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करते हुए उन्हें पदानुसार सम्मानित किया।

आयोजन के समाचार कई दिनों तक समाचार पत्रों का आकर्षण बने रहे थे। नगर के लिए तो यह महोत्सव इतना भव्य और विशाल था जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

-साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा

काव्यांजलि

मोद अधिकाई है :

वल्लभकुल भूषण टीकैत श्रीराजीवजी।
ज्ञानवान पुण्यवान दया बरसाई है।।
प्रबल प्रतापी रूप सोहत सजीले सदा।
दीन जन प्रतिपालक सोभा सरसाई है।।
लालन कौ मनोरथ उच्छव मनाइबे कौं।
लालबाग कुंज कुंज कीरत सुहाई है।।
कहै जमनेश धन्य भूमण्डलाचार्य आप।
श्रीनाथ द्वारा धाम मोद अधिकाई है।।

– वैद्य जमनालाल "जमनेश", श्रीनाथद्वारा

तिमिर हटाने दिनकर आए :

लाल बाग में वन विहार का भव्य मनोरथ।
सघन कुंज में रथयात्रा का दिव्य पथ।।
लालन को श्रृंगार धरावत मृदुल मनोहर।
कल कदम्ब तरू रम्य हिंडोला झूलत प्रभुवर।।
दाऊदयाल जगपाल प्रभा अनुपम संग लाए।
जनु जनजन का तिमिर हटाने दिनकर आए।।

– सुश्री तोषी

मन्द हँसत नवनीत प्रिय :

वन विहार की इस बेला में, श्रीजी घर आनन्द है।
श्रीनँदनन्दन बालकृष्ण की झाँकी परमानन्द है।।
दिव्य मनोरथ लाल बाग का चहक उठा कोना कोना।
प्रभु सनेह में लीन सभी जन भजते आनँदकन्द हैं।
मचकी झूला डारि कदम्बतरू अजब अनौखी आभा है।
मन्द हँसत नवनीत प्रिय मन उमगे गोकुलचन्द हैं।।

– यामिनी कान्त शर्मा, श्रीनाथद्वारा

खूब झुलाए नेह सौं :

निकुञ्जनायक श्रीनाथप्रभु हम पर परम कृपाल।
भव्य मनोरथ होंहि नित ऐसे दीनदयाल।।
बनविहार में आपने पधराए नँदलाल।
खूब झुलाए नेह सौं भगत बछल गोपाल।।

– हेमलता, श्रीनाथद्वारा

भक्तन कौ पारावार :

सजी सुखपाल आज नवनीत प्रिय जू की, हरसे मन दाऊजी भई जै जै कार है।
बाजत नगारे घोर, छत्र चँवर की हिलोर, अश्व गजराज शोर, भीर हू अपार है।।
नाथद्वारा धाम आज, जुर्‌यौ है समाज साज, बिलौकैं हैं ब्रजराज, रूप के आगार हैं।
सागर सनेह श्याम, ठाम ठाम मचयों है, उमड़ौ है भक्तन कौ अपार पाराबार है।।

– जयदेव गुर्जरगौड़,श्रीनाथद्वारा

न कभी देखा न कभी सुना :

दर्शन हित आतुर खडी, भक्तन भीर अपार।
एक झलक की आस में, सिगरौ पारावार।।
उमड़ घुमड़ बादल घिरे, प्रभु दरसन कौ चाव।
विटप पुंज अन्हवाइकैं, उमगायौ निज भाव।।
अस्ताचल सूरज गयौ, रजनी सरकी आय।
प्रभु दर्शन की लालसा, चहक्यौ जन समुदाय।
धन्य भयौ रेणा विटप, झूले प्रिय नवनीत।
निरख मुदित नैना भए, भक्तन के मनचीत।।
कभी न देखा नहिं सुना, यह उत्सव अनुराग।
सभी सराहत नेह सौं, लाल बाग के भाग।।

– श्रीमती किरण शर्मा, श्रीनाथद्वारा

अभिनन्दन :

नाथद्वारा लालबाग में बनविहार कौ उच्छव है।
लालन श्रीनवनीत प्रभु कौ भव्य मनोरम गौरव है।।
लालबाग के कुंज कुंज में भक्ति भाव के दर्शन हैं।
झांकी झांकी झंकृत लीला मधुरिम चाव प्रदर्शन है।
सावन मास हिंडोला झूले मदनमोहन छवि बांकी है।
श्यामसुन्दर श्रीनाथ प्रभु की बड़ी सुहानी झांकी है।
दाऊ बाबा की बलिहारी लालबाग जसुदानंदन।
झूलोच्छव के दर्शन कर कर जन जन करता अभिनंदन।।

– रघुनाथ 'चित्रेश', श्रीनाथद्वारा

बहु मुखी प्रतिभा के धनी : नन्ददास

डा. विष्णुचन्द्र पाठक

महाकवि नन्ददास के जन्म, जन्मस्थल एवं जीवन परिचय के सम्बन्ध में हिन्दी संसार के विद्वानों में बहुमत मतभेद है। अन्य भक्त कवियों की भाँति नन्ददास ने भी अपने ग्रंथों में अपने बारे में कोई विशेष उल्लेख नहीं किया है।

'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में इनके बारे में विस्तृत वर्णन दिया गया है। जिसका उल्लेख संस्था द्वारा प्रकाशित इसी "ब्रज–कोकिल : नन्ददास" ग्रंथ में विस्तार से किया जा चुका है। अतः यहाँ इसकी पुनरावृत्ति नहीं कर रहे हैं। श्रीनाभादासजी ने अपने भक्तमाल में नन्ददासजी के बारे में निम्नलिखित छप्पय लिखा है –

लीलापद रसरीति ग्रंथ रचना में नागर।
सरस-उक्ति जुत जुक्ति भक्ति-रस गान उजागर।
प्रचुर पयध लो सुजस 'रामपुर' ग्राम निवासी।
सकल सुकुल सम्बलित भक्त पद रैनु उपासी।
चन्द्रहास अग्रज सुहृद परम प्रेम पय में पगे।

श्री ध्रुवदासजी ने अपने 'ध्रुव सर्वस्व' नामक ग्रंथ में इनके बारे में इनके जीवन घटनाओं की अपेक्षा इनके यश और भक्ति–भावना के बारे में इस प्रकार लिखा है –

नन्ददास जो कछु कहयौ राग रंग सों पागि।
अच्छर सरस सनेहमय सुनत श्रवण उठ जागि।।
रमन दसा अदभुत हुती करत कवित्त सुढार।
बात प्रेम की सुनत ही छुटत नैन जलधार।।
बावरो सौ रस में फिरै खोजत नेह की बात।
आछे रस के वचन सुनि बेगि विवस है जात।।

वे बाबा श्री वेणीमाधवदास ने भी अपने "मूलगोसाईं चरित" में इन्हें कान्य–कुब्ज ब्राह्मण, शेषसनातन का शिष्य तथा गोस्वामी तुलसीदास का गुरू भाई लिखा है।

नन्ददास कनौजिया प्रेम मढ़े। जिन शेषसनातन तीर पढ़े।
सिच्छा गुरूबंध भये तेहि ते। अति प्रेम सों आय मिले वहि ते।

स्व. बाबू श्रीराधाकृष्णदास ने अपने द्वारा सम्पादित 'रासपंचाध्यायी' की भूमिका में नन्ददास को सनौढ़िया ब्राह्मण तथा तुलसीदास का छोटा भाई माना है। उन्होंने इन्हें पूर्व देश का रहने वाला और रामानन्द का शिष्य भी लिखा है।

'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में भी इन्हें सनाढ्य ब्राह्मण तथा गोसाईं जी का छोटा का भाई माना है। 'सूकर क्षेत्र महात्म्य' नामक ग्रंथ में इनके पुत्र कृष्णदास ने इन्हें तुलसीदास का चचेरा भाई कहा है। इसी प्रकार मुरलीधर चतुर्वेदी द्वारा रचित 'रत्नावली चरित्र' नामक पुस्तक में इन्हें 'सौरों' निवासी तथा तुलसीदास का चचेरा भाई माना है। जबकि भक्तमाल में इन्हें रामपुर निवासी माना है। गो. हरिरायजी कृत अष्टसखान् की वार्ता में इन्हें सनाढ्य ब्राह्मण बताया है। श्री द्वारकादास पारीक इन्हें गोस्वामी तुलसीदास का छोटा भाई मानते हैं।

इसी प्रकार इनके जन्म के बारे में भी पर्याप्त मतभेद हैं। कंठमणिजी शास्त्री ने इनका जन्म संवत् १५७०; डा॰ श्यामसुन्दरदास, डा॰ दीनदयाल गुप्त तथा द्वारकादास पारीक इनका जन्म संवत् १५९० मानते हैं। किन्तु 'सुकवि सरोज' में संवत् १५६४ में इनका जन्म बताया है।

इनके अधिकांश ग्रंथों में इस बात का उल्लेख है कि इन्होंने आपने ग्रंथों की रचना अपने एक मित्र के लिए की हैं। निम्नलिखित उद्धरणों से यह बात स्पष्ट होती है –

१. **परम रसिक इक मित्र, मोहिं तिन आग्या दीनीं।**
ताहीं ते यह कथा, यथामति भाषा कीनीं।।

– रासपंचाध्यायी

२. **एक मीत हम सों अस गुन्यौ।**
मैं नायिकाभेद नहिं सुन्यौ।।

– रसमंजरी

३. **परम विचित्र मित्र इक रहै।**
कृष्ण-चरित्र सुन्यौ जो चहै।।
तिन कहि दसमस्कंध जो आहि।
भाषा करि कछु बरनौ ताहि।।

–दसमस्कंध भाषा

नन्ददासजी ने अपने इस मित्र का नाम अपनी रचनाओं में नहीं लिया है। श्री वियोगी हरि ने अपने ग्रंथ 'ब्रजमाधुरी सार' नामक अपने ग्रंथ में इस मित्र का सम्बन्ध गंगाबाई से जोड़ा है। तो डा॰ दीनदयाल गुप्त ने उसका सम्बन्ध रूपमंजरी की मित्रता से बताया है।

यह सब व्रर्तान्त उनके बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने के पूर्व का है। संवत् १६०२ में गुसाईं विट्ठलनाथजी ने अष्टछाप की स्थापना की थी। उस समय अष्टछाप में सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी और छीतस्वामी के साथ श्री विष्णुदास छीपा भी सम्मिलित थे। संवत् १६०७ में जब श्री नन्ददास गोसाईं जी द्वारा पुष्टिमार्ग में दीक्षित किये गये तो विष्णुदास के स्थान पर उन्होंने श्रीनन्ददास को स्थान दिया और वयोवृद्ध होने के कारण उन्हें अपना द्वारपाल नियुक्त किया।

श्रीनन्ददास ने सूरदास से पुष्टिमार्ग की शिक्षा प्राप्त की और गोकुल तथा गोवर्द्धन में रहने लगे। श्रीसूरदासजी के आदेश से ही वे फिर अपने ग्राम चले गये और वहाँ अपना विवाह कर गृहस्थ धर्म का पालन किया।

संवत् १६२४ में उन्हें पुनः गृहस्थाश्रम से विरक्ति हुई और वे गोवर्द्धन लौट आए। वे श्रीनाथजी के मन्दिर में कृष्णलीला से सम्बद्ध नये-नये पदों की रचनाकर कीर्तन करने लगे। नन्ददासजी ने कुल कितने ग्रंथ लिखे हैं, इस बारे में अभी पूर्ण पता नहीं लग सका है। किन्तु निम्नलिखित पन्द्रह ग्रंथ उनके द्वारा विरचित कहे जोते हैं और इनका उल्लेख काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अपनी खोज रिपार्ट में भी किया है।

(१.) अनेकार्थ मंजरी, (२.) नाममाला, (३.) नासिकेत पुराण भाषा, (४.) दशमस्कंध, (५.) पंचाध्याई, (६.) भँवरगीत, (७.) भागवत, (८.) मानमंजरी, (६.) रसमंजरी (१०.) रूपमंजरी, (११.) विरहमंजरी, (१२.) नाम चिंतामणिमाला, (१३.) जोगलीला, (१४.) श्याम सगाई, (१५.) रूक्मिनी मंगल।

'गार्सी द तासी' ने श्रीनन्ददास के चार ग्रंथों का और उल्लेख किया है –

(१.) सुदामा चरित, (२.) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, (३.) गोवर्द्धनलीला, (४.) नामचिंतामणि माला और नासिकेत पुराण भाषा, भागवत, विरहमंजरी, नामचिंतामणि माला और श्याम सगाई को आपने ग्रंथ में स्थान नहीं दिया है। ठाकुर शिवसिंह ने अपने 'सरोज' में 'दानलीला' और 'मानलीला' को भी स्थान दिया है। इसी प्रकार मिश्रबन्धुओं ने अपने 'मिश्रबन्धु विनोद' में दो ग्रंथों का और उल्लेख किया है – ज्ञान मंजरी और विज्ञानार्थ प्रकाशिका। 'सुकवि सरोज' में 'हितोपदेश' का नाम और है। इस प्रकार इनके २४ ग्रंथों की रचना मिलती है। कुछ ग्रंथों के नाम एक सरीखे होने से ये तैबीस ग्रंथ ही शेष रहते हैं।

पुष्टि सम्प्रदास की दीक्षा लेने के पश्चात् इन्होंने कतिपय फुटकर पदों की रचना भी की है। 'रूपमंजरी', 'रसमंजरी' और 'विरहमंजरी' में इन्होंने मलिक मोहम्मद जायसी और गोस्वामी तुलसीदास का अनुसरण करते हुए चौपाई छन्द में इसकी रचना की है। रसमंजरी में नायिका भेद, रूपमंजरी में वल्लभ सम्प्रदास की भक्ति-श्रृंगार समन्वित भक्तिभावना का प्रतिपादन एवं विरह मंजरी में गोपियों के विरह का वर्णन है। प्रेम बारह खड़ी इनकी छोटी सी रचना है जिसमें केवल ३७ दोहे हैं। जिसमें गोपियों की विरह दशा का वर्णन है। 'अनेकार्थ मंजरी' के कई नामकरण हो गये हैं इस कारण इसकी पद संख्या में भी काफी विभिन्नता हो गई है। यही हाल मानमंजरी का भी है। 'श्याम सगाई' में राधाजी की माता कीर्तिजी का श्रीकृष्ण पर आक्षेप करना तथा बाद श्रीकृष्ण के साथ उनकी सगाई स्वीकार करने का वर्णन है। 'भँवरगीत' इनका सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ है। ब्रजभाषा क्षेत्र में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान मिला हुआ है। इसमें उद्धवजी श्रीकृष्ण का संदेश लेकर मथुरा से गोकुल जाते हैं और उनका गोपियों से सगुण-निर्गुण पर तर्क वितर्क होता है। गापियों की प्रेमविभोर कर देने वाली बातों से उद्धव का ज्ञान गर्व तिरोहित हो जाता है। वे मथुरा जाकर श्रीकृष्ण को गोपियों से मिलने के लिये फटकार लगा देते हैं। इस ग्रंथ में भाषा की कोमलता, भावों का माधुर्य और शब्दों की सजावट का अपूर्व सहयोग है। यह ग्रंथ प्रभावोत्पादक तो है ही इसमें सम्प्रदायिक सिद्धान्तों की पुष्टि भी की गई है। इस ग्रंथ में रोला छन्द का प्रयोग किया गया है, जिसके अन्त के १० मात्रा की टेक दी गई है। 'गोवर्द्धनलीला' में श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्द्धन पूजा के आग्रह का वर्णन है। 'रासपंचाध्यायी' इनका रोला छन्द में लिखा ग्रंथ है। जो हिन्दी का 'गीत गोविन्द' कहलाता है। 'सिद्धान्त पंचाध्यायी' में 'रासपंचाध्यायी' की सैद्धान्तिक व्याख्या की गई है। 'रूक्मणि मंगल' में भी रोला छन्द का प्रयोग है और यह रूक्मणि विवाह से सम्बद्ध है। ये इनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक है। 'सुदामा चरित' नन्ददास का छोटा सा ग्रंथ है। इसमें साढ़ेचालीस चौपाइयों में सुदामा के प्रसिद्ध आख्यान का सरल भाषा वर्णन किया गया है। 'भाषा दसम स्कन्ध' में श्रीमदभागवत के दसमस्कन्ध २६ अध्यायों का भावानुवाद है।

नन्ददास ने श्रीनाथजी के समक्ष कीर्तन करने के लिये लगभग २०० पदों की रचना भी की है।

नन्ददास ही अष्टछाप में ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाएँ अनेक शैलियों में की हैं। अपने सहयोगियों के समान कीर्तन के लिये उन्होंने पद भी बनाये हैं, किन्तु कई छोटे छन्द जैसे रोला, चौपाई आदि में ग्रंथों की रचना उनकी चमत्कार पूर्ण शैली का प्रतीक मानी जा सकती है। पुष्टिमार्ग के अष्टछाप में सम्मिलित होने के कारण उन्होंने अपने ग्रंथों में पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तों की स्थापना की है, किन्तु इस धार्मिकता के साथ उनके काव्य का साहित्यक मूल्य भी कम नहीं है। भाषा का माधुर्य और भावों का वैभिन्य तो उनकी विशेषता है ही, किन्तु उनके पास विपुल शब्द भंडार होने के कारण उन्होंने अपने काव्यों में कलात्मक ढंग से शब्दों की सजावट भी की है। वे उपयुक्त शब्दों के प्रयोग में सिद्धहस्त है। उनमें माधुर्य और प्रसाद गुण अद्भुत था। जो कुछ वे लिखते थे, रससिक्त बना रहता था।

पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों का वर्णन करते हुए नन्ददास ने जगत को रसिक बताया है। उनका कहना है ''ब्रह्म स्वयं रस रूप है, आनन्द धन है, अखण्ड है, नित्य है, अगम्य है एवं सुगन्धमय है; इसलिए रसिक है।'' उन्होंने वल्लभ वेदान्त के अनुसार ब्रह्म को निर्गुण स्वरूप स्वीकार भी किया है, किन्तु अपने काव्य में उन्होंने प्रभु के सगुण स्वरूप को ही, कहीं अधिक स्थान दिया है। उन्होंने गोपियों के माध्यम से श्रीकृष्ण के प्रेम पीयूष स्वरूप को हृदय से लगाया है और ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अथवा संसार से मुक्ति पाने के लिये भक्तिमार्ग को ही प्रमुख माना है। उनके भ्रमरगीत, सिद्धान्तपंचाध्यायी आदि में इसका निरूपण भी है।

पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तों के अनुसार जगत को ब्रह्मस्वरूप तथा जीव और जगत को ब्रह्म द्वारा परिणत माना है तथा संसार को मायाजन्य कहा है। उन्होंने जगत को सगुण ब्रह्म की माया ही माना है। नन्ददास ने नित्यरास के आनन्द को सर्वश्रेष्ठ माना है। उन्होंने वृन्दावन को गोलोक कहा है तथा उसे ब्रह्म का चैतन्य स्वरूप माना है। इसी प्रकार उन्होंने श्रीकृष्ण की मुरली को योगमाया तथा उसके स्वरों को नाद ब्रह्म के रूप में प्रतिपादित किया है।

यह कहा जाता है कि इनका तिरोभाव अनुमानतः संवत् १६४० के आस–पास हुई थी। उस समय गोसाईं विट्ठलनाथजी विद्यमान थे। इनके देहावसान के बारे में भी अकबर की दासी को लेकर विचित्र कथा गुंथी गई है जिसका उल्लेख ''नन्ददास ग्रंथ में पूर्व में हो चुका है, किन्तु साहित्यकारों का मत है उंनकी मृत्यु स्वाभाविक ढंगसे हुई थी। गोवर्द्धन में मानसी गंगा के तट पर वह पीपल का वृक्ष आज भी विद्यमान है जहाँ श्रीनन्ददास ने अपना नश्वर शरीर छोड़कर मोक्ष प्राप्त किया था।

-अध्यक्ष, 'कदम्ब', सी-२६६,
भाभा मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तों के निरूपणकर्त्ता

श्रीनन्ददास

भगवतीप्रसाद देवपुरा

अष्टछाप कवियों में नन्ददास का साहित्यिक एवं वेदान्तिक निरूपण की दृष्टि से, अप्रतिम स्थान है। पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के पूर्व इनका जीवन सांसारिक भोगों की और उन्मुख था। इनके जन्म, जाति, निवास और परिजनों के बारे में श्री नाभाजी आदि ने पर्याप्त वर्णन किया है। गोसाई विट्ठलनाथजी ने इनका सांसारिक मोह भंग कर इन्हें आध्यात्मिकता की ओर अभिमुख किया। इससे इनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हो गया और ये पूर्णतः श्रीकृष्ण की भक्ति में तल्लीन हो गये। प्रारम्भ से ही काव्य और संगीत में श्री नन्ददास की पर्याप्त रूचि थी; अतः जब गोसाई विट्ठलनाथजी ने इन्हें श्रीनाथजी के मन्दिर में कीर्तन करने हेतु नियुक्त किया तो इनकी प्रतिभा तीव्र गति से विकसित हुई। ये स्वयं श्रीकृष्ण लीलाओं से सम्बद्ध श्रेष्ठ पदों की रचना कर कीर्तन करने लगे, जिससे इनके मानस में गोसाई जी द्वारा प्रदत्त पुष्टि भक्ति का उदय हुआ। कीर्तन के लिए इन्होंने फुटकर पदों की रचना तो की ही, अनेक ग्रंथों का निर्माण भी किया–जो आज ब्रजभाषा के अमर ग्रंथों में गिने जाते हैं। इनकी रचनाओं में माधुर्य एवं प्रसाद गुण की विशेषता समविष्ट है। पदों की पंक्तियों में संयुक्ताक्षर नहीं हैं और जो सीधे सादे शब्दों में अभिव्यक्त किया है वह अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है। इन्होंने अपने काल में शुद्धाद्वित सिद्धान्तो का सफलतापूर्वक समन्वय करने के साथ ही साहित्य और दर्शन का सुन्दर सम्मिश्रण भी किया है। इस विषय में डा. विश्वंभरनाथ उपाध्याय लिखते हैं–

"अष्टछाप के कवियों में सूर से भी अधिक नन्ददास में वल्लभ सम्प्रदाय के विचारों को वाणी मिली है। नन्ददास सम्प्रदाय के विचारों को कविता का आवरण पहनाने में अधिक प्रवीण थे।" उपर्युक्त कथन पर समुचित विचार करें तो निश्चित हो स्पष्ट होगा कि श्री नन्ददास के ग्रंथों एवं गोसाई श्री विट्ठलनाथजी के स्तुति भाग में वेदान्त–सम्बद्ध विचारों का निरूपण किया गया है।

पुष्टिमार्ग में कृष्ण एवं गुरू को समान माना गया है। इसीलिए नंददास ने श्रीकृष्ण और गोसाई जी की स्तुति में कोई भेद नहीं किया है। इस सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण की बाल भाव से ही सेवा की जाती है। अन्य अष्टछाप कवियों के अनुरूप श्रीनन्ददास ने बालक मनमोहन श्रीकृष्ण के अद्भुत रूप एवं अनिन्द्य सौन्दर्य का अपूर्व वर्णन किया है। नन्ददास ने जगत को 'रसिक' बताया है। इस विषय में उनका कहना है कि ब्रह्म स्वयं रसरूप है, आत्मानन्द है, आनन्दघन है तथा अखण्ड, नित्य, अगम्य एवं सुगन्धमय है। रस–मंजरी में उन्होंने लिखा भी है–

'नमोः नमोः आनन्दघन, सुन्दर नन्द-कुमार।
रसमय, रसकारण, रसिक, जग जाकै आधार।।'

सिद्धान्त पंचाध्यायी में वे कहते हैं –

'सब घट अन्तरजामी, स्वामी परम एकरस।
नित्य, आत्मानन्द, अखण्ड स्वरूप उदार।।
केवल प्रेम सुगंध, अगम्य अवर परकार।।''

यों तो वल्लभ वेदान्त में 'ब्रह्म' के निर्गुण स्वरूप को स्वीकार किया गया है, किन्तु प्रभु के सगुण स्वरूप को इसमें कहीं अधिक महत्व मिला है। इसी के अनुरूप नन्ददास ने ब्रह्म को अजन्मा माना है तथा कहा है कि वह योग और ज्ञाप द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। वहीं दूसरी और गोपिकाओं के माध्यम से श्रीकृष्ण के प्रेम–पीयुष स्वरूप को भी हृदय से लगाया है। रस मंजरी मे वे कहते हैं–

'जोगी जेति भजे, भक्त निज रूपहिं जानैं।
प्रेम पियूष प्रगट, श्यामसुन्दर उर आनैं।।

रस मंजरी में उन्होंने आगे बताया है कि भक्ति–मार्ग ही प्रभु को प्राप्त करने का सरल मार्ग है। इसमें व्यक्ति प्रभु का अनुग्रह प्राप्त करता है और उसी से उसकी मुक्ति हो जाती है।

इनके द्वारा विरचित 'भ्रमर–गीत' में जब उद्धव गोपियों को यह समझाते हैं कि 'हे गोपियों, तुम सत्य को समझो और किसी एक व्यक्ति को ब्रह्म समझकर भ्रम में मत पड़ो'' तो उद्धव की यह कठोर वाणी गोपियों को क्रोधित कर देती है। वे कहती हैं –

'कौन ब्रह्म की ज्योति, ज्ञान कासौं कहौ ऊधो।
हमरे सुन्दरस्याम, प्रेम को मारग सूधो।।''
प्रेम पीयूष छाँडि कै, कौन समेटे धूरि।'

निश्चित ही श्री नन्ददास श्री कृष्ण के प्रेम स्वरूप के ही उपासक थे। भ्रमरगीत, सिद्धान्त पंचाध्यायी तथा अन्य ग्रथों में इस बात का निरूपण भी है।

नन्ददास अपने ग्रंथों में कई स्थलों पर ब्रह्मवाद को निरूपित किया है। उन्होनें श्रीकृष्ण को सबका कारण, प्रतिपालक, संहारक कहा है। उनके लिए वे ही र्स्वव्यापी हैं और उन्हीं में, सत्व, रज एवं तम, ये तीनों गुण व्याप्त हैं। ऐसे प्रभु श्रीकृष्ण से नन्ददास भक्ति एवं रति की माँग करते हैं –

'हे करूणानिधि, करूणा कीजे।
अपनी भाव भगति रति दीजे।''

श्री नन्ददास ने राम और कृष्ण की अभिन्नता भी स्थापित की है। वे कहते हैं –

'वे अवधेश धनुष कर धारें।
ए ब्रज जीवन माखन चोर।
उनके छत्र, चँवर, सिंहासन।
भरत, शत्रुधन, लक्ष्मण जोर।।

इनके लकुटि, मुकुट, पीताम्बर।
निज गायन संग नन्दकिसोर।
उन सागर में सिला तिराई।
इन राख्यो गिरि नख की कोर।।
'नन्ददास' प्रभु सब तजि भजिए।
जैसे निरखत चंद चकोर।।

नन्ददास ने पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तों के अनुसार जीव और जगत को ब्रह्म द्वारा परिणत कहा है। उन्होनें स्पष्ट किया है कि मनुष्य का शरीर पाप पुण्यों के द्वारा विनिर्मित होने के कारण वह ब्रह्म के अन्तरंग दर्शन नहीं कर सकता जबकि परःब्रह्म सभी शरीरधारियों के हृदय में, अन्तर्यामी के रूप में, बिराजमान है। अपनी रास पंचाध्यायी में वे कहते हैं –

निपट निकट घट में तो अन्तरजामी आहिं।
विषै विदूषित इन्द्री पकरि सकै नहिं ताहिं।।

इसी बात को और स्पष्ट करते हुए वे अपने ग्रंथ सिद्धानत पंचाध्यायी में पुनः कहते हैं –

काल करम माया अधीन ते जीव बखाने।
विधि-निषेघ अरू पाप पुण्य तिनमें सब साने।।
परम धरम परब्रह्म ज्ञान विज्ञान प्रकासी।
ते क्यों कहिए जीव सहस श्रुति सिखा निवासी।।

जब उद्धव गोपिकाओं के विशुद्ध प्रेम से प्रभावित हो कर श्रीकृष्ण के पास पहुँचते हैं और गोपियों के अद्वितीय प्रेम को प्रकट करते हुए, उनसे न मिलने का उपालम्भ देते हैं तब श्री नन्ददास अपने भँवरगीत के माध्यम से कृष्ण से कहलवाते हैं –

अ- सुनत सखा के बैन, नैन भरि आये दोऊ।
विबस प्रेम आवेस, रही नाहीं सुधि कोऊ।।
रोम रोप प्रति गोपिका, है रहे साँवले गात।
कल्पसरोरूह साँवरो, ब्रज वनिता भई पात।।
उलहिं अंग अंगते।।

आ- मौं में उनमें अन्तरो, एकौ छिन भरि नाहिं।
ज्यों देखी भी माँझतें, त्यौ मैं उनही माँहि।।
तरंगिनि वारि ज्यों।।

नन्ददास ने पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों के अनुसार जगत को ब्रह्म का स्वरूप एवं संसार को अविद्या माया जन्य कहा है। माया जन्य होने के कारण ही संसार असार है और इसीलिए श्रीकृष्ण के चरण कमलों का दर्शन और स्पर्श ही सार स्वरूप है। इसी बात को दशम स्कन्ध भाषा में उन्होंने इस प्रकार कहा है –

तव पद पंकज दरसै-परसै, कौन पुण्य धौं मेरे सरसे।
अरू संसार असार अपार, सहज हि भयौ जु लोके पार।।
तुम अपने परमातम स्वामी, ब्रह्मरूप सब अन्तर्यामी।।

नन्ददास ने जगत को सगुण ब्रह्म की माया ही माना है। उन्होनें कहा है श्रीकृष्ण की योगमाया ने सारे जगत को वश में कर रखा है। श्रीकृष्ण की कृपा से ही शरीर धारी इस माया से मुक्त हो सकता है।

पुष्टिमार्ग के अनुसार नन्ददास ने नित्य रास के आनन्द को ही सर्वश्रेष्ठ मोक्ष माना है और अपने साहित्य में चारों प्रकार की मुक्तियों का, जिनमें सालोक्य मुक्ति, सामीप्य मुक्ति, सारूप्य मुक्ति एवं सायुज्यमुक्ति सम्मिलित हैं, निरूपण किया है। इन्होंने वृन्दावन को ही गोलोक कहा है तथा उसे ब्रह्म का चैतन्य स्वरूप माना है। इसी प्रकार श्री कृष्ण की मुरली को उन्होनें योगमाया तथा उसके स्वरों को शब्द (नाद) ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठापित किया है। साथ ही उन्होंने रास रसों को वेदान्त सिद्धान्तों का सार बताते हुए अपने ग्रंथ सिद्धान्त पंचाध्यायी में कहा है–

सब रस को निर्यास (निर्वास) रास रस कहिए सोई।
सकल सास्त्र सिद्धान्त, परम एकान्त महारस।।
जाके रंचक गुनत, श्रीकृष्ण होत बस।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री नन्ददास ने अपने द्वारा विनिर्मित ग्रंथों में पुष्टिमार्ग के सभी विशिष्ट सिद्धान्तों को स्थापित किया है।

– प्रधानमंत्री
साहित्य-मण्डल, श्रीनाथद्वारा

सुन्दर प्रेम बितरनी

डा. सुरेश पाण्डेय

रसिकानन्दरूपा श्री स्वामिनी राधिकाजू भगवान श्री श्रीकृष्ण श्री राधा अरू श्री राधाकान्त को नित्य निकुँज विहार अनादिकाल तैं सपरिकर चल रह्यो है– अनन्तकाल तक चलतो रहेगो। श्रीकृष्णप्रमाविभावित महाभावस्वरूपा रासेश्वरी श्री राधिकाजू की परमानन्ददायिनी कृपावारि तैं सिक्त महाकवि नन्ददास ने दिव्यातिदिव्य बिनकी लीलान को मधुर–मोहक वर्णन कीन्हो है अपने लावण्यमय पदन में।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष अरू अष्टमी तिथि है आज, चन्द्रवासर, मध्यान्ह को समय है। वृषभानुगृह में कीर्तिदारानी रत्नपर्यक पे विराज रहीं हैं। आकाश मेघाच्छन्न ह्वै रह्यौ है। सहसा प्रसूतिगृह में एक ज्योति फैल गयी – इतनी तीव्र ज्योति कूं देख सबके नेत्र निमीलित ह्वै गये। सूतिकागार में बा ज्योति के स्थान पे एक बालिका प्रकट ह्वै गयी जाके लावण्य में सबै प्लावित होन लगे। सद्यप्रसूत कन्या के अंगन में काऊ दिव्ययातिदिव्य शतमूली–प्रसून की आभा सी भरी भई ही। देव–वृन्दन ने ऊपर तें नन्दनकानन–जात प्रफुल्ल–कुसुमन की वर्षा कीनी जा तें चारों ओर दिव्य पोहोपन को ढेर लागि गयौ। शीतल मन्द पवन अरविन्द सौरभ को विस्तार करतो, राधा–यश–सौरभ दुकूल में लये रासेश्वरी के आगमन की घर–घर आनन्द संदेश देत फिरन लग्यो। पुरबासिन के आनन्द के कहा कहने। गोलोकबिहारी श्रीकृष्णचन्द्र के जन्मोत्सव पे जो रस–धारा प्रसरित भयी हती, सो द्विगुणित परिमाण में रासेश्वरी के जन्म पै उपड़ि चली–

श्री वृषभान नृपति के आँगन बाजत आज बधाइ, कीरतिदे रानी सुखसानी सुता सुलच्छिन जाइ।।
शक्ति सबे दासी है जाकी सियाहू ते अधिक सुहाइ, निरवधनेह अवधि रस मूरति प्रगटी सब सुखदाइ।।
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद आनंद उर न समाइ, "नंददास" प्रभु पलना पौढ़े किलकत कुँवर कन्हाई।।

श्री वृषभानुदुलारी में अब कैशोर को आविर्भाव ह्वै गयो है। बिनके श्रीअंगन में दिव्य सौन्दर्य तें भानुप्रासाद नित्य आलोकित रहत है। वे जा गैल तें वन में पुष्पचयन करन जात हैं, बा गैल पै ऊ सौन्दर्य किरनन कूँ बिखेर जात हैं। श्री–मुख के उज्ज्वल स्मित तें पथ उद्भासित ह्वै जात है। काऊ को अनुसन्धान लेन होय–श्रीकिशोरीजू जा समय कौन से बन में हैं – जे जाननो होय तो सहज की जान जाय – श्रीअंगन की दिव्य सुबास बताय देयगी। आज ऊ अपने श्रीअंगसौरभ तें बन कूँ सुरभित करती भयी श्रीवृषभानकिशोरी पुष्पचयन कर रहीं हैं – संग में हैं चिरसंगिनी श्री ललिता सखी।

पुष्पित वृक्षन की सोभा तें प्रसन्न है के श्री किशोरी जी हठात पूछ बैठी –'ललिते, कहा जेई वृन्दावन है? "हाँ सखि।

श्रीकृष्णक्रीड़ाकानन जे ई है।" बस किशोरीजू के हाथ तें फूलन को दोना गिर गयौ। ललिता गिरे फूलन को उठान लगीं। "कौन को नाम कहयौ ?" – भानुकुमारी ने कम्पित गला तें फिर पूँछ्यौ। "सखि, जे श्रीकृष्ण को

क्रीड़ास्थल है।'' कहिके ललिता फूलन कूँ किशोरी के अचल में डारन लगीं। ''तो अब लौटि चलो, बहुतेरे फूल ह्वै गये।'' जे कहि के उत्तर की प्रतीक्षा करे बगैर किशोरीजू अन्यमनस्क सी हुयी भवन की ओर चल गईं।

दूसरे दिना ललिता ने आय के देख्यौ–किशोरीजू की तो विचित्र दशा है। शरीर इतनो कृश ह्वै गयो है मानों वे एक पक्ष तें निराहार रहीं होंय। कुन्तलराशि पीठ पे बिखरी परी है, किशोरीजू ने आज वेणीरचना ऊ नाँय कीन्हीं। मोंह ढांपे परी हैं, काऊ तें बोलत बतरावत नाँय। ललिता ने गोद में लै के प्यार तें सिर सहलाय कें मोंह उघारों, देख्यौ– नेत्र सजल हैं, अरूण हैं, बताय रहे हैं जो किशोरी सारी रात जागत रहीं हैं। बार बार ललिता के पूँछन पे भानुदुलारी कछु कहन लगीं, किन्तु वाणी रूद्ध ह्वै गयी, वे बोल नॉय सकीं। ललिता के प्यार तें सिक्त ह्वै के कहीं दो धरी बाद वे रूद्ध कण्ठ ते अपनी दशा को जे कारण बताय पाईं–

कृष्ण नाम जब ते श्रवण सुन्यो री आली, भूली री भवन, हौं तौ बाबरी भई री।
भरि भरि आवैं नैन, चितहूँ न परत चैन, मुखहूँ न आवै बैन, तन की दसा कछु औरें भई री।।
जेतेक नैम धरम बहुत कीने री विधि, अंग-अंग भई हौंतौ श्रवनभई री।
''नंददास'' जाके श्रवण सुनें यह गति भई, माधुरी मूरति कैधौं कैसी दइ री।।

रासेश्वरी भानुनन्दिनी अरू रासेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र राकारजनी में आय मिले। मोहन को मुरली नाद श्रवन करितेईं धुनि को मारग गहि जूथ जूथ ब्रजगोपांगना आय पहुँची। आज महारास है। गोप–सुन्दरिन की प्रेम परीक्षा भयी जग जामें वे पूर्णतया उत्तीर्ण ह्वै गयीं – नन्दनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र को प्रेमसिंधु उपड़ि पड़्यौ बा में डूब–डूब कृतार्थ होन लगीं।

जा रसपान तें– अवश्य ही रसवर्द्धन के ताईं गोप सुन्दरियन माँय तो सौभाग्यमद को अरू भानुकिशोरी में मान को आविर्भाव होत है। भानुकिशोरी मान करिके निकुँज में चली जात हैं। बिनकूँ नाँय देखि के श्री श्रीकृष्णचन्द्र ऊ वा ठौर ते निकुँज में चले जात हैं। अन्तर्धान होन को उद्देश्य जे है कि ब्रजसुन्दरिन माँय सौभाग्यगर्व प्रशमित होयके इनके रस की पुष्टि होय एवं प्रियाजू को मान–प्रसादन ह्वै के महाभाव सिंधु लहराय उठे अरू हम सब बा में निमग्न ह्वै जाँय।

गोपांगना–ब्रजसुन्दरियाँ व्याकुल ह्वै के प्रियतम श्री श्रीकृष्णचन्द्र कूँ वन में ढूँढन जात हैं, उन्मादिनी ह्वै के – बावरी ह्वै के तरूलता–वल्लरिंन तें प्रियतम को पता पूछ रहीं हैं –

विरहाकुल ह्वैं गयीं, सबै पूछत बेली बन, को जड़, को चैतन्य न कछु जानत बिरही जन।
हे मालति, हे जाति, जूथिके सुनि हित दे चित, मान हरन मन हरन लाल गिरधरन लखे इत।।
हे केतकि, इत तें कितहूँ चितए पिय रूसे, कै नंदनंदन मंद मुसकि तुमरे मन मूसे।
हे मुक्ता फल बेल, धरे मुक्ताफल माला, देखे नैन बिसाल मोहना नंद के लाला।।
हे मंदार उदार, बीर करबीर महामति, देखे कहुँ बलबीर धीर मन मनहरन धीर गति।
हे चंदन, दुखफंदन सबकी जरन जुड़ावहु, नंदनंदन जगबंदन चंदन हमहिं बतावहु।।
पूछो री इन लतनि फूल रहिं फूलनि जोई, सुन्दर पिय के परस बिना अस फूल न होई।
हे सखि, हे मृगबधू, इन्हें किन पूछहु अनुसरि, डहडहे इनके नैन, अबहिं कहुँ देखे हैं हरि।।
अहो सुभग बन गंधि पवन संग थिर जु रहि चलि, सुख के भवन दुख दवन रवन इतते चितए बलि।
हे चंपक, हे कुसुम, तुम्हें छवि सबसों प्यारी, नैक बताय जु देउ, जहाँ हरि कुँजबिहारी।।

हे कदंब, हे निंब, अंब क्यों रहे मौन गहि, हे बट उतंग सुरंग बीर, कहु तुम इत उत लहि।
हे असोक, हरि सोक लोकमनि पियहि बतावहु, अहो पनस, सुभ सरस मरत तिय अमिय पियावहु।।
जमुन तट के बिटप पूछि भई निपट उदासी, क्यों कहिहैं सखि अति कठोर ये तीरथबासी।

—— अरू जा ठाँव राधाकिशोरी अपने प्रियतम श्रीकृष्णचन्द्र के प्राणन में प्रान मिलाय के आत्मविस्मृत होय गयी हैं। जब जागीं तौ बा समय ऊ प्रेम वैचित्र्य को भाव लै के ई जागीं – अरू जा तैं कछु को कछु अनुभव करन लागीं। श्रीकृष्णचन्द्र भानुकिशोरी के सामने ठाड़े हैं– पर किशोरीजू को जे अनुभूति होन लागी कि प्रियतम जैसे अन्य गोपियन कूँ छोड़ि कै चले आए हते, वैसे इ मो कूँ ऊ छाँड़ि कै चले गए– किशोरीजू व्याकुल ह्वै के चीत्कार कर उठीं।

भानुनन्दिनी के विलाप तैं, ब्रजसुन्दरिन के क्रन्दन तें सारी वनस्थली करूणाप्लावित ह्वै गयी। जाई समय कोटि– मन्थस्वरूप श्री कृष्णचन्द्र प्रकट ह्वै गये। श्रीकृष्णचन्द्रजू की वाणी तें ऐसो मधु, ऐसी नम्रता भरी हती कि भानुकिशोरी को मान क्षण भर में बाई मधुधारा में बहि गयो। श्रीकृष्णचन्द्र ने ब्रजसुन्दरिन तें कह्यो –

तब बोले ब्रजराज कुँवर, हौ रिनी तुम्हारो, अपने मन तें दूरि करौ किन दोष हमारो।
कोटि कल्प लगि तुम प्रति प्रतिउपकार करौं जौ, हेमन हरनी तरूनी, उरिनी नाहिं तबौं तौ।।

—— अरू श्री किशोरीजू कूँ ह्रदय तें लगाय के बोले–

सकल बिस्व अपबस करि मो माया सोहति है, प्रेममयी तुमरी माया, सो मोहि मोहति है।
तुम जु करी, सो कोउ न करै, सुनि नवलकिशोरी, लोक बेद की सुदृढ़ सृंखला तृन सम तोरी।।

जा तरियाँ श्रीधाम बृन्दावन में – "नित्त रास मत्त नित्त गोपी जन वल्लभ। नित्त निगम जो कहत नित्त नौतन अति दुर्लभ।।" कहत भए महाकवि नंददास ने प्रिया–प्रीतम की लीला– नित्यनिभृतनिकुँजरासलीला के साक्षात दरसन करत भए कह्यौ –

'अघ हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम बितरनी, "नंददास" के कंठ बसौ नित मंगल करनी।।'

अरू श्री श्रीनाथ गिरधरधरन नागर–नट गोपिन के मध्य कालिंदी तट पे निरतत– मुरली पे रास में "राधे, श्रीराधे ! की एक रट सुनत भए महाकवि नंददास प्रेम–वितरनी निभृतनिकुँजनित्यविहाररास में श्री युगल सरकार के निपट–निकट पहुँचि गए। दैगए संदेश –

रसिक जनन के संग रहे हरि लीला गावै, परम कान्त एकान्त प्रेम रस तब ही पावै।।
इहि उज्जवल रस माल कोटि जतनन करि पोई, सावधान ह्वै पहिरौ बरू तोरौ मति कोई।।
'नंददास' को आसीरबाद प्रसाद जेई है, "जो इहि लीला हित सौं गावै सुनैं सुनावै।
प्रेम भक्ति सोई पावै औ सबके जिय भावै, प्रेम प्रीति सौं जो कोऊँ गावै सुनैं धरै हिय।
भक्ति प्रेम तिहिं देत दया करि नव नागर पिय,

–"नेह-निकुँज" एस-१/१२, कैलाशनगर, श्रीधामवृन्दावन

महाकवि श्री नन्ददास का प्रारंभिक जीवन

रामशरण शर्मा 'शरन'

सोडष ते दस घटा, शेष जो. सम्वत् मान।
गॉम रामपुर प्रगटयौ, जनपद एटा जान।।
जनपद एटा जान, निकट सोरौं की ख्याती।
विप्र सनाढ्य कुलीन, भक्त पद रेंणु सुहाती।।
कहै 'शरन' कुल बास करै, श्री गंगा जी तट।
पिता श्री जीवाराम, मात कमला सत् प्रतिशत्।।

माता कूख सुलक्षनी, जायौ ऐसौ पूत।
चक्रतीर्थ सोरौं निकट, सीखै वेद सपूत।।
सीखै वेद सपूत, सीख फिर काशी आयौ।
शेष सनातन गुरू, तहाँ ताकौ कहलायौ।।
'शरन' श्री तुलसीदास, बन्यौ अग्रज गुरूभ्राता।
नन्ददास चन्द्रहास भ्रात, पुलकित पितुमाता।।

रूप रसिक नन्ददास जी, ज्यों नारद आसक्ति।
दिव्य रूप दृग ही तकैं, मनहि समाई भक्ति।।
मनहि समाई भक्ति, निडर शंका ना कोई।
सुदृढ ज्ञान वैराग्य, रसिक ने ओढ़ी लोई।।
कहै 'शरन' सत्संग सों, प्रतिफल मिल्यौ अनूप।
'भोज' सखा नन्ददास ते, भेट्यौ ब्रज कौ रूप।।

लागी मन में लालसा, ब्रज देखूँ ब्रजराज।
कैसी ब्रजमण्डल छटा, कैसौ है सिरताज।।
कैसौ है सिरताज, है कैसी राधा प्यारी।
कैसे हैं ब्रजबाल, बधू, बन, जमुना न्यारी।।
करूँ दर्श स्पर्श, गुरू ते आज्ञा माँगी ।
तथाऽस्तु गुरूपाय, यात्रा चलवे लागी।।

नन्ददास ब्रज आय कें, इकटक रहयौ निहोर।
देखी दृग अनुपम छटा, है गयौ भाव विभोर।।
है गयौ भाव विभोर, पोर पलकन की कौंधी।
दिव्य रूप कौ दरस, परस लिपटी रज सौंधी।।
आशा जाकी जहाँ बसी, तहाँ ताकौ बास।
कहै 'शरन' फिर ना गयौ, ब्रज बाहर नन्ददास।।

लई सादगी सूर ते, तुलसी ते सत्संग।
गुरू श्री विट्ठलनाथकी, भई कृपा अंतरंग।।
भई कृपा अंतरंग, ग्रन्थ चौदह रच दीने।
"सब गढ़िया श्रीनन्ददास जड़िया" जन कीने।।
कहै 'शरन' अष्टछाप कविन में गिनती है गई।
गोवर्धन गोकुल हि गैल नन्ददास नें लै लई।।

- नन्दगांव (मथुरा)

काव्य जगत के रत्न : कवि नंददास

शिवनारायण उपाध्याय ''शिव''

कविता कौशल के शिल्पी तुम, अष्टछाप के प्रमुख कवि थे।
विशद कृष्ण लीलाम्बर के तुम, गगन विहारी प्रखर रवि थे।।
वरित 'रासपंचाध्यायी'[१] औ, भँवरगीत[२] के पूत प्रणेता।
रसमय भाषा शैली के तुम, भक्तिकाल के अनुपम चेता।।
श्रीवल्लभ के पुष्टि मार्ग की, प्रेम लक्षणा भक्ति सजाई
नंददास जडिया[३] कहलाये, अन्य कवि सब 'गडिया' भाई।
दर्शन कृष्ण काव्य का रसमय, उभय काव्य का किया प्रदर्शन।
दायित्व विश्व प्राचीन[४] ग्रन्थ का, पद्यबद्ध कर किया सु अर्पण,
संद्गाथा सुन्दर भाषा में, भाव तर्क[५] शैली में गाये।
जीवन कृष्ण समर्पित करके, काव्य जगत के रत्न कहाये।।

---

१. संयोग पक्ष २. वियोग पक्ष ३. सूरदास के अतिरिक्त अष्टछाप के दूसरे कवि नंददास थे जिसके सम्बन्ध में कहा जाता था – ''और सब गढिया, नन्ददास जड़िया'' ४. संसार का सबसे प्राचीन पद्यबद्ध ग्रन्थ ऋग्वेदं है ५. भंवरगीत उद्धव गोपी संवाद तर्क शैली में उत्तर प्रत्युत्तर में है यथा – 'सखा सुन श्याम के'

- शिव सदन, तराना (उज्जैन)

श्री नन्ददासजी

गोपीलाल शर्मा

दोहा- क्षत्राणी के मिसनि ते पहुँचि प्रभुन के पास।
नंददास विषयी भये साँचे श्री हरि दास।।

छन्द- श्री हरि विट्ठलनाथ परम मंगलमय दाता।
वन्दौं चरण सरोज सकल जग गुरू पितु माता।।
करत गाम महँ बास दास तुलसी द्विज एकी।
तिनके छोटे बन्धु, नृत्य अरू गान विवेकी।।
नन्द दास द्विज नाम नृत्य संगीत रसीले।
कामादिकन बिकार भरे हरि सुमिरण ढीले।।
एक बार इन नन्ददास जू के मन आइ
द्वारिकेश रणछोड़ दरस हित बहु जन जाइ।
हम हूँ इनके संग जाय हरि दरसन कीजे।
मारग महँ बहु नगर ग्राम देखन सुख लीजे।।
जेष्ठ बन्धु पहँ जाय विनय कीन्हीं करजोरी।
द्वारिकेश के दर्श आश पुरवहु प्रभु मोरी।।
सुनत अनुज की बात भ्रात कछु कान कीन्हीं।
तेहि छिन हृदय बिचारि तुरत नाँही कर दीन्हीं।।
चले तुरत अनखाय बन्धु की बात न मानी।
देखन दृश्य अनेक लालसा हिय हुलसानी।।
प्रथम हि पहुँचे जाय मधूपुरी अति अनुरागे।
कालिन्दी तट नगर निरखि सब जन सुख पागे।।
नंददास को बास मधूपुरी अधिक न भायो।
सकल संग को त्यागि आपु एकल उठि धायो।।
पुरी द्वारिका पंथ बिसरि इत उत भटकाये।
श्री कुरूक्षेत्र समीप ग्राम सीनँद प्रविशाये।।
कछु भोजन के काज सेठ के द्वार गये जब।
रूपवती तिय तासु निरखि मन मगन भये तब।।
तासु तिया को रूख निरखि मन अति ललचायो।
नित नित निरखत रूप द्वारिका गमन भुलायो।।
नित निवास ते आय पंथ ठाढे है जावें।
तिय मुख रूप निहारि पलटि पाछे गृह आवें।।

बार बार वह सेठ कहत हे द्विजवर ज्ञानी।
यह अनुचित व्यवहार करहु जनि बात अयानी।।
दंड भेद भय आदि सबहि विधि द्विज समुझायो।
रूप लुभीलो नन्ददास कछु कान न लायो।।
पसरिपरी सब नगर माँझ यह बिकट बुराई
सुनत सुनत अपवाद सेठ अति लज्जा आई।
ग्राम त्यागि कछु दिवस रहौं यह निज जिय ठानी।
अर्ध रात्रि यक शकट साजि गमने अनजानी।।
होत प्रात जब नन्ददास सगरी सुधि पाई
श्री गोकुल के पंथ चलेउ अतिशय अतुराई।
कृष्ण कृपा की रीति भाँति कछु जानि न जाई
केहि विधि करहिं कृपालु कृपा यह समुझि न पाईं।
चलत चलत मग माँहि शकट नियरे जब आयो।
नन्द दास कहँ देखि ह्रदय क्षत्रिय दुख छायो।।
कबहूँ दक्षिण वाम कबहुँ आगे कहुँ पाछे।
चले जात द्विज राज शकट सँग दृढ़ कटि काछे।।
दुर्व्यसनी द्विज देखि धनिक मन अति दुख पावत।
हाय हाय यह दुष्ट संग ही संग क्यों आवत।।
सकल भाँति समुझाय थक्यो वह सेठ सयानो।
नन्ददास नहिं फिरेउ न निज मन कछु सकुचानो।।
यहि विधि करत पयान जबहि यमुना तट आये।
श्री कालिन्दी पार दरस गोकुल के पाये।।
केवट को कछु देय विप्र को नाव न लीन्हों।
सब क्षत्रिय परिवार गमन गोकुल पुर कीन्हों।।
श्री यमुना को नीर निरखि द्विज मन अनुराग्यो।
नूतन पद्य बनाय यमुन यश गावन लाग्यो।।

राग-रामकली

पद- नेह करन जमुना प्रथम आईं
भक्त के चित की वृत्ति सब जानि के ताही ते
अति आतुर जो धाईं। १ ।।
जाहि जैसी मन हती सब इच्छा ताहि तैसी साध
जो पुजाईं।
नंददास प्रभु नाथ ताही पर रीझे जो इन
जमुना जी को गुन गाईं। २ ।।

पद- जो जमुना जमुने जु गावे।
सेस सहस्रमुख गावत निशदिन पार न पावे।। १ ।।
सकल सुख देनहार ताते करो उचार कहत हों
बार बार भूलि जिन जावो।
नन्द दास की आस जमुने पूरन करी ताते कहूँ
घरी घरी चित्त लावो।। २ ।।

पद- भक्त पर करि कृपा जमुन ऐसी।
छाँडि निज धाम विश्राम भूतल कियो प्रकट
लीला दिखाई जु तैसी ।। १ ।।
परम परमारथ करत है सबन पै रूप अद्भुत
देत आप जैसी।
नंददास जो जानि दृढ़ चरन गहे एक रसना
कहा कहों विशेषी ।। २ ।।

छंद- इत वह वैष्णव जाय दरस (श्री) विट्ठल को पायो ।
भरि हिय प्रेम अपार सकल जन सीस नवायो।।
श्री विट्ठल वर कही विहँसि वैष्णव प्रति ऐसे।
वा द्विजवर को पार छोड़ि आये तुम कैसे ? ।।
द्विज को दीन दयाल मलिन मन अधिक अनेरो ।
तेहि की करणी कहत सुनत मन लाजत मेरो ।।
सुनि वष्णव के बैन कही विट्ठल वर बानी
अब न करहि उत्पात बात हिय की हम जानी।।
प्रभु यक भृत्य पठाय पार ते ताहि बुलायो।
प्रभु के दरसन पाय हरष द्विजवर हिय छायो।।
क्षत्राणी के नयन माँहि जो रूप लखायो।
तैसोहि विट्ठल रूप निरखि हियरो हुलसायो।।
मोहन मदनमहीप रूप प्रभु को जब देख्या ।
नन्ददास हिय हरषि अपुन बड़भागी लेख्यो।।
त्राहिमाम् ! जगदीश ! कहत प्रभु चरणन लाग्यो।
करत दंडवत परम भाग्य द्विज वर को जाग्यो।।
जोरि पाणि शिर नाय कहत गद्गद् स्वर बानी।
आयउँ शरण दयाल अधम उद्धारण जानी।।
है प्रसन्न प्रभु ताहि तुरत शरणागत लीन्हों।
शरण समर्पण मंत्र देइ गत भय करि दीन्हों।।

श्री गुरू श्री नवनीत प्रिय के दर्शन करिके।
नन्ददास कृत कृत्य भये गुरू चरणन परि के ।।
हरि को महा प्रसाद जबहि द्विज जेंमन लाग्यो।
जेंमत तनु सुधि भूलि श्याम लीला रस पाग्यो।।
हरि की लीला देखि देखि द्विज अतिशय फूल्यो।
कौन ? कहाँ ? कहा समय ? करत कहा सब सुधि भूल्यो।
हरि की लीला देखि देखि सब रैन सिरानी।
मन की गति है पंगु श्याम रस सिन्धु समानी।।
बैठे पातर पास न जेंमत, सोवत नाहीं।
हरि लीला रस मग्न परम प्रमुदित मन माहीं।।
प्रात होत गुरूदेव जबहि द्विजवर ढिंग आये।
नन्ददास को बाह्य ज्ञान बिनु लखि सुख पाये।।
हरि लीला रत नन्ददास प्रमुदित मन ऐसे।
भरे भवन को चौर चकित है चितवत जैसे।।
तब प्रभु तिनके कान कही द्विजवर प्रिय मेरे।
भयो मंगला समय करहु दरशन हरि केरे।।
औचक प्रभु हि निहारि तुरत बाहिर सुधि आई
परम प्रेम भरि मोद परयो प्रभु चरणन जाई।
पुनि उठि प्रेम अपार दरश करि सम्मुख आयो।
उमँगत हृद्य सम्हार विरचि सुन्दर पद गायो।।

राग-विलावल

पद- प्रात समै श्री वल्लभ सुत को उठतहि रसना
लीजिय नाम।।
आनन्द कारी प्रभु मंगल कारी अशुभ हरण जन
पूरण काम ।।
याहि लोक परलोक के वन्धु को कहि सके तिहारे
गुण ग्राम ।।
नन्द दास प्रभु रसिक शिरोमणि राज करो
श्रीगोकुल सुखधाम ।।

राग-विभास

पद- प्रात समे श्री वल्लभ सुत को
पुण्य पवित्र विमल यश गाऊँ

–शेरगढ, कोटा

साभार –*२५२ वैष्णवन् की वार्ता से*

अष्टछाप में नन्ददास

✍ पुरुषोत्तम देवपुरा

अष्टछाप

गोस्वामी आचार्य प्रभु, वल्लभ बिठ्ठलनाथ, इनकें आठों शिष्य ही, अष्टछाप में साथ।।
करते पद रचना मधुर, स्वर भरते संगीत, श्रीजी के सम्मुख करे, कीर्तन पुष्टि रीत।।
श्रीजी प्रभु के साथ में, अष्ट सखा अंतरंग, देवी जीव अहर्निष, साक्षात श्रीजी संग।।
अष्टछाप के अष्ट कवि, अष्ट सखा सखारूप, खावे खेले साथ में, दर्शन करे स्वरूप।।
पुष्ट कर रहे पुष्टि को, कीर्तन कार अनन्य, हिन्दी, ब्रज साहित्य के, साथ काव्य भी धन्य।।

नन्ददास

कोमल कान्त पदावली, रसमय पद लालित्य, चमत्कार कौशल सभी, विविधविधा साहित्य।।
भक्ति काव्य के रूप में, इनका काव्य प्रबंध, काव्य कला की दृष्टि से, प्रथम सूर फिर नन्द।।
इनकी पद रचना बनी, ब्रज,हिन्दी साहित्य, नन्ददास इनमें शशि, सूरदास आदित्य।।
दो गुण इनके काव्य में, हैं माधुर्य, प्रसाद, रास, बाल, क्रीडा प्रसंग, उपजाते अह्लाद।।
श्रीमद्भागवत को दिया, इनने भाषा रूप, पेटू पण्डित हिल उठे, पहुँचे बिठ्ठलभूप।।
बिठ्ठल के संकेत से, पृथक किये कुछ अंश, शेष बहाकर यमुन में, ग्रथ किया यौ ध्वंश।।
गौरव पाया नन्द ने, धन्य गुरू अनुराग, अष्टछाप के कमल में, इनका त्याग पराग।।
अष्टछाप की अनामिका, नन्द चमकता नंग, विविध वाद्य मिल स्वर भरे, उनमें थाप मृदंग।।
अष्ट छाप में नंद का, है अपना ही स्थान, रस मंजरी, रूप माधुरी, पांचाध्यायी प्रमाण।।
इस लघु रचना में भरूँ कैसे सारे भाव, लिखना तो मुझको बहुत, किन्तु स्थानाभाव।।
ब्रज हिन्दी गौरव सभी, श्रद्धा सहित नमन, इस लघु रचना से करू सबका अभिनन्दन।।

- मावलीगाँव,(उदयपुर)

पद काव्य

संकलन : मधुसूदन गोरवा
राकेश अजमेरा

राग भैरव

हा-हा हो हरि ! नृत्य करौ।।
जैसें करि मैं। तुमहिं रिझाऊँ, त्यौं मेरौ-मन तुमहुँ हरौ।।
तुम जैसें स्रम-बाहु करत हौ, तैसेंई मैं हुँ डुलाऊँ।
मैं स्रम-देखि तिहारे उर कौ, भुज भरि कंठ लगाऊँ।।
मैं हारी, त्यौंही तुम हारौ तब, चरन चाँपि स्रम मैंटौं।
'सूर' स्याम ज्यौं उछँग लेहु मोहि, त्यौंहीं हँसि मैं भैंटों।।

❀

मान लाग्यौ, गिरधर गावै।
तत थेई, तत-थेई, ततततत-ता-थेई, भैंरौं-राग-मिलि-मुरली-बजावै।।
नाँचत नव-बृषभाँनु-दुलारी, अबधर-गति मैं गति उपजावै।
गिरिधर-पिय-प्यारी की पद रज, ''कृष्णदास'' लै सीस चढ़ावै।।

❀

मदन-मौंहन कमल नैंन, निरतति रास रंगे।
तत-थेई, तत-थेई, थेई, थेई, गति अनेक लेति-
मान, गान करत रूप सहज सरस सुघंगे।।
बिलुलित बनमाल उरसि, मोर मुकुट रूचिर सरस;
जुबतिन-मन-हरन अरून - द्दग-तरंगे।

❀

कान-कुंडल झलमलात, पीत-बसन फरफरात;
रूनन, झुनन धरति चरन, भृकुटी-भाव-भंगे।।
मोहीं सुर ललना, भामिनि सिद्ध सकल सुनति-स्रबन;
मुरली-नाँद, ग्राम जति, अधर कल-उपंगे।
''गोबिंद'' प्रभु ललितादिक सहचरी मिल जूथ सकल;
वारि-फेरि देति मदन कोटि कोटि अंगे।।

प्यारी-ग्रीवा-भुज-मेल, निरतत पिया-सुजान।
मुदित परसपर लेतिं गति मैं गति;
गुन रासि राधे, गिरिधरन-गुन-निधान।।
सरस-मुरली-धुनि मिलैं, मधुर-सुर-
रास-रँग-भींने, गावैं अबधर-तान, बँधान।
'चतुरभुज' प्रभु स्यामा स्याम की नटनि देखि
मोहे खग, मृग, बन थकित व्यौंम-यान।।

❁

निरतति गुपाल-संग, गोपिका मिली।
अद्भुत-नट-भेष देखि, कोटि काम अति बिसेखि;
मुरली अधर-मधुर धरैं सप्त-सुर-रली।।
गावति पिक-कंठ सरस, परम-रीझि तान-बाँन;
भामिनी-सुजान बृषभाँनु की लली।
वलय, नूपुर, किंकनी-कटि-झनकत, तत-थेई-थेई-
उघटत, मुख-सबदावलि, ग्रीब-भुज पिली।।
बाजत मधुरैं मृदंग, ताधिलांग गति सुधंग;
संग लेति देति ताल, रास-मंडली ।
कोलाहल करत हंस, मोर-सोर चहूँ ओर;
भोर भऐं फूली मनौं कंज की कली।।
बृन्दावन-नव-निकुंज, प्रैंम-पुंज-भरे हरखि-
निरखि तरूनि तरनि-तनया-तीर चाँदनी भली।
वल्लभ-चरनारबिंद-पंकज-मकरंद-सरस;
करत दाँन ''मादास'' मौंहन अति अली।।

❁

नाँचति बृषभाँनु-कुँवरि, हंस-सुता-पुलिन मध्य;
हंस-हंसनी मयूर मंडली बर्नी।
नाँचत गुपाल लाल, मिलवत झप ताल चाल;
गुंजत अति मत्त मधुप कामिनी अर्नी।।
पदक-लाल, कंठ-माल, तरूनि-तिलक झलक-भाल;
अवनि-फूलि, बर-दुकूल, नासिका मर्नी।
नील-कंचुकी सुदेस, चंप-कली गलित केस;
मुकलित मनि बन दाम, कटि सु काछनी।।

मरकत-मनिबलय-राव, मुखुर-नूपुर-धुनि सुभाव;
जाबक-जुत चरनन-नख-चंद्रिका धनीं।
मंद-हास, भ्रू-बिलास, रास, लास, सुख निवास;
अलग लाग लेति निपुर राधिका-गुनीं।।
काम-सिंधु, कतब-बिंदु, रीझे रहे, चरन गहे;
साधु साधु कहत फिरत राधिका-धनीं।
भैंटति गहि बाँह-मूल, उरज परसि भई फूल;
''व्यास'' बचन सानुकूल, रसिक-जीवनी।।

सुधंग नाँचति नबल किसोरी।
थेंई-थेई करति, चँहति पीतम-दिसि, बदन-चंद मनौं तृषित-चकोरी।
तान, बँधान, मान मैं भामिनि, रिझए स्याम कहत हो-हो री !
'हित-हरिबंस'' परसपर प्रीतम, बरबस लयौ मौंहन-चित-चोरी।।
अदभुत-नट-भेष धरें नाँचत गिरिधरन-लाल;
उघटत संगीत तत-थेई थेई-थेई-ताघे।
लेत उरप मान लाग-डाट सुघर-तान, आन आन
गुन-गन-नन-नन-नन-गति-बँधान साधे।।
सरद-निसा पूरनचंद, त्रिबिध-बायु बहति मंद;
खग, मृग, द्रुम, बेली, पत्र, पत्र रटत राधे।
जुबती-मंडल समूह, राग रंग कौतूहल;
''राम-कृष्ण हित दमोदर'' चरन-अज अराधे।।

राग – रामकली

देखौ देखौरी ! नागर-नट, निरतत कालिन्दी-तट;
गोपिन के मध्य राजै मुकट-लटक।
काछिनी, किंकनी कटि पीतांबर की चटक;
कुंडलन किरन-रबि-रथ की अटक।।
तत-थेई, तत-थई सबद, सकल घट उरप-
तिरप-गति पग की पटक।
रास मैं श्री राधे ! राधे !! मुरली मैं एक-रट;
''नंददास'' गावै तहाँ निपट निकट।।

निरतत स्याम, स्यामा-हेत।
मुकट-लटकनि भृकुट-मटकनि, नारि-मन-सुख-देत।।
कबहुँ चलत सुधंग-गति लै, कबहुँ उघटत-बैंन।
लोल-कुंडल, गंड-मंडित, चपल-नैंननि-सैंन।।
स्याम की छबि निरखि नागरि, रही इकटक-जोई
''सूर'' प्रभु उर लाइ लींनीं, प्रैंम-गुन-करि-पोइ।।

राग – बिलावल

चलहु राधिके सुजान ! तेरे हित गुन-निधान;
राास रच्यौ कुँवर-कान्ह, तट कलिन्द-नंदनी।
निरतति जुबति समूह, रास-रंग अति कुतूह;
बाजति रस मुरलिका, अति अनंदनी।।
बंसीबट निकट जहाँ, परम-रमन-भूमि तहाँ;
सकल-सुखद बहति मलय-बायु-मंदनी।
जाती-ईसर-बिकास, कानन अति-सै सुबास;
राका-निसि-सरद-मास, बिमल-चंदनी।।
''कुंभन दास'' प्रभु निहारि, लोचन-भरि घोष-नारि;
नख-सिख सौन्दर्य सीम, दुख-निकंदनी।।

निरतति राधा-नंद किसोर।
ताल, मृदँग सहचरी बजावति, बिच-बिच मुरली कौ कल-घोर।।
उरप, तिरप पग धरत धरनि पैं, मंडल फिरत भुजन भुज जोर।
सोभा-अमित बिलोकि ''गदाधर'' रीझि-रीझि डारत तृन-तोर।।

राग–टोड़ी

सुनौं हो स्याम ! इक बात नई
आज रास राधा अविलोक्यौ, मेरे-मन इहि भूल भई।
हँसि-बोलन, डोलन, बन-बिहरन, वे-चितवन न जात चितई
कौंन कहै बृषभाँनु-नंदनी, प्रगट भई मनौं मदन जई।
तुम सम नैंन बैंन तुमहीं सम, तुम सम आँनद-केलि-मई
तिहारौ रूप धरि तिहारी ही सौं, तुमहिँ परसि भई तुमहीं मई।

माँथैं मुकुट, पीतपट, मुरली, बनमाला छबि-छाई रई
रंचक-भेद रहयौ या तन मैं, औरू सकल-छबि पलट लई।
पिय आलिंगन, पिय अबलंबन, पिय-कौं हँसि कैं अंक दई
फिरि चितवनि और मुरि-मुसिक्यावनि, उघटनि मिस-करि नृत्य-ठई।
इहि कौतुक अनूप मन-मौंहन, मनौं घोष रस-बेलि छई
''सूरदास'' प्रभु के उर परसत, ललित बलित बलिहारि गई।

रास-मंडल मैं बन-ठन माधौ, गति मैं - गति उपजावै हों।
कर-कंकन झनकार मनोहर, प्रभुदित बैंनु-बजावै हो।।
स्याम-सुभग-तन पैं दच्छिन-कर, कूजत चरन-सरोजै हो।
अबला-बृंद अवलोकत हरि-मुख, नैन-बिकास मनोजै हो।
नील-पीत-पट चलत चारू नट, रसमै नूपुर कूंजै हो।
कनक-कुंभ-कुच-बीच पर्सीना, मनुहर मौंतिन पूंजै हो।।
हेम-लता तमाल अबलंबित, सीस मल्लिका फूली हो।
कुंचित-केस, बीच अरूझाने, मनु अलि माला-झूली हो।।
सरद-बिमल-निस-चंद बिराजत, क्रीड़त जमुना-कूलैं हो।
''परमानँद स्वामी'' कौतूहल, देखत सुर-नर भूंलैं हो।।

बिसद-कदंब सघन-बृन्दाबन, रच्यौ रास तरनि-तनया-तट
सरद-निसा-उड़पति उजियारी, पून्यौ चाँद-मुरली नागर-नट।
स्रबन-सुनति चलीं ब्रज-सुन्दरि, साजि-सिंगार पैहैर भूषन-पट
अति-हुलास, कुमुदिनी-प्रफुल्लित, निरखि लाल ठाड़े बंसी-बट।
मंडल-मधि नाँचति पिय-प्यारी, गावत सुर टोड़ी-तान बिकट
''दास सखी'' देखति नैंननि भरि, बारि - फेरि डारौं कोटि-मदन-भट।

रूचिर रमति रूचि-रासम्।
कुसुमित कानन नव वेली, द्रुम, निजकृत उडुप प्रकाशम्।।
युवती युगल युगल-प्रति माधो, करत विनोद विलासम्।
वेणु, मृदंग, मजीर, किंकिणी, कणित मधुर मृदु हासम्।।
यमुना-तीर भीर खग, मृग की, मंद समीर सुवासम्।
बरषत कुसुम इन्द्र, सुर धावत, शंकर त्यजि कैलाशम।।

निरखि नैंन-छबि मुरझयौ मनमथ, लोचन पद्म-पलाशम्।
''विष्णुदास'' प्रभु गिरिधर क्रीड़ति, कथा कथित शुक, व्यासम्।।

राग - षट्

आज कमनीय नव-कंज बृन्दा-विपिन,
मदन-मौंहन सुखद रास-मंडल रच्यौ।
उदित उड़राज-लखि मुदित व्रजराज-सुत,
प्रान-प्यारी सहित बिबिध-गति मति नच्यौ।।
मुकुट की लटक, कुंडल की चटक,
भृकुटीन की मटक, पग-पटक बरनी न परत।
हार उर रूरत, कंकन ललित, किंकिनी-
मुखर मंजीर-धुनि सुनत जन मन हरत।।
एक तैं एक ब्रज-सुन्दरी अधिक गुन-
रूप रस-मत्त गिरिधरन-संग सुर भरत।
सबै जोबन भरीं उपर पुनि तिरप-
संगीत-गति अलग मति तत-थेई, थेई करत।।
स्रबन सुनि सुर-बधू मुरलिका-काळली,
जदपि पिय निकट तौऊ नहिँ धीरज धरत।
रसिक-मनि मुकट-नँदलाल की केलि यह-
''गदाधर-मिश्र'' नैंकु न मन तैं टरत।।

❀

रास-विलास रच्यौ नागर-नट।
जुरि-मंडल निरतति ब्रज बाला, नवल निकुंज सुभग जमुना तट।।
उपजत ताँन, बधाँन, सप्त-सुर, बाजत ताल, मृदंग, बीन-रट।
सनमुख है नाँचति पिय-प्यारी, लेति सुधंग चाल-गति अट-पट।।
रसिक बिहार निरखि ससि हार्यौ, सरद-निसा भूल्यौ अपनी अट।
''कृष्णदास'' गिरिधर-श्रीराधा राजति मेघ मनौं दामिनि घट।।

❀

खेलत रास रसिक - नँदलाल।
जमुना-पुलिन सरद-निस-सोभित, रचि मंडल ठाड़ीं ब्रज बाल।
तत-थेई, तत-थेई, थेई, थेइ उघटत, बाजत झाँझ, पखावज, ताल।।
जम्यौ सरस-अति-राग परसपर, गुंजत कौमल-बैंनु-रसाल।

सनमुख लेति उरप, तिरप दोउ, राधा-रसिकनि-मदन-गुपाल।।
मनौं जलद-दामिनि-रस-पूरन, कनक-लता जनु-स्याम-तमाल।
सुर-पुर-नारि निहारि परम-रस, रति-पति मन मैं भयौ बिहाल ।।
थकित चंद, गति मंद भयौ अति, चूके मुनि ध्यान धरत तिहिँ काल।
परम-बिलास रच्यौ नागर-नट, बिलुलित उरसि मनौं अलि-माल।
''कृष्णदास'' लाल-गिरिधर-गति, पावत नाहिँ हस्ति, मराल।।

राग-सारंग

बन्यौं रास-मंडल अहो ! जुबति-जूथ-मधि नाइक नाँचै, गावै
उघटत सबद थेई, थेई, ता थेई, गति मै गति उपजावै
बनीं राधा-बल्लभ जोरी, उपमा दीजै को री !
लटकत है बाँह जोरी, रीझि रिझावै
सुर, नर, मुनि मोहे, जहाँ-तहाँ थकित भए;
मींठी-मींठी तान लालन बैंनु बजावै
अंग-अंग चित्र कीऐं, मोर-चंद माथैं दिऐं ;
काछनी काछैं पीतांबर सोभा पावै।
''चतुर-बिहारी'' प्यारी - प्यारे ऊपर बारि डारी;
तन, मन, धन, यह सुख कहत न आवै।।

❀

नट-वर-गति निरतत हैं, भक्तन-उर परसत हैं;
पुलकित-तन हरखत हैं, रास मैं लाल-बिहारी।
बाजत ताल, मृदंग, उपंग, बीना, बाँसुरी, सुर-तंरग;
ग्र-ग्र-ता, ग्र-ग्र-ता, थंग-थंग लेति छंद भारी।।
कटि-काछिनी पीत, सुरंग, मोर-मुकुट अति सुधंग;
राख्यौ अरध-भाल-ललित सीस-पेच भारी।
आरति करति ब्रज की बाल, हँसि-हँसि निज कंठ लाइ।
देखत सुर, नर, मुनि औ 'रामदास' बलिहारी।।

❀

तरनि-तनया-तीर लाल गिरिबर-धरन,
राधिका-संग निरतत सुभग रास मैं।
तत-थेई, तत-थेई करत गति भेद सौं पिय,
अंग अंग मिलत सुन्दरी ता समैं।।
नंद-नंदन निरखि, सुर-सहित सुर-नारि,

बैंनु-कल-नाँद सुनि मोहे अकास मैं।
थक्यौ चंद औरू सब तारका हू थकि रहीं,
तान-सुर-गान ''व्रज-पति'' करत जा समैं।।

राग-नट

नागरी ! नट - नाराइन गायौ।
तान, मान, बंधान सप्त-सुर, रागहिं राग मिलायौ।।
चरन घूँघरू, जंत्र भुजन पैं, नींकौ झमक जमायौ।
तत-थेई, तत-थेई, लै गति मैं गति, पति व्रजराज रिझायौ।।
सकल-तियन मैं सहज चातुरी, अंग सुधंग दिखायौ।
''व्यास'' स्वामिनी धनि-धनि राधा, रास मैं रंग रचायौ।।

❀

आज बन नीको रास बनायौ।
पुलिन पबित्र, सुभग जमुना-तट, मौहन बैंनु बजायौ।।
कर कंकन, किंकिनि-धुनि, नूपुर, सुनि खग, मृग सचुपायौ।
जुबती-मंडल-मध्य स्याम बन, नट नाराइन गायौ।।
ताल, मृंदग, उपंग, मुरज, ढफ, मिलि रस-सिन्धु बढ़ायौ।
बिबिधि बिसद बृषभाँनु-नंदनी, अंग सुधंग दिखायौ।।
अभिनै-निपुन लटक लट लोचन, भृकुटि अनंग लजायौ।
तत-थेई, तत-थेई लै नौतन-गति, पति-ब्रजराज रिझायौ।।
परम-उदार रसिक-चूरामनि, सुख बारिद वरषायौ।
परिरंभन, चुबंन, आलिंगन, उचित जुबति-जन पायौ।।
बरखत कुसुम मुदित नभ-नाइक, इन्द्र निसान बजायौ।
''हित-हरबंस'' रसिक राधा-पति, जस-बितान-जग छायौ।।

राग - पूर्बी

निरतत गुपाल-लाल तरनि-तनया-तीरे।
जुबति-जन संग लिऐं, मनमथ मन करख किऐं;
अंग-अंग सुखद किऐं, राजत बलबीरे।।
लावन्य-निधि, गुन-आगर, कोक-कला गुन-सागर;
त्रिबिधि ताप हरति अति सीतल-समीरे।
''आसकरन'' प्रभु मौंहन नागर, गुन-निधान संगीत-सागर;
रिझवत ब्रज बधू नागर फरकत पट-पीरे।।

राग – मालव

मदन-गुपाल रास-मंडल मैं, मालव-राग भर्‌यौ गावै।
अवधर-तान-बँधान सप्त-सुर, मधुर-मधुर मुरलिका बजावै।।
निरतत सुलफ लेति नौतन-गति, बहु-बिधि हस्तक भेद दिखावै।
उघटत सबद तत-थेई, तत-थेई, जुबति-बृन्द-मन-मोद-बढ़ावै।।
थक्यौ चंद, मोहे खग, नग, मृग, प्रति-छिन अति जुअनागति लावै।
''चतुरभुज'' प्रभु गिरिधर नट-नागर, सुर, नर, मुनि गति, मति बिसरावै।।

❀

कमल-नैंन प्यारौ, अबघर-तान जानैं।
लाल, अलाग, सुर, राग, रागिनी, बहुत अनागत आनैं।।
रसिक राइ सिरमौर-गुनन मैं, गुन तुम हीं हौ जान।
''कुंभन दास'' प्रभु गोबरधन-धरि, हरत सबै मन करत गान।।

❀

निरतत लाल-गुपाल रास मैं, सकल ब्रज-बधू संगे।
गिड़ गिड़ तक-थग, तत-थेई, भामिनि रति-रस-रंगे।।
सरद-विमल-नभ उड़पति राजत, गावत तान-तरंगे।
ताल, मृदंग, झाँझ औ झालर, बाजत सरस-सुधंगे।।
सिब, बिरंच मोहे सुर, नर, मुनि, रति-पति-गति मति-भंगे।
''गोबिंद'' प्रभु रस रास रसिक-मनि, भामिनि लेति उछंगे।।

राग–सोरठ

बन्यौं रास-मंडल-बर तामैं-महा-मुदित मृदुल राधा प्यारी।
वरनौं कहा बानक अंग अंग की एक रूप, एक बेस,
एक रंग, एक-रास, ता मैं लोत उपजत गति अति न्यारी।।
गाबत तान तंरग, निरतत उरप, तिरप-
लाग, डाट, उघटत सबद उपज महा री !
जमुना-पुलिन सुभग सीतल-समीर मंद,
चंद थक्यौ निसि सब दिसि लागति उजियारी।।
मोर-मुकुट माथैं, अंग अंग चित्र काछैं,
ग्रीबा भुज मेलि दोऊ निरतत बिहारी।
''कल्यान'' के प्रभु पिय प्रैंम मगन है लहकत फिरत-
करत रास-क्रीड़ा ऐसैं रीझि बस भए गिरिधारी।।

राग-श्री

सिरी-राग गावति ब्रज भामिनि।
निरतति कोक कला गुन सुन्दरि,
सकल भामिनी में बर कामिनि।।
मिलवित तत-थेई अबघर तान-
बधान बिमल-राका-ससि जामिनि।
तरनि-तनया-तीर बिमल सुखद जामिनी,
गान करति तिय अँग अभिरामिनि।।
सजल स्याम धन नवल नंद सुत,
दिऐं लागि सोहै सौदामिनि।
''कृष्णदास'' प्रभु गिरि गोबरधन-धरि,
रिझयौ चाँहति संग मिलि स्वामिनि।।

राग-गौरी

खेलत रास, दुलहिनि-दूलहुँ।
सुनहुँ न सखी ! सहित ललितादिक, निरखि-निरखि नैंननिकिनि फूलहु।।
अति-कल-मधुर महा-मौंहन-धुनि, उपजति हंस-सुता के कूलह।
थेई-थेई बचन मिथुन-मुख निसरति, सुर मुनि-देह दसाकिनि भूलहु।
मृदु पद न्यास उठत कुंकुम रज, अदभुत बहत समीर दुकूलहु।
कबहूँ स्याम-स्यामा दोऊ चलि, कच, कुच, हार छुवत भुज-मूलहु।।
अति-लावन्य रूप अभिनै-गुन, नाहिंन कोटि-काम सम तूलहु।
भृकुटि-बिलास, हास रस बरखत, ''हित हरिबंस'' प्रेंम-रस झूलहु।।

❀

गोप-बधु-मंडल-मधि नाइक गुपाल लाल,
रूचिरानन बिंबाधर-मुरलिका धरे।
अदभुत-नटवर विचित्र, भेख, टेक अति-सुदेस,
कनक, कपिस काछि सिखी-सिखंड सिखरे।।
कं-कं झाँक झनकत, थौंग थौंग थगत, किटघि-
किटघि ! तत थेई उघटत रास रस भरे।
जै-जै गिरिराज-धरन, कोटि मदन-मूरति पैं,
''हरजीवन'' बलि-बलि व्रज-पुरंदरे।।

यह गति नाँच नँचावन-नई
बृन्दाबन रस-बिलास, सुख बढ़त सईं।
भाँति-भाँति राग-गाइ, अलापत सुर कईं
उरप, तिरप मान लेति तत-ता-थईं।
स्याम-सुन्दर करत क्रींड़ा, प्रेंम-घटा छईं
''कुंभनदास'' प्रभु गिरिधर, छिन-छिन प्रीति नईं।

राग-हमीर

रास में रस भरी राधिका आवै।
वाहु-पिय अंस धरि, हंस गति लटकति-
कुच-कनक-घट से रसिक-मनहिं भावै।।
उरप, तिरप, तांडव, लास्य, सुलफनि-भेद
निरतति पिय-संग मधुर-कल हि गावै।
लोल कटि देस रूरति रतन-मेखला,
नूपुर क्वनित हस्त-हाब दिखरावै।।
चपल मोहे नैंन-रूप रूचिर मुसिकावनी,
रूप, गुन-रासि प्रान-पतिहिं रिझावै।
बृषभाँनु-नंदनी, गिरिधरन नंद-सुत-
चरन-रैनु नित तहाँ ''कृष्णदास'' पावै।।

राग-जै-जैवन्ती

बृन्दावन बंसी-रट, बंसीबट, जमुना-तट,
रास मैं रसिक-प्यारौ खेल रच्यौ वन मैं।
राधा-माधौ कर जोरें, रवि-ससि होत भौरें,
मंडल मैं निरतति दोऊ सरस सघन मैं।।
मधुर-मृदंग बाजे, मुरली की धुनि गाजै,
सुधि न रही कछू री ! सुर, मुनि, जन मैं।
''नंददास'' प्यारौ, रूप उजियारौ कृष्ण,
क्रीड़ा देखि थकित सब जन मन मैं।।

राग-ईमन

लाल-संग, रास-रंग, लेति मान रसिक रवन,
ग्र-ग्र-ता, ग्र-ग्र-ता, त-त-थेई गति लीनें।
स.री.ग.म.प.ध.नी-धुनि, ब्रजराज कुँवर गावत री !

अति जति संगीत-निपुन तननन गति चींने।।
उदित-मुदित सरद-चंद, टूटे कंचुकी के बंद,
निरखि-निरखि बिभव कोटि-मदन हींने।
बिहरत बन रस-बिलास, दंपति-मन ईषद-हास,
''छीत स्वामि'' गिरिबरधर रस-बस तब कींने।।

राग – कान्हरौ

धन्यौं मोर-मुकुट नटबर-बपु, स्याम-सुन्दर कमल-नैंन,
बाँकी-भौंह, ललित-भाल, घुँघरारी-अलकैं।
पीत-बसन, मौंती-माल, हिऐं पदक कंठ लाल,
हँसनि, बोलनि, गावनि गंड स्रबन कुंडल झलकें।।
कर-पद भूषण अनूप, कोटि-मदन मौंहन रूप,
अदभुत बदन'चंद देखि, गोपी भूली पलकै।।
''कहि भगवानहित रामराय'' प्रभु ठाड़े रास-मंडल मैं,
राधा सौं बाँह- जोरी किऐं, हिऐं प्रैंम ललकै।।

राग – अड़ाना

बंसीवट के निकट हरि रास रच्यौ है, मोर मुकुट और औढ़ें पीत-पट।
वृन्दावन-कुंज-सघन-बन, सुभग पुलिन और जमुना के तट।।
आलस-भरे उनींदे दोऊ जन-(श्री) राधा जू और नागर नट।
'व्यास'' रसिक तन, मन, धन फूले, लेति बलैयाँ कर अँगुरिन-चट।।

राग–केदारा

सुनि-धुनि मुरली बाजे बन, हरि रास-रच्यौ।
कुंज-कुंज द्रुम, बेलि प्रफुलित, मंडल कंचन-मनिन खच्यौ।।
निरतति जुगल किसोर-किसोरी, मन मिल राग केदारो सच्यौ।
''श्रीहरिदास'' के स्वामी स्यामा कुंजविहारी, नींकैं आजु गुपाल नच्यौ।।

❀

रास रच्यौ बन कुँवर किसोरी।
मंडल-बिमल-सुभग बृन्दाबन, जमुना-पुलिन स्याम-धन घोरी।।
बाजत बैंन, रबाब, किन्नरी, कंकन, नूपुर, किंकिनि-सोरी।
तत-थेई तत-थई सबद उघटत पिय, भले बिहारि-बिहारिन जोरी।।
बरहा-मुकुट चरन-तट आवत धरैं भुंजन मैं भामिन कौं री।
अलिंगन, चुंबन, परिरंभन, ''परमानँद'' डारत तृन तोरी।।

आज नँद-नंद मुख-चंद बन राजे।
जटित मनि-मुकुट औ सुभग कुंडल चटक,
बसन पीत-पट भ्रू-मटक छाजै।।
रास मैं रसिक बर, ललित संगीत-सुर,
मधुर-मुरली, मृंदुल, ताल-बाजै।
''श्रीबिठ्ठलगिरिधरन'' कनित नूपुर चरन,
सुनति भई घोष-तिय थकित आजै।।

❀

नाँचति लाडिली रास मैं सुनौं हो सहेली ! रंग रह्यौ।
ताही समैं रस-रास-सहाइक, सुखद मलय सौ पबन बह्यौ।।
उड़पति-किरन सुरंजित कानन, नव-कुसुमावलि तिमिर दह्यौ।।
जुबती-मंडल मध्य स्याम-घन, राग-बारिनिधि बैंनु गह्यौ।।
बोलत तोहिं सुरत मिलवन कौं, उठि चलि मान मेरौ कह्यौ।
''कृष्णदास'' प्रभु गिरिधर नागर, तेरौ बिंलब क्यौं जात सह्यौ।।

❀

आजु गुपाल रच्यौ रास, देखति होति जिय हुलास,
नाँचति बृषभाँनु-सुता-संग रंग भींने।
गिडि-गिड, तक थुंग, थुंग, ततत-थेई-थेई, थेई,
गावत केदारौ-राग सरस-तान लींने।।
फूले बहु-भाँति-फूल, सुभग पुलिन-जमुना-कूल,
मलय-पबन बहत गगन, उड़पति गति छीने।
''गोबिद'' प्रभु करति केलि, भामिनि रस-सिन्धु झेलि,
जै-जै सुर सबद कहत आँनद-रस कींने।।

राग–विहाग

वन मैं रास-रच्यौ बनवारी।
जमुना-पुलिन मल्लिका फूली, सरद-रैंन उजियारी।।
मंडल-बीच स्याम-घन सुन्दर, राजति गोप-कुमारी।
प्रगटत कला अनेक-रूप तिहिं अवसर लाल बिहारी।।
सीसमुकट कुंडल की झलकन, अलक बनी घुँघरारी।
कंबु-कंठ-ग्रीबा की डोलन, छीन-लंक लैहैकारी।।

धाइ, धाइ झपटत, उर लपटत, उरप, तिरप-गति न्यारि ।
निरतत, हँसत, मयूर-मंडली, लागत सोभा भारी।।
बैंनु-नाँद-धुनि सुनि सुर, नर, मुनि, तन की दसा बिसारी।
''श्री बिट्ठल'' गिरिधरन लाल की बानिक पैं बलिहारी।।

मानौं माई घन-घन अंतर दामिनि।
घन-दामिनि, दामिनि धन अंतर, सोभित हरि-ब्रज-भामिनि।।
जमुना-पुलिन मल्लिका मुकलित, सरद सुहाई जामिनि।
सुन्दर ससि, गुन रूप-रासि-निधि, आँनद मन बिस्रामिनि।।
रच्यौ रास, मिलि रसिक-राइ सौं, मुदित भईं ब्रज-बामिनि।
रूप-निधान स्याम-घन सुन्दर, अंग अंग अभिरामिनि।।
खंजन, मीन, मयूर, हंस पिक, भेद नई गज-गामिनि।
कौतुक घने सु सुर ''नागर'' सँग काम बिसोह्यौ कामिनि।।

पिय कौं नँचवनि सिखावति प्यारी।
बृन्दाबन मैं रास रच्यौ है, सरद-रैंन-उजियारी।।
ताल, मृदंग, उपंग बजावति, अति-प्रबीन ललितारी।
रूप-भरी, गुन हाथ छरी लै, डरपति छैल-बिहारी।।
बीना, बैंनु, नूपुर-धुनि बाजत, खग-मृग बुद्धि बिसारी।
''ब्यास'' स्वामिनी की छबि निरखति, रीझि देति कर-तारी।।

हर सिंगार

श्री रासलीलाऽमृतस्तोत्र

बजति कुंज मैं मंजु-बाँसुरी, ब्रज-बधू बँधी प्रेम-रासुरी! ।
घर तजौ गई कृष्ण-पासुरी, सरद-चँद कीन्यौं उजासु री !।।

हरि कियौ जबै मंद-हासुरी, निरखि कैं भयौ ताप-नासु री !।
सुमन-कुंज राजैं बिकासुरी, भ्रमर-पुंज गुंजैं सुबासु री !।।
गुन-भरी तिया रूप-रासुरी, पुनि प्रवीन हैं प्रेम-गाँसुरी !।
अतनु-मोद-भाव-प्रकासुरी, मिलि गुपाल कीन्यौं बिलासु री।।

मद-गुमान हीं जानि तासुरी, हृदै-मैं छिपे श्री निवासु री !।
विरह जाति बाढयौ हुतासुरी, तरू-लतानि पूँछैं उदासुरी।।
सघन-कुंज कीनीं तलासुरी, गुन-कथा रचि याहि आसुरी।
भरतिं नैंनि ऊँचे-उसासुरी, करि-कृपा-मिले पीत-बांसुरी।।

वदन-कँज है चारू-हाँसुरी मदन-मान जातैं निरासुरी।
कर-गहैं जुरीं आस-पासुरी, भरति अंक बाढ्यौ हुलासुरी।।
अधर-पान कीनैंहुँ प्यासुरी, मिटति नाँहि जैसैं उपासुरी।
लिपटि स्याम सौं ऐसैं भासुरी, घन-सुदामिनी भाद्र-मासुरी।।

करति कृष्ण के संग रासुरी, सरस-राग गावैं खुलासुरी।
सुर जु सप्त नीकैं निकासुरीं, मुरज-बीन बाजैं मिठासुरीं।।
बजत मंजु मंजीर लासुरी, नचति मोर छाँडैं अबासुरी।
सुर बिमान छाए अकासुरी, परत पुस्प बृष्टी तहाँ सुरी।

कटि गई तबै गेह-फाँसुरी, हटि गयौ जु संसार-त्रासुरी।
चरन-भाँझि दीजै निवासुरी, सरन ''गोकुलाधीस'' दासु री।।

श्रीनाथजी के

पाटोत्सव पर

सम्मानित-साहित्यकार

वर्ष-१९९९

डा० विष्णु विराट चतुर्वेदी

बड़ौदा

✻

डा० सुरेश पाण्डेय

वृन्दावन

✻

पं० हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास'

आगरा

✻

श्री गोपेशशरण 'आतुर'

भरतपुर

✻

श्री राधागोविन्द पाठक

बलदेव

✻

श्री भूपेन्द्र भरतपुरी

कामवन

डा॰ विष्णु विराट चतुर्वेदी

ब्रजभाषा के रससिद्ध कवि के रूप में जाने जाने वाले बड़ौदा निवासी डा॰ विष्णु विराट गुजरात जैसे हिन्दीतर भाषी प्रान्त में रहकर ब्रजभाषा की जो सेवा कर रहे हैं, वह निःसन्देह स्पृहणीय है।

आप कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, व्यंग्य लेखक, नाटककार, निबन्धकार, सम्पादक, पत्रकार, बाल साहित्यकार आदि अनेक रूपों में ख्याति प्राप्त साहित्य–सेवी हैं।

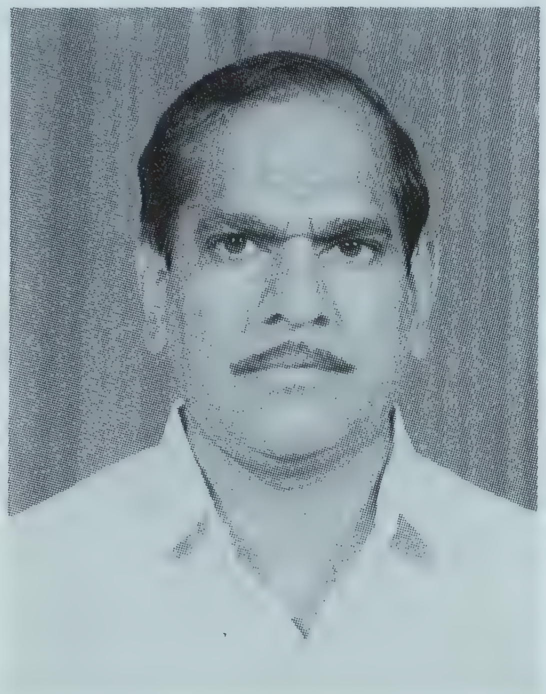
आपके द्वारा रचित लगभग १२ उपन्यास, काव्य–संग्रह एवं अन्य ग्रंथों के साथ ५0 बाल उपन्यास अब तक प्रकाशित एवं प्रशंसित हो चुके हैं। इतने ही प्रकाशनाधीन हैं। इनके अतिरिक्त आपकी शताधिक कहानियाँ और इतने ही लेख देश की विभिन्न हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

आशीर्वाद पुरस्कार, श्रीधर पाठक पुरस्कार, शिखर सम्मान, साहित्य वारिधि सम्मान एवं भारतेन्दु सम्मान से सम्मानित माननीय डा॰ विराट आज देश के सुविख्यात–सशक्त ब्रजभाषा हस्ताक्षर हैं।

डा॰ विष्णु विराट ने अष्टछाप कवियों के साहित्य पर नई दृष्टि से विचार किया है।अष्टछाप कवियों पर ऐसा अध्ययन नए सोच का ही परिणाम रहा है। अष्टछाप कवियों का अन्तरंग आत्म निवेदन, विनय के पद, लीलाभाव और समर्पण भाव आज भी प्रासंगिक हैं, इस तथ्य को उजागर करने के लिए डा॰ विष्णु विराट की लेखनी सतत सृजनरत है।

❑ **श्री पुरुषोत्तम पालीवाल**
साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा

सम्मानित साहित्यकार



डा॰ विष्णु विराट चतुर्वेदी

विविध विषय की सर्जना, विपुल काव्य के रूप।
ब्रजभाषा उन्नयन के साधक सिद्ध अनूप ।।
साधक सिद्ध अनूप, पुष्टिमत के व्याख्याता।
ब्रज गुजराती सुदृढ किया नितनित का नाता ।।
अष्टछाप का भाव समर्पण और विनय की।
कवि विराट ने करी सर्ज़ना विविध विषय की।।

★

ब्रजभाषा वैभव विशद, अजब अनौखे ठाट।
गुन गौरव गुजरात के, कविवर विष्णुविराट।।
कविवर विष्णुविराट, सही सर्जक रसखानी।
वल्लभमत परिपुष्ट वरद शारद कल्याणी ।।
नवयुग के आदर्श, आज की अभिनव आशा।
कविवर विष्णुविराट बने वैभव ब्रजभाषा ।।

❑ **श्री रामशरण पीतलिया**
"कदम्ब" साहित्य संस्थान, कामवन

डा॰ सुरेश पाण्डेय

ब्रज रज के पावन प्रसाद के कण–कण में रसस्त्रोत फूट पडते हैं। ब्रजराज भगवान श्री कृष्ण के कृपानुग्रह से हृदय में रस धाराओं का अज़स्र प्रवाह बहने लगता है। जिस व्यक्ति को इन दोनों की प्राप्ति के साथ माँ वाग्देवी की अनुकम्पा भी प्राप्त हो जाये उसका जीवन तो त्रिवेणी की पवित्रता से जगत मात्र को अवगाहन करा धन्य कर देता है। वृन्दावन निवासी डा॰ सुरेश पाण्डेय ऐसे ही भाग्यशाली व्यक्ति हैं जिन पर नन्दनन्दन कृष्ण, ब्रज रेणु तथा माँ वीणा पाणि ने अपनी कृपा से अमृतवर्षण किया है।

बहुभाषाविद्, लेखक, पत्रकार, ब्रजभाषा के लाडले प्रवक्ता, वार्ताकार डा॰ पाण्डेय ने स्नातकोत्तर उपाधि के अनन्तर महामहोपाध्याय पं॰ गोपीनाथ कविराज जैसे विश्र्व विश्रुत् आत्मजयी के दुर्लभ प्राप्त निर्देशन में 'प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति' विषय पर शोध रचना कर पी॰एच॰डी॰ की उपाधि ा अर्जित की। 'कौल–वाचस्पति', 'कौल–चक्रवर्ती', 'तन्त्र वागीश' जैसे अलंकरणों से विभूषित श्री पाण्डेय ने वाममार्गी एवं दक्षिण मार्गी साधना में भी अपनी क्षमता एवं बहुमुखी प्रतिभा का सशक्त प्रदर्शन किया है।

'हिन्दुस्थानी समाचार' एवं बाद में यू॰एन॰आई॰ जैसी सम्वाद समिति के सम्वाददाता रहते हुये आपने नेपाल, भूटान, सिक्किम, बांग्लादेश, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, पेरू, मेक्सिको, गुयाना आदि विभिन्न देशों में कार्य किया है। बिहार राज्य के संयुक्त सूचना निदेशक पद से सेवानिवृत श्री पाण्डेय ब्रजभाषा वार्ता में अधिक रूचि रखते हैं। मथुरा–वृन्दावन आकाशवाणी केन्द्रों से 'ब्रज माधुरी' कार्यक्रमान्तर्गत आपकी अनेक वार्ताएँ प्रसारित हो चुकी हैं। ब्रज और भारत की गौरवमयी संस्कृति एवं इतिहास विषय पर आपके लेख देश भर की अनेक पत्रिकाओं में सादर प्रकाशित हुये हैं। आपके 'नैवेद्य' नामक शोध–ग्रंथ को विद्वद्समाज में पर्याप्त आदर मिला है।

सम्प्रति आज भी ब्रजभाषा की पताका–वाहक के रूप में साधनारहित रह कर आप लेखन कार्य में सम्पूर्ण उत्साह से लगे हुये हैं।

❑ **श्री पुरुषोत्तम पालीवाल**
साहित्य–मण्डल, श्रीनाथद्वारा

सम्मानित साहित्यकार



डा॰ सुरेश पाण्डेय

वृन्दावन ब्रजधाम की, रज की पुण्य प्रताप।
श्री सुरेश पाण्डेय ब्रज, अजब अनोखी छाप।।
अजब अनोखी छाप, लाडले ब्रजभाषा के।
अर्पित कर नैवेद्य, गीत गाए आशा के।।
वाणी चढ़ि आकाश, गूंजती सद्‌विचार बन।
ब्रजभावन की रम्य माधुरी मन वृन्दावन।।

★

ब्रजभावन की पताका, उन्नत करी विदेश।
धनि सुरेश पाण्डेय हैं, धुन के धनी हमेश।।
धुन के धनी हमेश, बहुमुखी प्रतिभा बारे।
बने 'तंत्र बागीश', ग्रन्थ न्यारे रचि डारे।।
ब्रज बसुधा के पूत, सलौने साधक पावन।
गुंजा रहे भारत बसुन्धरा भरि ब्रजभावन।।

❑ रामशरण पीतलिया

"कदम्ब" साहित्य–संस्थान, कामवन

पं॰ हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास'

भरतपुर जिलान्तर्गत गुन्सारा ग्राम निवासी पं॰ मोहनलालजी शर्मा, जो परम वैष्णव तथा विद्वान–शास्त्रज्ञ होने के साथ सुकवि भी थे, के घर सन् १६३२ में जन्में पं॰ हरिप्रसाद शर्मा को धार्मिक संस्कारों के साथ साहित्यानुराग भी परिवार से विरासत में मिले हैं। भारतीय सैन्य सेवा में जुड़े विभाग में वरिष्ठ लेखा परीक्षक के रूप में दायित्व निर्वाह के साथ–साथ आप साहित्य –साधना से भी जुड़े रहे हैं।

आपकी प्रथम खण्ड काव्य कृति 'श्री गोपीजन वल्लभाय' का प्रकाशन बबीना(झाँसी) से हुआ। इसका वैष्णव सम्प्रदाय एवं विद्वद्समाज में पर्याप्त आदर हुआ। आपने पुष्टि सम्प्रदाय विषयक श्री मद्वल्लभाचार्य विरचित अनेक ग्रंथों की टीका, श्लोकार्थ, अनुवाद आदि कर उन्हें प्रकाशित करवाया जिनमें षोड्ष ग्रंथ के 'नवरत्न' गायत्री भाष्य का संस्कृत से अनुवाद, पांच ग्रंथ का प्रकाशन आदि प्रमुख हैं। यमुनाष्टक के 40 पदों का अर्थ कर उन्हें भी प्रकाशित कराया।

'अष्टछाप के संस्थापक गोस्वामी श्री विट्ठलनाथजी' नामक आपके ग्रंथ का भी वैष्णव समाज में पर्याप्त आदर हुआ है। इनके अतिरिक्त होरी खेल, प्राचीन धमार, भारतेन्दु, नागरीदासजी, ब्रज के रसिया, मानसी सेवा कौ प्रकार आपकी सद्य प्रकाशित कृतियाँ हैं।

अनेक मासिक पत्रिकाओं में भी आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं हैं। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर द्वारा आपकी पद रचनाओं का संकलन भी प्रकाशित किया गया है।

ब्रज साहित्य एवं सांस्कृतिक गोष्ठ, हाथरस, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर एवं छप्पन भोग समिति काँकरोली द्वारा सम्मानित तथा पंचम् पीठाधीश्वर द्वारा प्रदत्त 'शिष्य रत्न' उपाधि से अलंकृत श्री हरिप्रसाद जी शर्मा का सात्विक जीवन प्रेरक है।

❑ **श्री श्यामप्रकाश देवपुरा**
साहित्य–मण्डल, श्रीनाथद्वारा

सम्मानित साहित्यकार



पं॰ हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास'

गुनसारा के रसिक वर, हरिप्रसाद शुभ नाम।
गाए गीत सुहावने, लीला ललित ललाम।।
लीला ललित ललाम, श्याम छबि के आराधक।
बल्लभकुल में दीक्षित, शुद्धाद्वैती साधक।।
पुष्टिपंथ सद्‌ग्रन्थ साधि रचना संसारा।
धन्य भए हरिदास, धन्य प्यारा गुनसारा।।

★

बल्लभ पंचम पीठ के 'शिष्यरत्न' हरिदास।
गुनसारा गुन गहि चले, लह्यौ आगरा बास।।
लह्यौ आगरा बास, भक्ति रस जीवन धारौ।
बूढ़ि–बूढ़ि आकंठ, जतन करि सार निकारौ।।
लिखे ग्रन्थ अनमोल, भाव गूँजे अवनी नभ।
सांचे वैष्णव आप, रटत नित वल्लभ वल्लभ ।।

❑ **रामशरण पीतलिया**
कदम्ब साहित्य संस्थान, कामवन

श्री गोपेश शरण आतुर

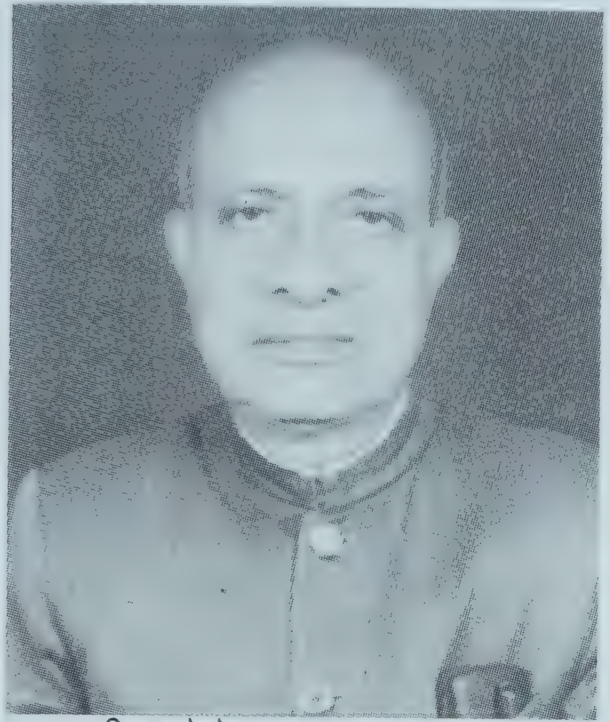
भरतपुर के जिला शिक्षा अधिकारी पद से सेवानिवृत श्री गोपेश शरण 'आतुर' ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली दोनों में रचना करने वाले सुविज्ञ–सुपरिचित साहित्यकार हैं जो विगत चार दशकों से भी अधिक समय से ब्रजभाषा सेवा में रत है।

अपने राज्य सेवा काल में राज्य स्तरीय सम्मान, १९८४ में प्रो॰ डी॰सी॰ शर्मा शिक्षक एवार्ड, ब्रजभाषा अकादमी द्वारा 'साहित्यकार सम्मान' राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा, चीनी आक्रमण के विरूद्ध लिखी काव्य रचना पर प्रथम पुरस्कार से समलंकृत, की अनेक रचनाएँ तथा काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें 'निर्मल मिलन', 'एक और एक ग्यारह', काव्य–कलानिधि, गल्प–गुच्छ, लोहागढ़ ललकार, प्रेरक आत्मकथाएँ, महाप्रभु श्री मद्वल्लभाचार्य प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त अनेक पत्र–पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं। विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से भी आपकी रचनाओं का निरन्तर प्रसारण होता रहता है।

श्री गोपेश शरण आतुर ने ब्रजभाषा और वल्लभ सम्प्रदाय की जो सेवा की है; उसकी साहित्य ज़गत में सर्वत्र सराहना हुई है। श्री आतुर द्वारा सम्पादित कीर्तन पुष्य वाटिका अपने ढंग का अनोखा ग्रन्थ है। इसके माध्यम से चयनित पदों का एक विशाल संग्रह तो वैष्णव जनों को उपलब्ध हुआ ही है, शुद्धाद्वैत देवालयों को रोज रोज के हवेली संगीत के निमित्त शुद्ध पाठ भी सुलभ हुआ है। श्री आतुर ने षोड्ष ग्रन्थों का अनुवाद करके वल्लभसम्प्रदायोक्त अवधारणा को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित कराया और श्री मद्वल्लभाचार्य के मन का विश्वजनीन व्यापक आधार उन्नत करने की दिशा में महत्वपूर्ण दृष्टि दी।

❑ **श्री श्यामप्रकाश देवपुरा**
साहित्य–मण्डल, श्रीनाथद्वारा

सम्मानित साहित्यकार



श्री गोपेशशरण आतुर

गुन गरबीले छबीले, रसिया रसिक रसेश।
अमित गुनन की खान है, ग्यानी गुरू गोपेश।।
ग्यानी गुरू गोपेश, गीत अगनित लिख डारे।
गोकुलेन्दु कौ ध्यान, अहर्निश सांझ सकारे।।
श्री कृष्णः शरणं मम जापत पल पल पुन पुन।
चुन चुन रचना सुमन समरपै ग्यानी गुन गुन ।।

★

काव्य कलानिधि, 'गल्पगुछ', 'लोहागढ—ललकार।
सर्जन कर 'निर्मल मिलन', भरि भाषा भण्डार।।
भरि भाषा भण्डार, भागवत भाव पुनीते।
संकीर्तन की पुष्प वाटिका जन मन जीते।।
ज्ञान भक्ति रस निर्झरिणी जहँ बहत विविध विधि।
ग्यानी गुरू गोपेश सजीले काव्य कलानिधि।।

❑ रामशरण पीतलिया
"कदम्ब" साहित्य –संस्थान, कामवन

श्री राधागोविन्द पाठक

ब्रजभाषा के मीठे गीतकार बलदेव 'मथुरा' निवासी कविवर राधागोविन्द पाठक का नाम आज ब्रजभाषा साहित्य का जाना–पहचाना नाम है। कवि सम्मेलन हो अथवा साहित्यिक आयोजन, सभी में सदैव आपको सादर आमन्त्रित किया जाना आपकी लोकप्रियता का पुख्ता प्रमाण है। देश के तीन चौथाई आकाशवाणी केन्द्रों से आपके मधुर गीत अनवरत प्रसारित होते रहते हैं। यही नहीं, मॉरीशस आकाशवाणी से भी आपके रिकार्ड किये गीतों का प्रसारण किया जाता रहा है।

विजय श्री प्रोडक्शन के झंडे तले निर्मित फिल्म 'रंगमहल' का मोहम्मद रफी की आवाज में आपका एक गीत 'कहुँ राधा, कहुँ कृष्ण' भी था किन्तु दुर्भाग्य से वह फिल्म राज्यादेश से 'सील' कर दी गई और वह मंच आपकी सेवा से वंचित रह गया।

आपकी शताधिक रचनाएँ देश की अनेक प्रतिष्ठित हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और आज भी होती रहती हैं किन्तु पुस्तकाकार रूप में अभी विपुल काव्य–कृतियाँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में ही हैं।

'ब्रज नन्दन' उपाधि, हरिश्चन्द्र पुरस्कार, कविरत्न रामलला पुरस्कार, सोम–सम्मान, श्याम–पुरस्कार आदि से सुसम्मानित श्री पाठक अनेक साहित्यिक संस्थाओं से भी निरन्तर जुडे रहे हैं। इनके मीठे ब्रजभाषा गीत आज भी देश के विभिन्न कवि सम्मेलनों के मंच पर गूँज कर श्रोतावृन्द को विभोर कर रहे हैं।

❑ **श्री पुरुषोत्तम पालीवाल**
साहित्य–मण्डल, श्रीनाथद्वारा

सम्मानित साहित्यकार



श्री राधागोविन्द पाठक

जय राधागोविन्द, जय तीर्थराज बल्देव।
साधक इक निस दिन निरत, ब्रजभाषा की सेव।।
ब्रजभाषा की सेव, गीत गूँजे घर द्वारे।
नभवाणी चढ़ि भारत भर में सांझ सकारे।।
पाठक श्रोता धन्य, सुनत मन हरस अगाधा।
कवि राधागोविन्द धन्य गाते जय राधा।।

★

सरस सजीले गीत धुन, ब्रज गौरव छबिमान।
कवि राधागोविन्द की, न्यारी है पहिचान।।
न्यारी है पहिचान, छन्द अनुपम रसभीने।
भाषा बिम्ब विधान, प्रतीकन भाव नवीने।।
गमक चमक सौं गीत, सुहावन सहज रसीले।
रसमय मधुरिम बोल, लुभावन सरस सजीले।।

❑ **रामशरण पीतलिया**
"कदम्ब" साहित्य संस्थान, कामवन

श्री भूपेन्द्र भरतपुरी

जिला भरतपुर (राजस्थान) के अन्तर्गत कामाँ (कामवन) कस्बे में श्री पूरनलाल वशिष्ठ के घर जन्में श्री भूपेन्द्र भरतपुरी की ब्रजभाषा, हिन्दी और उर्दू के छन्द सृजन पर अच्छी पकड़ है। पारिवारिक धार्मिक वातावरण से बाल्यावस्था में इनमें जिस अन्तश्चेतना का उदय हुआ वह उम्र पाकर कवि–कलिका के रूप में प्रस्फुटित हुई, जिसने अपने सौरभ से काव्य–जगत को सुरभित किया है।

बी॰ कॉम॰ तक शिक्षा प्राप्त कर आपने जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग में लिपिक पद पर कार्यारम्भ किया जहाँ अद्यावधि पर्यन्त कार्यरत हैं। इन्होंने १९८० में हिन्दी गीतकार के रूप में काव्य–सृजन साधना का श्रीगणेश किया। गजल, गीत, लावनी, पद एवं मुक्तकों से ब्रजभाषा एवं हिन्दी दोनों काव्य को समृद्ध किया। रेखाचित्र लिखकर गद्य रचना में भी अपनी सशक्त उपस्थिति अंकित कराई। सन् १९८७ में ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध आशुकवि श्री रामशरण पीतलिया के मार्ग निर्देशन तथा सहयोग से ब्रजभाषा में काव्य–रचना अधिक प्रभावी ढंग से करने लगें। दोहा, कुण्डलियाँ, कवित्त, सवैये, मुक्तक एवं गीत लिख कर ब्रजभाषा के वर्तमान साहित्य को अपने रचना–सुमन अर्पित किए।

इन्हें आकाशवाणी दिल्ली के ब्रजमाधुरी कार्यक्रम में अपने काव्य–कौशल को प्रदर्शित करने के सुअवसर भी प्राप्त हुये हैं। दूरदर्शन जयपुर एवं कदम्ब लोक मंच पर इन्हें गीत अभिनय तथा काव्य–सौष्ठव का अवसर भी मिल रहा हैं। देश के विभिन्न मंचों पर कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ कर श्रोताओं को इन्होंने मन्त्रमुग्ध किया है। ब्रजभाषा काव्य में आपने शृंगार, वीर, शान्त आदि रसों में अच्छी रचनाएँ की हैं। आपकी 'पूनम की रात' और 'एक पाती गाँधी के नाम' रचनाओं ने आपके नाम और मान को खूब बढ़ाया है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी और साहित्य–मण्डल, नाथद्वारा के कार्यक्रमों में भाग लेकर आपने ब्रजरस माधुरी को देश के कोन–कोने तक पहुँचाया है। दैनिक भास्कर, ब्रज शतदल, हरसिंगार आदि पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ समय–समय पर स्थान पाती रही हैं।

'साहित्यकार सम्मान' और 'साहित्य भूषण' से अलंकृत श्री भूपेन्द्र भरतपुरी से ब्रज साहित्य जगत को बहुत–बहुत आशाएँ हैं।

❑ **डा॰ रमेश चन्द्र मिश्र**
कामवन शोध संस्थान, पातालेश्वर, कामवन

सम्मानित साहित्यकार



श्री भूपेन्द्र भरतपुरी

रहैं कामवन धाम में, भरतपुरी कहलात।
काव्य साधना निरत नित, नूतन सृजन सुहात।।
नूतन सृजन सुहात धुरन्धर गीत लिखैया।
वीर ओज माधुर्य, रसन सौं सरसित छैया।।
छैला ललित ललाम, भावना भूषित कन कन।
ब्रज भावन कौ चतुर चितैरौ रहै कामवन।।

★

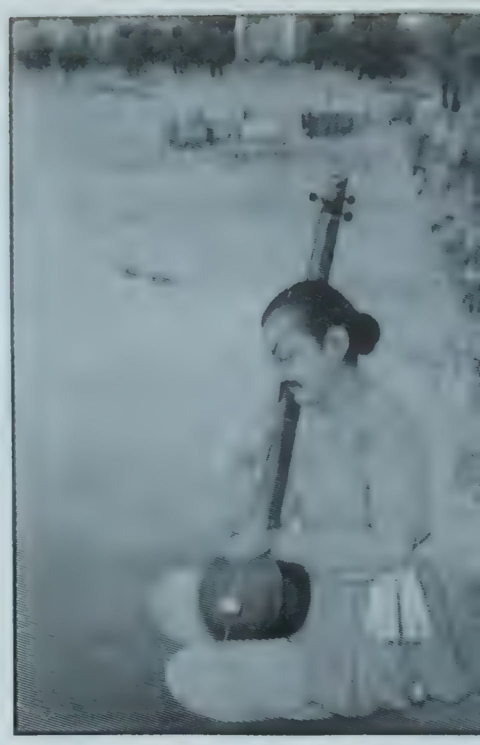
गो द्विज प्रज्ञा जनन की, मन सौं सेवा कीन।
गोकुलेन्दु मोहन मदन, सेवक परम प्रवीन।।
सेवक परम प्रवीन, काव्य रस कौ फल पायौ।
भरतपुरी भूपेन्द्र, सृजन में बन्यौ सवायौ।।
जन मन मोहन चरित, नमित गुरू जन के चरनन।
शिष्ट मिष्ट सेवारत नित गो द्विज प्रज्ञाजन।।

❑ **रामशरण पीतलिया**
कदम्ब साहित्य–संस्थान, कामवन

ब्रज कोकिल

महाकवि नन्ददास उपनिषद्

आलेख
एवं
आलेख वाचक





आलेख : ब्रज कोकिल की कुहुकन
वाचक : डा० भगवतशरण चतुर्वेदी, जयपुर



आलेख : नन्ददास के जीवन में शृंगार भक्ति का समन्वय
वाचक : डा० रमेशचन्द्र मिश्र, कामवन



आलेख : नन्ददास की पुष्टिमार्ग में शरणागति
वाचक : श्री रामशरण पीतलिया, कामवन



आलेख : नन्ददास का काव्य-सौष्ठव
वाचक : डा० रामदास शर्मा, भरतपुर



आलेख : नन्ददास की गोपियाँ
वाचक : डा० श्रीमती सुषमा शर्मा, जयपुर

नंददास : काव्य-वर्णन

ब्रज-कोकिल की कुहुकन

डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी

मोहक, मंजुल, मधुरिम मन को मोद-मग्न कर,
नंददास नेहिल निष्ठा का नवयुग लाये;
विट्ठल प्रभु के वैभव की विरदावलि गाते –
गुण-गरिमा की गागर बन गोवर्धन आये।

राम, कृष्ण में वैसे तो है युग का अंतर,
त्रेता, द्वापर युग में ये अवतार हुए थे;
नंददास, तुलसी के भाई बन जब जन्मे –
द्वापर, त्रेता दोनों एकाकार हुए थे।

सोरों की शिक्षा ने सुर को सरगम सौंपी,
गुरु नृसिंह से नंददास ने नवस्वर पाया;
सम्मोहित जब किया रूप ने साधक-मन को –
स्वामी ने संकेतों से सेवक समझाया।

फिर जो स्नेह, समर्पण में साकार हुआ तो –
नंददास श्रीनाथ-द्वार चाकर बन आये;
देवोपम श्रृंगार निरखकर अपने प्रभु का –
नंददास ने रस के अमृतघट छलकाये।

नंददास की निष्ठा, निश्छलता निहारकर,
विट्ठल प्रभु ने अष्टछाप का मान दे दिया;
छैल छबीली छबि का छककर वर्णन करके –
नंददास ने ब्रजकोकिल का नाम ले लिया।

कवि गढ़ते हैं लेकिन नंददास जड़ते थे,
इसीलिए कवि गढ़िया, वे जड़िया कहलाये;
अनगढ़ भावों अनुभावों का परिष्कार कर –
शब्द-रत्न की आभा से प्रकाश उजलाये।

उनकी आँखों की झिलमिल में झलका करती,
तरनि-तनूजा तट पर ढलकन मोर मुकुट की;
मन-मंदिर में मोहन की मुसकान महकती -
और श्वाँस में बसती फरकन पियरे पट की।

रसिक शिरोमणि रास रचाते रमते उर में,
भ्रमरगीत में मधुऋतु का पराग मुसकाता;
खिलती रसमंजरी रूप रस के तरु पर जब -
धरा झूमती, अगन, पवन, जल, नभ मदमाता।

पंचाध्यायी लिखी रास पर रस-निमग्न हो,
लगा कि तब माधुर्य, प्रसाद देह धर आये;
लिखा भागवत महापुराण सलौनी ब्रज में -
ज्ञानी, ध्यानी, पंडित वे सारे अकुलाये।

कृष्णकथा कमनीय कोटि कंठों में गूँजी,
सहज, सरल, रससिक्त भागवत कथा पढ़ी जब;
क्षुधा हो गई खड़ी द्वार पर हर पंडित के -
कथावाचकों की पीड़ा की बेल बढ़ी तब।

पंडित-पीड़ा-प्रहर हरा तब विट्ठलप्रभु ने,
नंददास जा बैठे नैनों के शतदल में;
कर साष्टांग प्रणाम् निवेदित अपने गुरु को -
महाग्रंथ का किया विसर्जन यमुना जल में।

सर्ग और उत्सर्ग चक्षु थे नंददास के,
भक्ति साँस थी, धड़कन में गुरु गंध समाई;
रोम-रोम में रमे हुए श्रीनाथ स्वयं थे -
कविता हो साकार द्वार पर उनके आई।

देखे बस पचास ही सावन नंददास ने,
किन्तु पचासों शती न उनको भुला सकेंगी;
ब्रजकोकिल की कुहुकन की कमनीय गंध को -
ऋतुएं केवल रस-झूले में झुला सकेंगी।

26-ए, केशवनगर, सिविल लाइन्स, जयपु

नन्ददास के जीवन में श्रृंगार–भक्ति का समन्वय

डा. रमेशचन्द्र मिश्र

नन्ददास पुष्टि सम्प्रदाय प्रवर्तक गो. श्री विट्ठलनाथजी के कृपा पात्र अष्टछाप के रससिद्ध कवि रहे हैं। उनका समस्त काव्य भगवद्भक्ति से ओत–प्रोत है। ईश्वर के प्रति ऐकान्तिक अनुराग को 'भक्ति' कहा जाता है। महर्षि शाण्डिल्य ने भक्ति सूत्र में – 'सापरानुरक्तिरीश्वरे' (१/१/२) ईश्वर में परम अनुराग को भक्ति कहा है। नारद भक्ति सूत्र में– " सात्वास्मिन् परम प्रेम रूपा" – भगवान् में अनन्य प्रेम प्रवाह का नाम ही 'भक्ति बताया है। अपने आराध्य के प्रति अनुराग जब इस कोटि तक पहुँच जाए कि उसके बिना एक क्षण भी चैन न पड़े और चित्त की समस्त वृत्तियाँ पूर्णरूप से उसी अनुराग योग्य आराध्य में केन्द्रित हो जाएँ, तब यह समझना चाहिए कि आराध्य के प्रति अनुराग 'परम अनुराग' की कोटि में पहुँच गया। श्री नन्ददास के काव्य में गोपियों का श्री कृष्ण के प्रति अनुराग इसी कोटि में सम्पृक्त है। गोपियों ने अपना शरीर, इन्द्रियाँ, परिवार, समस्त भौतिक सम्पदा सभी कुछ श्री कृष्ण को समर्पित कर दिये। इस लिए उनका श्रृंगार–भाव श्री कृष्ण के अनुराग से अतिरंजित हो गया। गोपियों का सान्निध्य प्राप्त कर रसराज श्रृंगार धन्य हो गया और गोपियों के साथ अपने आपको श्री कृष्ण के चरणों में समर्पित करते हुए भक्ति तत्व को आत्मसात कर लिया।

गोपियों का प्रेम स्वभावतः काम–गंध शून्य है। वह तपाये हुए स्वर्ण के समान निर्मल, उज्ज्वल और शुद्ध है। समस्त गोपियाँ श्री कृष्ण की शिष्या, प्रिया, सखी, सहायिका और दासी हैं। ये श्री कृष्ण के मन की अभिलाषा, प्रेम सेवा की परिपाटी तथा इष्ट सेवा में लगे रहना अच्छी तरह जानती हैं। नन्ददास कृत रास पंचाध्यायी में राजा परीक्षित ने शुकदेव जी से प्रश्न किया–

अहो मुनी, क्यों गुणमय शरीर सों पाए हैं हरि।
जिनिभजे कमनीय कान्त नहिं ब्रह्मभाव भरि।।

हे मुनिराज, गोपियों ने इस त्रिगुणमय शरीर से श्रीकृष्ण को कैसे प्राप्त कर लिया, उन्होंने तो ब्रह्मभाव से श्रीकृष्ण की सेवा नहीं की थी। श्री शुकदेवजी ने इस प्रश्न का समाधान किया–

हरिरस ओपी गोपी सब तिरीयन तें न्यारी।
श्री कमल नयन गोविन्द चन्द की प्राण सुप्यारी।।

ये गोपियाँ प्राकृतिक स्त्रियों से पृथक् हैं। ये श्री कमलनयन भगवान् कृष्ण को प्राणों से भी अधिक प्यारी हैं। इन गोपियों के हृदय में यथार्थ प्रेम अंकुरित है अतः प्राकृतिक दुःख से इन्हें दुःख बोध नहीं होता। प्रेमांकुर के उदित होने से गोपियों में क्षान्ति, अव्यर्थ कालत्व, विरति, भावशून्यता, आशाबंध, सभुत्कण्ठा, नामस्मरण

रूचि, भगवद् गुणाख्यानासक्ति एवं लीला भूमि अनुराग – ये नौ लक्षण उदित दिखाई देते हैं। वे एक क्षण भी श्रीकृष्ण से विरहित नहीं रहना चहती हैं। श्रीकृष्ण के वंशीरव से आकृष्ठ होकर अर्द्धनिशा में वन प्रदेश में आई हुई गोपियों से श्री कृष्ण ने कहा– गोपियों, तुम अर्द्धनिशा में इस एकान्त वन प्रदेश में निर्भय होकर चली आई हो, यह नारीधर्म के विपरीत है अतः तुम अपने घरों को लौट जाओ। यह सुनकर गोपियाँ कहती हैं–

अधर सुधा के लोभ भई हम दासि तिहारी।
ज्यों लब्धी पद कमला नवला चंचल नारी।।
जो न देहो अधरामृत तौ सुनिहौ सुन्दर हरि।
करि हैं यह तन भस्म विरह पावक में जरि करि।।
पुनि प्रिय पदवी पाय बहुरि धरि हैं सुन्दर अँग।
निधरक ह्वै कें अधरामृत पीवत फिरि हैं सँग।।

हे स्वामी आपके अधरामृत का पान करने के निए हम आपकी दासी हुई हैं। हम आपके अधरामृत को यदि प्राप्त नहीं कर पाएंगी तो इस लौकिक शरीर को विरहाग्नि में जलाकर पुनः नवीन जीवन धारण कर आपके नित्य साहचर्य को प्राप्त करेंगी।

गोपियों की इस मधुरा रति में अनुराग की चरम परिणति विद्यमान है। अनुराग ही इस महाभाव का आश्रय है। इस महाभाव में श्रृंगार के सारे सात्विक भाव उद्दीप्त होते हैं। रासरस निमग्ना गोपियों में स्वर भंग, कम्प, रोमाञ्च, अश्रु, स्तम्भ, वैवर्ण्य, स्वेद मूर्छा ये आठों सात्विक भाव परिलक्षित होते हैं। साथ ही उनमें भक्तिभाव की चर्वणीयता के औत्सुक्य, गर्व, हर्ष,निर्वेद मति, द्युति इत्यादि भक्ति के स्थायीभाव तथा रोमाञ्च, विहलता, अश्रुपात आदि अनुभावों की प्रतीति होती है। नन्ददास इस माधुर्य को 'उज्ज्वल रस' के नाम से अभिहित करते हैं।

उज्ज्वल रस कौ यह स्वभाव बाँकी छवि पावै।
बंक कहनि अरू चहनि बंक अति रसहिं बढ़ावै।।
ये सब नवल किसोरी गोरी भरी प्रेम रस।
ताते समुझि न परी करी पिय प्रेम विवस अस।।

'उज्ज्वल' शब्द श्रृंगार या माधुर्य का वाचक शब्द है। नाट्यशास्त्र में श्रृंगार रस का वर्णश्याम और वेष उज्ज्वल बताया गया है– 'तत्र श्रृंगार नाम रति स्थायिभाव प्रभाव उज्ज्वल वेषात्मकः '(ना.शा.६/४५–४६) इनमें रति स्थायीभाव से श्रृंगार बनता है, उसका वेष उज्ज्वल है। श्याम और उज्ज्वल दोनों परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। लेकिन विश्लेषण करने पर इस भ्रम का निवारण हो जाता है। श्रृंगार के देवता विष्णु का श्याम वर्ण

है पर उनका वेष 'पीताभ कान्तिमान् तथा उज्ज्वल है। नन्ददास ने इसकी पुष्टि में लिखा है–

विहरत विपिन विहार उदार रसिक नँद नंदन।
नव कुंकुम धनसार चारू चरचित तन चंदन।।
अद्‌भुत सांमल रूप अंग बन्यौं पीत वसन तनु।
मूर्त धरे श्रृंगार प्रेम अम्बरू ओढे जनु।।

उज्ज्वल नीलमणिकार श्रीरूप गोस्वामी ने उज्ज्वल रस का प्रयोग 'रागानुगा मधुर भक्ति' के लिए किया है जिसमें समस्त श्रृंगार रस का पूर्णतः अन्तर्भाव हो जाता है। नन्ददास की गोपियाँ 'कृष्ण–कृष्ण' रटतीं रटतीं कृष्ण प्रेम में कृष्णमय हो जाती हैं।

मोहनलाल रसाल की लीला इनहिं सोहे।
केवल तन्मय भईं कछु न जानत हम को हैं।।
भृंगी भजे ते भृंगी होत इक कीट महा जड़।
कृष्ण प्रेम तें कृष्ण होंय, कछु नहिं अचरज बड़।।

महारास के मध्य से श्रीकृष्ण का अन्तर्धान होना, विरह दशा की चरम परिणति भी उसी महाभाव माधुर्य की रागानुगा भक्ति का उत्कृष्ट स्वरूप है।

नयननि तें जलधार हार धोवत धर धावत।
भ्रमर उडाय न सकति बास वस मुख ढ़िंग आवत।।
'क्वासि-क्वासि' प्रिय महाबाहु यो बदति अकेली।
महा विरह की ध्वनी सुनि रोवत खग द्रुम बेली।।

गोपियों की विरह ध्वनि के स्वर में खगद्रुम वेलियों ने भी रूदन करते हुए उस महाभाव का विराट स्वरूप प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार कविवर नन्ददास का श्रृंगार मात्र काव्य का रसराज न होकर भक्ति के माधुर्यरस का रूप रहा है जिसका विराट रूप श्रृंगार और भक्ति के समन्वय रूप से बोधगम्य है। यद्यपि भाव समुद्र अपार अगाध और अनन्त है, इसका वर्णन कर पाना सर्वथा असम्भव है। मैंने इस लघु आलेख में एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। आशा है रसिक जनों को स्वीकार्य होगा।

- काम्यवन शोध संस्थान,
पातालेश्वर, कामाँ (भरतपुर)

नन्ददास की पुष्टिमार्ग में शरणागति

✍ रामशरण पीतलिया

अन्तस अनुराग अथाह उल्लसित उर भारो।
वह पथिक अपरिमित चाह लिए बढ चला राह।।
आस्था अथोर आह्लाद मनस्वी अवतारी।
था दिव्य द्वारिका धाम दरस भारी उछाह।।

कब काशी छोडी कुरूक्षेत्र भी किया पार।
मन अटका भटका देह मोह में भरमाया।।
सीहनँद की सौम्य सलोनी सूरत सी सुनारि।
खत्री पत्नी के प्रेम पाश अटका पाया।।

यह नन्ददास थे जिनके अग्रज थे तुलसी।
रणछोड़ मिलन की साध छोड चित डोल गया।।
भिक्षाटन मिस निशि दिवस नजरिया आकुलसी।
उलझी चकराई टकराई हिय खोल गया।।

चर्चित चंचल चित की चरचा चहुँ ओर चली।
खत्री दम्पति हो दुखी देख लोकापवाद।।
सोची जगनिन्दा से बचने की राह भली।
गोकुल प्रभु दर्शन चलैं मिटे मन का विषाद।।

यह नन्ददास थे आस प्रेम नहिं बिसराई।
अनुगामी बन चल दिए निकट गोकुल द्वारे।।
अटके कालिन्दी तट केवट की निठुराई।
गाये प्रशस्ति पद तरनि तनूजा के प्यारे।।

साधक आराधक भाव अलौकिक पहिचाने।
वह बिट्ठल प्रभु थे अग जग के अन्तर्यामी।।
भक्तों के चित हित नित बुनते ताने बाने।
बे सतता लोक कल्याण हेतु जग के स्वामी।।

गुन गरबीली थी ज्ञान साधना हितकारी।
गोस्वामी प्रभु ने कहा अरे यह उचित नहीं।।
जमुना तट के उस पार विप्र व्याकुल भसरी।
तुम तुरंत बुलाओ उन्हें सिखावन सत्य सही।।

था चमत्कार हो गया नहीं देखा भाला।
यह देवालय है यहाँ दूर जमुना धारा।।
है दिव्यदृष्टि प्रभु बिट्ठल विस्मित कर डाला।
इनका है आश्रय सही जानता जग सारा।।

स्वागत शरणागत किया धुले कल्मष सारे।
बिट्ठल प्रभु का आशीष सम्पदा जीवन की।।
बरदायी नेही वचन सुने प्यारे प्यारे।
पुलकित मन पावन पवन पाय नन्दनवन की।।

पंकज ने त्यागी पंक बिखेरा मधुर भाव।
अर्पित देवार्चन हेतु सुप्त सौभाग्य जगा।।
नव भोर हुआ, विकसा कलियों का नया चाव।
बडभागी सन्त बिलोकत वैभव ठगा ठगा।।

था पारस परस सुहावन मन भावन नीका।
वह धन्य धड़ी उद्घोष बनी नव दृष्टि मिली।।
संकीर्तन सुषमा सौम्य श्रेष्ठ जन मन टीका।
कंचन कुन्दन सी काम्य रम्य वर वृष्टि मिली।।

सुर सरिता सी बह चली सृजन की रसवन्ती।
विद्या विनोद श्रृंगार सार के अमर छन्द।।
लीला ललाम के लास्म हास्य की लजवन्ती।
सरपट सपाट अति वेगवान बहु विध अमन्द।।

पा नन्ददास की कला बढ़ा कविता दुलार।
मंजरियों में रस नीति रीति के भाव जगे।।
वल्लभ दर्शन के गूदतत्व सिद्धान्त सार।
विद्वन्मण्डल चिन्तनधारा हित प्रीत पगे।।

भाषा ने भूषण, भूषण पाये दिव्य भाव।
भावों ने रस, रस ने मृदुता, मृदुता शुचिता।।
शुचिता आलम्बन, आलम्बन ने मधुर भाव।
मधुभावों ने पाई थी एकनिष्ठ ऋजुता।।

थे नन्ददास बन गए आस अनुशीलन की।
वल्लभ दर्शन के दीप्त चितेरे धन्य हुए।।
मीमांसामर्म महान मंथ उन्मीलन की।
आशा के अनुदूत अनजान अनन्य हुए।।

अध्याय पाँच रचि रास लास्य के ललित छन्द।
रचि भँवरगीत उद्धव मन की शंका मेटी।।
श्रृंगार सजीला हुआ उल्लसित बन्द-बन्द।
लौकिक लीला निस्सीम बनी गिरिधर भेंटी।।

मन मैल मिटा संसार सार पहिचान जान।
साहूकारिन ने नेही साहूकार किया।।
परिवर्तित मन के हाव-भाव उन्नत महान।
कामिनी केलि तजि आश्रय जगदाधार लिया।।

वह प्रेम-प्रीति की डोर अमरता छबि छाई।
वह प्रेम-प्रीति की डोर जगत्पति ओर लगी।।
वह प्रेम-प्रीति की डोर अपरिचित मन भाई।
वह प्रेम-प्रीति की डोर अहर्निश दौढ़ भगी।।

वह साँची डोर निहार हुआ जीवन निहाल।
आदेश गुसाईं बिट्ठल का चित धार लिया।।
लौकिक जीवन में परिवर्तन था बेमिसाल।
मंदलाल नेह का नन्ददास पय पान किया।

सोन्दर्य प्रेम रस भाव भली अब राह मिली।
मिल गया अभीप्सित तत्व रम्य रमणीक रास।।
विकसी छवि मन अभिराम सुमन की कली खिली।
अखिलेश्वर की लीला निहारते नन्ददास।।

वह लीला शिवम् सुन्दरम् का सौन्दर्य शास्त्र।
वह लीला विरह मिलन उत्कण्ठा जन्य राग।।
वह लीला प्रेम पुलक पूरित अनुराग पात्र।
वह लीला लीलाधर ललाम का ललित फाग।।

लीला लिख लिख होते निहाल थे नन्ददास।
अनुराग मंजरी लोकनीति रस प्रेम युक्त।।
उत्तम कविता के अनुष्ठान प्रिय अनुप्रास।
नवकविता सरिता बही भव्यतायुत विमुक्त।।

तुलसी ब्रज आए अनुज मिलन की चाह लिए।
जड़ जंगम राधेश्याम इतनि लखि बिरमाए।।
इक राम रहित रस रूप राग रँग क्या करिए।
ब्रज के करील अरू ढ़ाक पात नहिं मन भाए।।

तुलसी मन शंका भाँप गए थे नन्ददास।
इनके मन क्यों द्विविधा का व्यर्थ वितान तने।।
नतमस्तक हो कीन्ही प्रभु से अरदास खास।
पन पार दिया श्रीनाथ आज रघुनाथ बने।।

तुलसी ने देखा धनुषबाणयुत रघुवर को।
मुरलीधर की छबि देख रहे थे नन्ददास।।
दो सन्त हृदय कर रहे नमन निज प्रभुवर को।
दो भक्त आज आह्लादित थे पावन प्रकाश।।

दर्शन कर प्रभु के पुलकित तुलसीदास हुए।
झुक गया माथ रघुनाथ रूप श्रीनाथ खड़े।
भावना लोक परिपूरित सब विश्वास हुए।।
तरसे जिस छबि को ज्ञानी ध्यानी बड़े बड़े।।

पारस का परस पवित्र पाय मन कुन्दन बन।
चमका चहुँ ओर चली चर्चा बन चमत्कार।।
ब्रजबीथिन गीतावली कृष्ण को कर अर्पण।
शाश्वत सुषमा सौन्दर्य काव्य का सुधाधार।।

तुलसी हुलसे ब्रजबास हुआ सार्थक आना।
मर्यादा का पावन वितान परिपुष्ट हुआ।।
यह मिलन भावनालोक भव्यता का माना।
संतो का संगम लखि जन जन संतुष्ट हुआ।।

यह नन्ददास की पुष्टिमार्ग में शरणागति।
बिट्ठलप्रभु की आशीष अहर्निश वरदायी।।
वल्लभ दर्शन को काव्यकलेवर जन चित हित।
यह पुष्टिमार्ग परिपुष्ट हुआ था सुखदायी।।

लिख 'स्याम–सगाई' भक्ति भाव का चाव भरा।
'गोवर्धन लीला गरिमापूरित अनुष्ठान।।
वह'चरित सुदामा' मित्र भाव का चित्र खरा।
'रस'–'रूप' मंजरी सुन्दरता की अमर खान।।

लिख "विरह मंजरी", "मान मंजरी" की गाथा।
फिर अन्य अनेकों अर्थो का लिख अमरकोश।।
लीला प्रसंग के अभिनय लखि झुकता माथा।
कृष्णार्पण करते सृजन जगाते अमित जोश।।

ये भक्ति और श्रृंगार काव्य संयोजक थे।
नंददास सन्त ने रीतिनीति आधार दिया।।
संकीर्तन गायक परम सयाने वादक थे।
पुनि पृष्टिभाव संपुष्टि हेतु आकार दिया।।

- प्रान्तीय अध्यक्ष, कदम्ब, कामवन

नन्ददास का काव्य सौष्ठव

✍ डा. रामदास शर्मा

हिन्दी साहित्य जगत में अष्टछाप के कवियों ने जो स्वर–साधना की उसकी मधुर गूँज वर्तमान में भी उनका सहज एवं सुखद स्मरण करा रही है। माँ सरस्वती के इन सुधी साधकों में प्रज्ञाचक्षु वात्सल्य सम्राट सूर का स्वर भले ही उच्च रहा हो लेकिन काव्य सौष्ठव की दृष्टि से नन्ददास ने जो कीर्तिमान स्थापित किया है उसका स्पर्श करने में अन्य असमर्थ रहे। कदाचित इसीलिए"और कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया" जैसी उक्तियाँ उनके विषय में प्रचलित हुईं।

इनके श्रेष्ठ काव्यत्व के सन्दर्भ में नाभादास कृत 'भक्तमाल' में जो छप्पय दिया गया है उसकी प्रारंभिक दो पंक्तियाँ यहाँ उद्घृत करना प्रासंगिक होगा –

लीलापद रस रीतिग्रन्थ रचना में नागर।
सरस उक्ति जुक्ति भक्ति रस गान उजागर।

इन पक्तियों में कवि का काव्य कौशल सुन्दर ढंग से विश्लेषित हुआ है

उनके द्वारा प्रणीत साहित्य दो प्रकार का है भागवत लीला पद एवं रस रीति ग्रंथ

– उनका काव्य सरस उक्तियों से युक्त है।
– पद रचना युक्तिपूर्वक हुई है।
– काव्य का आधार भक्ति रस रहा है।
– सम्पूर्ण काव्य गीति माधुर्य से ओत–प्रोत है।

नन्ददास के काव्य सौष्ठव से परिचय प्राप्त करने के लिए उक्त विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में अग्रांकित बिन्दु सुनिश्चित किए जा सकते हैं –

काव्य रूप, रस और भाव योजना, चित्र योजना, भाषा शैली और छन्द विधान।

उनकी रचनाओं के काव्य रूपों पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वह दो प्रकार का है – प्रबन्ध और मुक्तक। उनकी पदावली मुक्तक काव्य के अर्न्तगत आती है तो रसमंजरी, मानमंजरी, अनेकार्थ मंजरी, नामामाला, भाषादशम स्कन्ध, गोवर्द्धन लीला, श्याम सगाई, रासपंचाध्यायी, विरह मंजरी, रूप मंजरी, भँवरगीत, रुक्मिणी मंगल, सुदामा चरित्र, श्रीकृष्ण सिद्धांत पंचाध्यायी आदि रचनाएँ प्रबन्ध काव्य के रूप में रखी जा सकती हैं।

इन रचनाओं के अनुशीलन के आधार पर नन्ददास के विज्ञ समीक्षकों ने उन्हें जड़िया कहकर उनके कला पक्ष को ही अधिक उभारा है जबकि उनकाभाव पक्ष भी उतना ही उच्चस्तरीय है जितना कला पक्ष। ध्रुवदासजी ने

अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भक्त नामावली' में उनके भाव पक्ष की भूरि–भूरि प्रशंसा की है –

नन्ददास जो कछु कह्यौ राग रंग सों पागि। अच्छर सरस सनेहमय सुनत श्रवण उठ जागि।।
रमन दसा अद्भुत हुती करत कवित्त सुढार। बात प्रेम की सुनत ही छुटत नैन जलधार।।
बाबरो सौ रस में फिरै खोजत नेह की बात। आछे रस के वचन सुनि बेगि बिबस है जात।।

इन पंक्तियों से ध्वनित होता है कि नन्ददास के काव्य में श्रृंगार की प्रधानता है। उन्होंने एक ओर रीति शास परक ग्रंथो का प्रणयन किया तो दूसरी ओर सरस काव्य के रूप में श्रृंगार काव्य का। उन्होंने जितना श्रृंगार के संयो पक्ष को उजागर किया है उतना ही वियोग पक्ष को भी। उनके काव्य में वियोग की सभी दशाओं का सुन्दर चित्र हुआ है। यहाँ यह स्पष्ट करना भी समीचीन होगा कि नन्ददास एक भक्त कवि हैं। उनका श्रृंगार वर्णन भक्ति अ धारित है। श्रृगार उनके काव्य में अंग बनकर आया है। अंगीरस तो भक्ति ही है। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, भवि में डूब कर लिखा है। रस निमग्नता की स्थिति में कवि नेत्रों से अश्रु प्रवाह करता हुआ विह्वल हो जाता है। र निमग्नता ने उनके काव्य में अनुभूति तत्व की तीव्रता और मार्मिकता का समावेश कर दिया हैं।

अनुभूति तत्व की तीव्रता से काव्य में चित्रात्मकता का संवर्धन हुआ है। उनकी लेखनी से उभरे हुए चित्र ती प्रकार के हैं – समूह चित्र, युगल चित्र और व्यक्ति चित्र। उनके द्वारा उभारे गए चित्र स्थूल और चाक्षुस नहीं हैं अपि उनमें शब्द, स्पर्श, रस और गंध का सुन्दर समावेश है। व्यक्ति चित्र का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

'गोकुल की पनिहारी, पनिया भरन चली, बड़े बड़े नैन तामें खुभि रह्यौ कजरा।
पहिरे कुसुंभी सारी, अंग अंग छवि न्यारी, गोरी गोरी बाँहन में मोतिन के गजरा।।
सखि संग लिए जात, हँसि हँसि करत बात, तनहू की सुधि भूलि सीस धरे गगरा।
नंददास बलिहारी, बीच मिले गिरधारी, नैननि की सैननि में भूलि गई डगरा।।

नंददास के ज़ड़िया कहने में उनकी सक्षम भाषा शैली है जिसमें उपयुक्त शब्दों का समुचित प्रयोग, श शक्तियों तथा लोकाक्तियों मुहावरों की स्वाभाविकता, रीतिवृत्ति और गुणों के अनुरूप शब्द चयन आदि प्रमुख हैं। भा प्रयोग की दृष्टि से वे सिद्धहस्त हैं। भावानुरूप सीमित शब्द योजना, नाद सौन्दर्य, सानुप्रासिकता तथा ध्वनि माधु ने उनके काव्य को आनन्दकारी और हृदयग्राही बना दिया है।

उनके काव्य में अलंकारो का प्रयोग सहज व स्वाभाविक रूप से हुआ है, प्रयत्नसाध्य नहीं। यों तो उन्हों अनेक अंलकारों को अपने काव्य में सजाया है किन्तु उपमा और उत्प्रेक्षा उन्हें अधिक प्रिय हैं। उत्प्रेक्षाओं के प्रयो के सम्बन्ध में डा॰दीनदयालुगुप्त ने लिखा है–"नन्ददास की उत्प्रेक्षाओं की कल्पना बड़ी मार्मिक और प्रभावशालि होती हैं, उनमें मौलिकता भी रहती है, बेसिर–पैर की उड़ान और शब्दों की कलाबाजी नहीं है।"

जहाँ तक प्रश्न उनके काव्य में गृहीत छंदविधान का है, उन्हांने पदों के अतिरिक्त दोहा, चौपाई और रो छन्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया है। इनमें व्याप्त गेयता और संगीतात्मकता भावों के अनुरूप है, उनमें नाद अ लय का अपूर्व समन्वय है। रोला उनका प्रमुख छन्द है। 'भँवरगीत और श्याम सगाई में उन्होंने रोला और दोहा मेल से एक नूतन छन्द आविष्कृत किया है जिसके अन्त में दस मात्राओं की एक टेक दे दी गई है।

प्रस्तुत संक्षिप्त काव्य सौष्ठव दर्शन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नन्ददास का काव्य भाव पक्ष और कला प दोनों ही दृष्टियों से श्रेष्ठ है। वह हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।

- सहा. निदेशक
अनौपचारिक शिक्षा, भरतपुर

नंददास की गोपियाँ

✍ डा. सुषमा शर्मा

मनोविज्ञान में प्रचलित अंग्रेजी शब्द ष्थ्ममसपदहष है जिसका तात्पर्य अनुभूति है। इसी अनुभूति में सुख–दुख का चक्र चलता है। इस अनुभूति को मानसिक प्रक्रिया कहना चाहिए क्योंकि इसमें भावात्मक प्रक्रिया का संचार होता है। अनुभव की चेतनावस्था में संवेदनं है, नैतिक गुण है, विवेक है और सौंदर्य है जो आत्मनिष्ठ हैं। मन ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक होता है। "नवधा भक्ति" इसी परिधि का एक मुख्य अंग है। इसी मनोविज्ञान के आधार पर कवि नंददास ने अपने साहित्य में गोपियों का चित्रण किया है। अष्टछाप के कवि नंददास के विषय में कहा गया है – "और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया"। नंददास की कृतियों में गोपियों का जहाँ–जहाँ चित्रण हुआ है वहाँ उनकी अनुभूति की रमणीयता और आनंद की अभिव्यक्ति का मणिकांचन योग मिलता है। यही कवि नंददास के साहित्य की विशेषता है।

सभ्यता और संस्कृति एक ही वस्तु के दो पहलू हैं। सभ्यता से भावार्थ है– कैसे बोलते हैं, कैसे उठते हैं, कैसे बैठते हैं, कैसा आचरण होता है आदि . . . ! संस्कृति में किसी विशिष्ट समाज के सामाजिक दायरे का ज्ञान होता है। इस प्रकार सभ्यता संस्कृति के आभूषण हैं– उसकी शोभा दिखती है। नंददास की गोपियों ने इन दोनों विषयों को अक्षुण्ण रखा है। हर प्रसंग में वे मर्यादित हैं जहाँ जहाँ तर्कशीलता का प्रश्न उठता है वहाँ वे बुद्धि विवेक के साथ वार्तालाप करती हैं, उनका वार्तालाप तर्क संगत है, मर्यादापूर्ण है। प्रेमभक्ति के निरूपण से अपनापन है। नंददास ने लय, माधुर्य भाव लाकर लोकमानस को सफल सरल अभिव्यक्ति दी है जो लोकमुख की मधुर वाणी है, उनमें लोच है, जीवंतता है और भावनाओं का आवेग है, जनवादी जीवनव्यापी दृष्टि है। प्रेम की आत्मा का निवास ब्रज में है, चाहे ब्रजभूमि इसी कारण धन्य है। जहाँ कहा गया है "तीन लोक से मथुरा न्यारी", ब्रज की रज की महत्ता भी बढ़ी है। नंददास जितना आत्मविभोर है उतना ही प्रौढ़ मस्तिष्क है। एक विरही गोपी की व्यथा का चित्रण देखिए जिसमें खीझ है, अधिकार पाने का संघर्ष है, तर्क से अपनी बात कहने की क्षमता है–

'नास्तिक हैं जे लोग कहा जानै निज रूपै,
प्रगट भानु को छांड़ि, गहत परछांई पूछैं"

इस प्रकार स्त्री स्वभाव की सुलभता नंददास ने अपनी गोपियों में चित्रित की है। कुब्जा के प्रसंग को लेकर सौतिया डाह जैसी ईर्ष्या को प्रगट किया है, जो स्वाभाविक है क्योंकि एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती।

"गोपी" शब्द उन ब्रजांगनाओं के लिए प्रयुक्त है – जो ग्रामीण स्वभाव की हैं। सरल, भोलीभाली, चंचल भावना की दृष्टि से सब समान हैं जो कृष्ण के प्रति प्रेम रखती हैं। अवस्था की दृष्टि से अवश्य भेद कर सक हैं पर ग्रामीण स्वभाव चंचलता का पर्याय है। जहाँ वियोग चित्रण है वहाँ गोपियों की अंतर्दशाओं का चित्र है। यह विरहावस्था स्वभाविकता और सजीवता दर्शाती है। वे प्रेम के हरे भरे संसार को त्याग कर योग पीछे दौड़ना नहीं चाहतीं न उन्हें गवारा है। इसी प्रकार वे उद्धव पर व्यंग्यबाण से अपने कथन की पुष्टि करत हैं। नंददास गोपियों के मुखार्विन्द से निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना का खंडन करते हैं और सगुण साक कृष्ण की भक्ति को,-प्रेम के मार्ग से साकार करते हैं। "गोपी उद्धव संवाद" का प्रसंग ही नंददास की विच वृत्ति का पर्याय है। नंददास ने भागवत के "भ्रमरगीत" के प्रसंग के आधार पर अपने प्रसंग को कथात्मक का बनाया है माधुर्य गुण के साथ तार्किकता की बहुलता के साथ। उनके दार्शनिक सिद्धातों का प्रतिपाद काव्यात्मक ढंग से हुआ जो गोपियों के उद्‌गारों में समाहित है। कवि नंददास ने गोपियों के तर्क वितर्क महत्ता दी है और सगुण की निर्गुण पर विजय स्थापित कर प्रेम की धारा प्रवाहित की है। वे हृदय से अधि मस्तिस्क को बल देते हैं। नंददास की भाषा में शब्दजड़ने का गुण है जो धारा प्रवाह है, कोमलकांत पदाव के साथ माधुर्य गुण है। ब्रजभाषा के ठेठ शब्दों में लोकोक्तियाँ/मुहावरे हैं जो जन जन को मोहित करते गोपिकाओं की भावुकता अधिक प्रेम व्यंजना है। जब उद्धव उन्हें कहते हैं कि थोड़े ही दिनों में कृष्ण आक मिलेंगे साथ ही योग का उपदेश देते हैं। गोपियों का योग से क्या वास्ता, वे प्रत्युत्तर में कहती हैं–

"हमरै तौ यह रूप बिन और कछू न सुहाय"

श्रीकृष्ण का ध्यान आते ही और उद्धव के मुख से नाम सुनकर किस प्रकार वे आल्हादित होती हैं देखिए –

"सुनत स्याम कौ नाम ग्राम गृह की सूधि भूली।
भरि आनंद रस हृदय प्रेम बेली हिय पूरी"

नंददास की गोपियों की प्रेम व्यंजना में शब्द मूक हैं क्योंकि सारा सोच कृष्णमय है– उनका संसार कृष्णमय है। उद्धव गोपियों के संवाद के बीच एक भंवरा उड़ता हुआ मंडराता है गुंजन के साथ तो नंददा ने उस भ्रमर को उद्धव के मन का प्रतीक मान कर अपनी गोपियों द्वारा उपालम्भ दिलवाये हैं जिनकों सुनक उद्धव प्रेमभक्ति का मार्ग अपना लेते हैं –

"गोपी प्रेम प्रसाद सौं हौं ही सीख्यो आय
ऊधौ तै मधुकर भयौं, दुविधा ग्यान मिटाय

पार रस प्रेम कौ ।।

विरह की दसों दशाओं के अंतर्गत नंददास ने गोपियों के अनुभावों द्वारा उनकी मानसिक स्थिति का सजीव चित्रण किया है। वे सभी एक दूसरे के सामने कहती सुनती हैं और अपनी अनुभूतियों को व्यक्त कर मन का गुबार निकालतीं हैं। साथ ही अपने अपने मन को राहत पहुँचाती हैं। स्वयं नंददास ऐसे चित्रण में गोपियों के हृदय का चित्रण करते हुए कहते हैं "इहि विधि सुमरि . . . हा करूणामय नाथ हो केसव कृष्ण मुरारी"। कृष्ण की मुरली की तान नंददास की गोपियों की स्मृति व्यथा को बढ़ा देतीं है। उस विरहानुभूति का वर्णन सशक्त है जो एक प्रकार से साधारणीकरण का अंग बन जाता है। गोपिकाओं की पीड़ा हमारी पीड़ा बन जाती है। वहीं कवि की पीड़ा उन्हीं की वाणी में उद्वेलित होती है। इस प्रकार नंददास की गोपियों में उद्दाम वेग है, विरह के भावावेश में उपालंभ है, मुहावरे, लोकोक्तियों द्वारा मन की भंगस है निकलती है जैसे –

पारस परसै लोह तुरंत कंचन है जाहि
कहा हिय लोन लगावो
प्रेम पियूषै छाँड़ि कै कौन समेटे धूरि।

नंददास की गोपियाँ प्रेम स्वरूप भक्ति को कार्मयोग और ज्ञानयोग दोनों से श्रेष्ठ मानती हैं। भक्ति के दो पक्ष हैं– (१.) साध्य (२.) साधन – निश्च्छलमन से ईश्वर का श्रवंण करना साध्य है और आराधना करना साधन है शुद्धाचरण ही प्रेम का पर्याय है जिसे नंददास की गोपियों ने यत्र–तत्र प्रवाहित किया है। नंददास का रासपंचाध्यायी भावनाओं का सृजन है। जिसमें श्रृंगार पंचाध्यायी का प्रभाव रस है। जब नंददास पुष्टिमार्ग मे दीक्षित हुए तो उनके भक्ति का स्वरूप मधुर स्वरूप में होकर उनकी गोपियों में समा गया। गोकुल में रहनेवाली गोपियाँ मानों लक्ष्मी के दो रूप हैं एक राधा तो दूसरी लक्ष्मी। इसी प्रकार कृष्ण के भी द्विभुज एवं चतुर्भुज रूप हैं। द्विभुज कृष्ण गोलोक में निवास करते हैं वहाँ की गोपियाँ सखी बनकर रहती हैं जहाँ कृष्ण का प्रेम है वह गोलोक दिव्यलोक है वहीं गोपियाँ निवासकर प्रेम की धारा प्रवाहित कर भक्ति के मार्ग को सुदृढ़ करती हैं।

'प्रेममंजरी', डी-२०,
चोमू हाउस, सी स्कीम, जयपुर

समस्यापूर्ति

सुनौ ब्रजनागरी ✪ सखा सुन श्याम के

कोई खाय पछार, भई मन अनमनी।
रोवत छाती फार, विरह व्याकुल धनी।।
कोई अँसुवा ढारि, कहत कित श्याम है।
चौरे हम लुट गईं, विधाता बाम है।।
बिरह आग जरि रहीं, डस्यौ कै नागरी।
जब थोथौ उपदेश, सुनौ ब्रजनागरी।।

❍

कोई बूझत श्याम निठुर क्यौं है गए।
कोई बूझत हाय पराये घर गए ?
कोई बूझत नन्द जसोदा आन दै।
साँची साँची बता परख पहचान दै।।
आक ढाक कुम्हलात बिरह की आगरी।
जब थोथौ उपदेश सुनौ ब्रजनागरी।।

❍

ब्रज की दशा मलीन, छीन सुख लै गए।
दीन हीन करदीन, महा दुख दै गए।।
नन्द जसोदा गोप और गोपी सभी।
दीखत संज्ञासून श्याम बिछुरे जभी।।
सिरधुन धुन पछतात, भई मति बावरी।
जब थोथौ उपदेश, सुनौ ब्रज नागरी।।

❍

कोई बोलत बैन, बात अब को सुनै।
कोई डोलत गैल, परम कैं सिरधुनै।।
कोई झांकत दूर, लगाकैं टकटकी।
कोई है श्रम चूर, उसासत अकचकी।
भोर मुडेरी बैठ, उडावत कागरी।
जब थोथौ उपदेश, सुनौ ब्रजनागरी।।

सूघौ साँचौ रूप, मनोहर श्याम कौ।
बैठत बोलत हँसत, प्रान ब्रजधाम कौ।।
माखन चाखनहार, रूप साकार है।
गोचारण जिन कियौ, प्रेम आधार है।।
तुमरे निरगुन जोग, इतै ना काम के।
गोपी बोली बैन, सखा सुन श्याम के।।

❍

मोहन गुन की खान, अन्य गुनहीन हैं।
प्रेम अमिय पय-पान, तजैं मतिहीन हैं।।
भगत भजै साकार, सार की बात है।
निरगुन मतौ विचार, करत व्याघात है।।
को निरगुन के धाम, कौन से गाम के।
गोपी बोली बैन, सखा सुन श्याम के।।

❍

नन्द जसोदा पूत कान्ह ब्रजनाथ है।
ब्रज कौ एकहि नाथ गोरधन नाथ है।।
कुंज भई सब सून, दरस कौं तरसतीं।
बाढ्यौ है दुख दून, कि अँखियाँ बरसतीं।।
आय कुरेदे घाव, न बोल छदाम के।
गोपी बोली बैन, सखा सुन श्याम के।।

❍

कैसैं मानैं निरगुन हम घनश्याम कूं।
डोलत बोलत फिरत रूप अभिराम कूं।।
सब तत्वन कौ मूल एक गिरवरधरन।
सब सारन कौ सार सदा असरन सरन।।
बोलत छूँछे बोल कि बिना लगाम के।
गोपी बोली बैन सखा सुन श्याम के।।

✍ रामशरण पीतलिया, कामवन

आभारी जो पत्र आपने मोहि पठायौ।
पढ़कें सुख अनुभूत कर्यौ जियरा भर आयौ।
दई समस्या पूरि कें भेज रहयौ श्रीमान।
आलेखऊ अविलम्ब ही निहचै मिलिये जान।
कृपा श्रीनाथ की।
मृदुल समर्पित भाव की हम पर गहरी छाप।
आशा है सानन्द ही प्रियवर होंगे आप।

○

मन भावन ब्रज नन्दन ब्रज में मोहि पठायौ।
सखा सनेही श्याम सन्देसौ लैके आयौ।
कृष्ण वेग ब्रज आहंगे, मन में राखौ धीर।
गोपिन, गोप, गऊन की, दूर करिंगे पीर।
सुनो ब्रज नागरी।
जमुना होय सनाथ कूल कालिंदी गूँजें
कुंज करीलन बीच सुरीले पक्षी कूँजें
माखन चाखें घरन में, बाल रूप कूँ धार।
परै सुनाई बाँसुरी फिर कदंब की डार।।
सुनो ब्रज नागरी।
कहियो मधुप इतेक श्याम जो व्रज में आवें।
कालिंदी के कूल कदम्ब की डार न पावें।
कुंज करीलऊ नहिं मिलें, वा ब्रज के वन मांहि।
माखन पाओगे कहाँ, छाछ घरन में नांहि।
सखा सुन श्याम के।
हम तौ सोचें श्याम भले ही ब्रज नहिं आवें।
रहकें अपने धाम सबन कूं सुखी बनावें।
भारत रहे अखंड जल, पूरित स्वच्छ समीर।
ग्वाल गऊ गोपिन की दूर होयगी पीर।
सखा सुन श्याम के।

डा. रामदास शर्मा, भरतपुर

चैन नहीं दिन रैन बैन नहिं मुख सौं उचरै।
नैन सुधी सुख दैन सुरत नहिं हिय सौं उतरै।।
सूखे यमुना के पुलिन, सलिल रहित ब्रज धाम।
जरत हुतासन माँहि तन, जियत बिना घनश्याम।।
सखा सुन श्याम के।।
है सुराज सुख राज समझ ना हमकूँ आवै।
देत दुहाई खूब न कोऊ बात सुहावै।।
राम रहीमन ओट लै, लरत भिरत बिन काम।
अपनौ बिरद सँभार कैं, पत राखै घनश्याम।।
सखा सुन श्याम के।।
बिन दहेज कौ ब्याह सजन कूँ नैक न भावै।
लालच में मन फँस्यौ बात कैसै बन पावै।।
ललना चतुर सुलक्षनी, भई आज असहाय।
चेत करौ सोचौ कछू, कैसैं पार बसाय।।
सुनौ ब्रज नागरी।।
पीस-पीस गइ हार रात सिगरी अब बीती।
सोचहु सुरत सँभार गगरिया क्यौं है रीति।।
भव्य भावना सौं भरौ, है अपनौ इतिहास।
क्यौं बैठी मूरत बनी, तकत पराई आस।।
सुनौ ब्रज नागरी।।

विट्ठल पारिक, कामवन

आयौ लै संदेस, स्याम की दसा सुनाऊँ।
पठ्यो जो उपदेस, ताहि निज बानि बताऊँ।।
विरहिनि प्यारी गोपिका, गात रहे मुरझाइ।
सुखी रहौ ब्रज देस में, कहूँ आजु समुझाई।।
- सुनौ ब्रज नागरी

प्रेम रूप-रस रासि, सील, सुचि, सौम्य सुधासी।
गावो मंगल गीत, छाँड़ि मन बसी उदासी।।
जोग साधना रत रहौ, तजि कैं माया जाल।
ब्रह्म भजन तारन तरन, सिगरौ जग जंजाल।।
-सुनों ब्रज नागरी

वो चितवनि दृग कोर, कहाँ लुकानी रस भरी।
मंद मंद मुसकानि, कितै गई अधरा धरी।।
प्रीति नेहरस बाबरी, कितै बस्यो गोलोक।
दरस-परस की चाह सों, हिय में भीषन सोक।।
-सखा सुन स्याम के

जादू टोंना डारि, चले गये गिरिवरधरन।
हारि थकीं मग देखि, आवैं कब संकट हरन।।
चलैं साँस ज्यों धौंकनी, पल छिन बाढति पीर।
बिनु गुपाल कैसे जियें, कौन बधावे धीर।।
-सखा सुन स्याम के

प्रीति पुंज, रस कुंज, अरी ब्रज वनिता आवौ।
आयौं आसा धारि, हाल कछु नवल सुनावौ।।
खोर साँकरी जमुन तट, वो गिरिराज विसाल।
अति विह्वल है जाँइ री, सुमिरि सुमिरि नँदलाल।।
-सुनों ब्रज नागरी

निरगुण रूप अनूप, ईस कौ नाम जपौ री।
कहा करै साकार, ताहि कौ ध्यान तजौ री।।
जतन करौ निज मुकति कौ, जे प्रवीन कौ काम।
छौडि विरह मन सों जपौ, करम जोग निसकाम।।
-सुनो ब्रज नागरी

भाजि निठल्ले मधुप, कमाई करनी घरकी।
नहिं भावै उपदेस, हमें चिन्ता गोबर की।।
गागरि लै पनघट चलूँ, चों तू पीवै प्रान।
करूँ बुहारी पौरि की, है जा अंतर ध्यान।।
-सखा सुन स्याम के

विरथा बक बक करै, राग निज ढपली गावै।
गाइ खिरक कौ काज, और कछु नाँइ सुहावै।।
चिकनी चुपरी बात करि, दीनों समै बिगारि।
तू चलि जा उत ओर कूँ, जित मस्तानी नारि।।
-सखा सुन स्याम के

ऊधौ अति अकुलाइ, गैल पै बढे अगारी।
है रह्यौ डिस्को डान्स, झूमते नर औ नारी।।
काजर बैंदी रूप लखि, आँखि गई चौंधाइ।
कान्ह तिहारी सुधि करैं, कहि कहि रहे बुलाइ।।
-सुनो ब्रज नागरी

पौडर लाली पुते, मुखनि सों सीटी बाजै।
जूडे सोहत सीस, काम हू छवि पै लाजै।।
अजब रूप फैशन सखी, जे कल जुग कौ हाल।
ध्यान, धारना जोग सों, तुम है जाउ निहाल।।
-सुनो ब्रज नागरी

नीकौ लगै न जोग, प्रीति रस हम मस्तानी।
अधर मनोहर बैंन, सुरतिया लगै सुहानी।।
श्बाँस-श्बाँस नँदनंदना, देव बखानै रूप।
उन प्रियतम कूँ छौडि कैं, गिरैं न खाई-कूप।।
-सखा सुन स्याम के

कहा करैं कित जाँइ, ब्रज वासिनि निज गेह तजि।
निरगुन पंथ असीम, तनिक चलैं नहिं नेह तजि।।
ठाट-बाट सुंदर मिल्यौ, परि तुमकूँ नहिं ठौर।
कोरी बतियाँ को सुनै, चले जाउ कहुँ और।।
-सखा सुन श्याम के

लक्ष्मीचन्द्र शर्मा "मयंक", मथुरा

जा धुनि सौं ब्रजधाम, भई हैं बावरी।
झट पनघट कूँ छाँडि, चली तजि गागरी।।
सदा श्याम कौ संग गहैं निसि वासरे।
बा बंसुरी की तान सुनौ ब्रज नागरी।
-सखा तुम श्याम के
हरि माखन के चोर बने ब्रजधाम के।
धेनु चराई संग ग्वाल बनि गांम के।
कालिन्दी तट संग खेल बहु खेलते।
बड़भागी मनसुखा सुन सखा श्याम के।।
-सुनो ब्रज नागरी
हरिओउम् शर्मा 'हरि', भरतपुर

मधुबन मारग रोक, कोउ ना अब बतराबै।
फागुन फीकौं लगै, कोउना रसिया गाबै।।
दधि माखन गोरस अमिअ, नैंक रह्यौ ना नाम।
बानी नेह सुधा सनी, भूल गई ब्रजबाम।।
-सुनौ ब्रज नागरी
पनघट सूनौ परौ, तिहारी बाट निहारत।
रात द्यौस ब्रज भूमि, तिहारौ नाम पुकारत।।
सरिता नेह सुधा सनी, ब्रज सरसावै फेर।
ठकुरानी ब्रज पधारौ, कहाँ लगाई देर।।
-सुनौ ब्रज नागरी
जहाँ रचाते रास, वहाँ डिस्को नित होवै
सखा माव को प्रेम, पर्‌यौ कौने में रोबै
बाँसुरिया के सुर सबहि, देख दसा भयें मौन
बिन श्यामा अरू श्याम के, धीर बधाबै कौन
-सखा सुन श्याम के
ब्रज के कुंज निंकुज, बाट मोहन की हेरत,
बाग तड़ाग, कदम्ब, कूल कालिन्दी टेरत
गैल गिरारे राह कूँ, ताकैं अखियाँ फार
ठाकुर ब्रज में पधारौ, कन कन रह्यौ पुकार
-सखा सुन श्याम के

भगवान मकरन्द, 'कामां (भरतपुर)

भरै आपनौ पेट, वेणू तौऊ ना थकै।
संपति हमरी ठेठ, अधर-सुधा-रस जे छकै।।
पुरूष जाति कौ वेणु जी, हम सिग सुंदर-नारि।
दामोदर मुख जे लग्यौ, हमकौ दियौ पछारि।।
-सुनौ ब्रज नागरी
कैसौ बाजत वेणु, गई हरिनियाँ श्याम ढिग।
धरत सीस पग-रेणु, निज दीठन ते तहाँ सिग।।
जे चरनन पै श्याम के, करैं निछावर प्रान।
इनते हू बीती-गइन, हम नहिं पुसहि समान।।
-सुनौ ब्रज नागरी
रम जाइंगे बहौत, लखि मुसकान विलास युग।
तहाँ उजारौ होत, चपल-दामिनी नारि-द्युत।।
इन मथुरा ले जात है, अरे निठुर अक्रूर !
बिन दरसन हुंगी बिकल, काहि बनत तू क्रूर?
-सखा सुन श्याम के
नित कजरारे नैन, कारी धुँधरारी अलक।
गौधूरी मधु बैन, रज-रंजित मुँदई पलक।।
मंद-मंद मुसकान औ, तिरछी चितवन नेह।
बिना बिंधे किहि लौटि हैं, अब हम अपने गेह
-सखा सुन श्याम के
'मनोभाव' इहि भाँति, आलिंगन करती रहीं।
ब्याकुल हीं सिग राति, बिरह अगन जरती रहीं।।
प्रियतम के अनुराग रँग, रँगी-पँगी बहु भाँति।
इहाँ खड़ी 'संदेस' हित, मिले मिलै कछु स्वाँति।।
-सखा सुन श्याम के

सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु', कामॉ (भरतपुर)

संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों पर विद्वानों के विचार

हीरक जयन्ती ग्रंथ

समीक्षा : एक

साहित्य-मंडल, श्रीनाथद्वारा द्वारा श्रीनाथजी के पाटोत्सव पर इस वर्ष श्रीनाथजी पर विशेषांक का प्रकाशन किया गया।

संस्था की हीरक जयन्ती पर ७४४ पृष्ठों का विशाल हीरक जयन्ती ग्रंथ भी प्रकाशित किया गया। ५००/- की न्यौछावर वाले इस ग्रन्थ में आठ खंड पर सुंदर सामग्री का संकलन किया गया है। जिसमें ब्रज खंड, नाथद्वारा खंड, कला खंड, गोविन्द खंड साहित्य मण्डल खंड, विविधा खंड है। प्रधान सम्पादक श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा का प्रयास सराहनीय है इससे पूर्व भी इनके पुष्टि सम्प्रदाय के तीन ग्रन्थों का सुंदर प्रकाशन किया जा चुका है।

✍ 'श्रीवल्लभ स्वर' मासिक, जून १९६७

समीक्षा : दो

प्रधान संपादक- भगवती प्रसाद देवपुरा, साहित्य-मण्डल, श्रीनाथद्वारा, पृष्ठ ७४४ + शताधिक चित्र।

साहित्य मण्डल नाथद्वारा के तत्वावधान में प्रकाशित "हीरक जयन्ती ग्रंथ" वस्तुतः छह ग्रंथों का समुच्चय है- ब्रज खंड, मेवाड़ खंड, श्रीनाथद्वारा खंड, जिनमें क्रमशः उन्तीस, बाईस,चौवालीस, चौवालीस, तेइस, पच्चीस आलेख हैं। इनके आतिरिक्त इतिहास के वातायन से (पृ॰ ७१७-७२७) तथा विविध खंड (७२८-७३८) भी हैं।

यह संयोग ही है कि साहित्य मंडल का हीरक जयन्ती महोत्सव श्रीनाथजी के पाटोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ में श्रीनाथजी और नाथद्वारा पर विशेष सामग्री होना स्वभाविक है। इस विशालकाय ग्रंथ के सभी आलेख अनूठे हैं।

प्रथम खंड 'ब्रज खंड' को प्रकारान्तर से 'ब्रजभूमि का सांस्कृतिक इतिहास' की संज्ञा दी जा सकती है। दो सौ से अधिक पृष्ठों में संजोए हुए इस खंड में महत्त्वपूर्ण सामग्री है। ब्रज की आध्यात्मिक सुरक्षा हेतु अनेक आचार्यों का ब्रज आगमन हुआ। इन आचार्यों में आंध्र प्रदेश के श्रीमद्वल्लभाचार्य का आविर्भाव अन्यतम उदाहरण है। वल्लभ सम्प्रदायों के विशिष्ट स्वरूपों का न केवल वर्णन मात्र है वरन् उनके भोग, राग, श्रृंगार

आदि पर विस्तृत आलेख हैं। इस खंड के पूर्व ब्रज की महिमा व आराधना पर अनेक कवियों की कविताएँ हैं। इस खंड को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने वाले डॉ.विष्णुचन्द्र पाठक का पहला अग्रलेख 'जय जय वन्दे ब्रज वसुंधरा' शीर्षक से है (इसके पूरक रूप में दो और आलेख रास व वाद्ययंत्रों पर भी हैं) जिसका ऐतिहासिक महत्त्व है क्योंकि यह विविध संदर्भों से भरपूर होने के कारण प्रामाणिक है इसके आगे के अनेक आलेख व वैष्णव सम्प्रदायों, विशेषतः हरिश्चन्द्र का शताब्दी पूर्व प्रकाशित (सन् १८७५ ई॰) उनका ही अन्य आलेख "वैष्णवता और भारतवर्ष" उल्लेखनीय हैं। साथ ही मंडल के प्राण श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा का आलेख "वल्लभ सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य" अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। सहायक पीठ तक का यत्र–तत्र उल्लेख है, अष्टम शाखा पर भी अब पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है।

श्री मनोहर कोठारी जी ने अपने विद्वतापूर्ण लेख में अनेक शाही फरमानों का उल्लेख किया है। (वल्लभ सम्प्रदाय के आदि समान गोकुल पर अब पर्याप्त आलेख प्राप्त हैं जिनकी पुस्तकाकार प्रकाशित करवाने के लिए प्रयत्नशील हूँ) दो ओलख पर्वोत्सव (श्री देव की नन्दन कुम्हेरिया) व वर्षोत्सव (डॉ॰ हर्ष नंदिनी भाटिया) पर भी है। देखा जाए तो वल्लभ सम्प्रदाय में वषोत्सवों का अत्यधिक महत्त्व है। इसी खंड में श्री चिरंजीव लाल शर्मा 'कलाकार' का "पुष्टिमार्ग की भारतीय चित्रकलाको देन" शीर्षक रचना अद्वितीय है।

'मेवाड़ खंड' (पृ. २०६–२८८) संक्षिप्त होते हुए भी अनेक महत्त्वपूर्ण लेखों से परिपूर्ण है, जिसमें मुख्यतः भगवान श्रीनाथजी का मेवाड़ प्रवेश नाथद्वारा में उनकी प्रतिष्ठा का उल्लेख होना स्वभाविक है। श्री श्याम प्रकाश जी का 'जतीपुर से नाथद्वारा' (संवत् १७२६–२८) रथ में यात्रा करते हुए श्रीनाथजी किस प्रकार ब्रज में पधारे स्पष्ट करता है। (कभी संभव हों तो इस यात्रा का सम्पूर्ण सचित्र विवरण प्रकाशित होना चाहिए।) श्री चक्र जी का आलेख विशेष उल्लेखनीय है। सुश्री हेमाली व्यास से कांकरोली और वहाँ स्थापित 'विद्या विभाग' की उपलब्धियों पर विस्तार से लिखवाना चाहिए।

'श्रीनाथद्वारा' तो स्मृति ग्रंथ का केंद्र–बिन्दु है जिसमें तीन खंड समाहित हैं :–

नाथद्वारा खंड (पृ. २८६–४३६), नाथद्वारा कला खंड (पृ॰ ४३७–५७२), गोविन्द खंड (पृ॰ ५७३–६४८)

नाथद्वारा खंड में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आलेख है (श्री हरिकांत त्रिपाठी रचित) वल्लभ–संप्रदाय में सेवा श्रृंगार सामग्री और संगीत। नाथद्वारा आज भी अपनी ब्रज संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इस खंड में यहाँ के बाग–बगीचे, धर्मशालाएँ होटल, गोशालाएँ, बैंक, शिक्षा संस्थाएँ आदि सभी पर विवरण है। इस खंड की अधिकांश सामग्री सहित्य मंडल परिकर ने जुटायी है।

नाथद्वारा : कला खंड अत्यंत अनुपम है जिस का पूरा–पूरा श्रेय कलाकार श्री चिरंजीवी लाल शर्मा को है जिन्होंने नाथद्वारा की कला के विविध पक्षों पर सचित्र साथ ही प्रामाणिक सामग्री एकत्र की है। नाथद्वारा अपनी पिछवाई कला से विश्वविख्यात है। इस खंड में चित्रकला, मीनाकला, संगीत कला, पाककला, से संबंधित सामग्री के अतिरिक्त हाथीदाँत की कला, पुष्प श्रृंगार कला, भित्ति चित्र कला, पीपल–पत्र चित्रांकन, चावल पर चित्रांकन, चाँदी पर मीने का कार्य लकड़ी पर चाँदी का कार्य, सफेद धातु पर मीने का कार्य, रेशम जरी का कार्य आदि इतनी विविध कलाएँ विकसित हो गई हैं कि उन पर एक स्थान पर प्रामाणिक लेखाजोखा देना दुष्कर कार्य है।

इस खंड में ही श्री चिरंजीव लाल जी का आलेख ''नाथद्वारा लोकजीवन में कला'' उल्लेखनीय है। जब कला लोकजीवन में रचबस जाती है तो उसका प्रस्फुटन सर्वत्र देखा जा सकता है जिसका ज्वलन्त उदाहरण है श्रीनाथद्वारा का कला विषयक खंड। कला खंड में जो कलाकृतियाँ (पृ.४५६–४५७ के मध्य) प्रस्तुत की गई हैं उनकी विलक्षणता देखते ही बनती है। यह खंड अपनी सामग्री से विशेषतः कलाविषयक सामग्री से इतना परिपूर्ण है कि पृथक से खंड स्वतंत्र ग्रंथ का स्वरूप बड़ी आसानी से ले सकता है।

अगला ''गोविन्द खंड' स्व. तिलकायत महाराज श्री गोविन्दलाल जी से संबंधित है। यह खंड वस्तुतः तिलकायत स्व.गोविन्दलालजी के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप है।

अंतिम खंड 'साहित्य मंडल' (पृ. ६४६–७१६) के लेखा–जोखा से संबंधित है। साहित्य मंडल की कीर्ति पताका इस ग्रंथ के प्रकाशन से युग–युगों तक फहराती रहेगी।

अंत में 'विविधा' में ''इतिहास के वातायान से'' में प्रामाणिक सामग्री इकट्ठी की गई है। ऐतिहासिक महत्त्व के ग्रंथों से इसको संकलित किया गया है जिससे भविष्य में प्रस्तुत ग्रंथ संदर्भ ग्रंथ के रूप स्वीकार किया जाएगा। इस खंड का अंतिम आलेख 'श्रीनाथजी के शिरोभूषण' (पृ. ७३८–७४४) है जिसमें डा. विष्णुचन्द्र पाठक ने अपनी शोध दृष्टि का गंभीरता से परिचय दिया है। यह आलेख अंत में होते हुए भी ग्रंथ का सिरमौर है।

ग्रंथ संग्रहणीय है। विशेष रूप से जो पाठक ब्रजभूमि, पुष्टिमार्ग, श्रीनाथजी व श्रीनाथद्वारा की कला में रूचि रखते हैं। प्रत्येक खंड में अनेक रेखाचित्र, छायाचित्र व रंगीन चित्र इसकी शोभा को द्विगुणित कर देते हैं। 'कला खंड' तो इस ग्रंथ की खंड–माला का सुमेरू है।

कलात्मक स्वच्छ मुद्रण प्रशंसनीय है। स्मृति ग्रंथों में – पाटोत्सव स्मृति, अष्टछाप स्मृति गोस्वामी विट्ठलनाथ स्मृति, गो. हरिराय स्मृति प्रस्तुत हीरक जयंती ग्रंथ हीरक की भाँति हिंदी साहित्य में प्रकाश–स्तंभ के तुल्य है।

प्रस्तुत अमृतपूर्ण ग्रंथ के प्रकाशन से मंडल के प्राण श्री भगवती प्रसाद देवपुरा की उत्कट संकल्प शक्ति उजागर होती है। इस पावन शुभ कार्य के लिए अनेकानेक बधाइयाँ।

डा. कैलाशचन्द्र भाटिया

-भारती नगर, मैरिस रोड़ अलीगढ़

समीक्षा : तीन

श्रद्धेय श्रीयुत देवपुराजी, सादर नमस्कार

आपका पत्र मिला उससे पूर्व स्मारिका का 'श्रीनाथ अंक' तथा 'साहित्य मंडल हीरक जयन्ती अंक' भी प्राप्त हुए।

आपने ब्रजभाषा एवं श्रीनाथजी की अपूर्व सेवा इन प्रकाशनों से कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

गागर में सागर भरा है आपने। अलग-अलग खंडों में विभाजित कर आपने जो साहित्य संजोया है वह 'श्रीनाथजी' व श्रीनाथद्वारा' की दृष्टि से एक अमूल्य संदर्भ ग्रंथ की तरह आनेवाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर रहेगा।

बहुमूल्य साहित्य-सामग्री के साथ अनेक लेखकों के चित्र देकर उनका भी सम्मान बढ़ाया है। जिन लेखकों की रचनाएँ इनमें सम्मिलित की गई हैं। उनको भी आपने इस ग्रंथ के साथ अमर कर दिया है। पुस्तक का कलेवर, आकार मुखपृष्ठ, छपाई आदि सुन्दर व प्रशंसनीय हैं। कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

श्री विष्णुचंन्द्र पाठक को लिखे मेरे एक पत्र की भावना के अनुसार आज हमें 'भगवती' 'प्रसाद' के स्वरूप प्राप्त हुए हैं तथा 'पूरे देवश्री' (देवपुरा) हैं। आप अपनी सेवाओं हेतु चिरस्मरणीय रहेगें, अमर रहेंगे।

कैलाश विहारी वाजपेयी
१२ सरदारपुरा, उदयपुर

समीक्षा : चार

परम सम्मान्य, देवपुराजी

श्रीकृष्ण शरण मम्।

राजस्थान की लोक ख्यात हिन्दी सेवी संस्था साहित्य-मण्डल, नाथद्वारा से प्रकाशित स्मारिका सं॰ ४ श्रीनाथजी अंक और हीरक जयन्ती ग्रंथ दोनों प्रसाद स्वरूप मिले। स्मारिका में मेरी लिखी हुई प्रतिक्रिया भी छपी है। इस महती कृपा के लिए आभारी हूँ। यथावसर प्रकाशन हेतु सुविस्तृत समीक्षा प्रतिक्रिया स्वरूप भेजूँगा।

एक निवेदन ! श्रीकृष्ण भक्ति साहित्य से सबंधित निबंध की अपेक्षा हो तो मेरा सहयोग रहेगा। साहित्य मण्डल की रीति-नीति के यदि अनुरूप हो तो सूर साहित्य के ही नही, कृष्ण-भक्ति साहित्य के अध्येताओं और अनुसंधाताओं को भी जुड़ने का अवसर मिलना चाहिए।

आशा है, आप सानंद हैं। सधन्यवाद !

राजनारायण राय
२२७/।।, पंडितवाड़ी, देहरादून

हीरक जयन्ती परिशिष्टांक

समीक्षा : एक

सम्पादक :– श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा, प्रबन्ध सं. श्याम प्रकाश देवपुरा; सम्पादन सहयोग :– पुरूषोत्तम पालीवालः प्रकाशकः– प्रधानमंत्री, साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) प्रथम संस्करणः चार सौ पचास रुपये मात्र पृ. ४०० समीक्षक : डा॰ चक्रधर नलिन साहित्य महोपाध्याय।

समीक्ष्य कृति हीरक जयन्ती ग्रंथ के प्रकाशनोपरांत अवशिष्ट सामग्री का परिशिष्ट है, जिसमें ब्रज, वल्लभ, सम्प्रदाय, मेवाड नाथद्वारा, साहित्य–मण्डल तथा विविधा खण्डों में श्रीनाथजी सम्बन्धी दुर्लभ तथा बहुमूल्य सामग्री का समायोजन किया गया है। ग्रंथ असाधारण तथा सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा कलात्मक दृष्टिकोण से इसकी अनुपमेयता असंदिग्ध है।

खण्ड–१ (ब्रज–खण्ड) में प्रथमतः रामशरण पीतलिया की कविता 'नमन करें ब्रज वसुन्धरा को' शोभित नीम, कदम्ब, करील पलाश लुभाते जी को। पीपल, जामुन, आम, आँवले उमगाते जगती को।। खेत खेत में सोना उपजे उपवन भाव निराला। गोचारण हित ब्रज आकर गोपाल बने थे ग्वाला।। शस्य स्यामला सदा सुहानी चिर उर्वर अपरा को। नमन करे हम पुण्य धरा को ब्रज की वसुन्धरा को। .....कुसुम सरोवर पीली पोखर बिमल सरोवर गाथा। ब्रज वसुन्धरा ब्रजपति महिमा गाते झुकता माथा। अति आनंद उमंग उत्स की जननी विश्वंभरा को।' ब्रज वैभव तथा ब्रज संस्कृत का चित्रांकन करती हैं। इस खण्ड की अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाओं में 'पुराणों में ब्रज महिमा' (डा. रमेश चन्द्र मिश्र) 'ब्रज के विभिन्न सरोवर, तालाब, कुण्ड तथा उनका महत्त्व' (पुरूषोतम पालीवाल) 'ए, हो विधना, तौ पै अंचरा पसार मांगोः जनम जनम, दीर्जा याहि–ब्रजबासिबौ' (भगवती प्रसाद देवपुरा) 'ब्रजभूमि का नैसर्गिक सौन्दर्य' (डा. हर्ष नन्दिनी भाटिया) 'श्री गिरिराज गोवर्द्धन के मुखारविन्द' (देवकी नन्दन कुम्हेरिया) 'गोस्वामी विट्ठलनाथः राग, भोग, श्रृंगार' (डॉ. राम प्रकाश कुलश्रेष्ठ) 'ब्रज की लोक कलाएँ (डा. कैलाश चन्द्र भाटिया) 'ब्रज की अपूर्व एकल लोक गायन कला–झूलना' (डा॰ विष्णु चन्द्र पाठक) 'ब्रज साहित्य अरू संस्कृति में रायतो' (डा॰ सुरेश पाण्डेय) 'श्री दाऊजी का जन्म स्थान व युगों पुरानी धरोहर–क्षीर सागर' (राधा गोविन्द पाठक) 'ब्रज की भगत परम्परा' (रामनारायण अग्रवाल) 'ब्रज गौरव गरिमा' (श्रीधर डा. जगदीश लवानिया) 'भगत सांगीत : प्रगति अरू संभावना' (डा॰ रमेश चन्द्र मिश्र) 'ब्रज की चित्रकला' (चिरंजीवलाल शर्मा कलाकार) 'ब्रज में पुष्टिमार्गीय वल्लभ संप्रदाय की बैठकें और उनका महत्व' (किशनवीर यादव 'ब्रजवासी') 'ब्रज़ के पारंपरिक वैवाहिक विदा गीत' (श्रीमती शचि भट्ट) 'ब्रज के विवाह, गाली–गीतों की रसवन्ती' (डा. विष्णुचन्द्र पाठक) उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं से साहित्य, संस्कृति, लोकजीवन, कला, आदि में ब्रज वैभव निनादित है। सभी रचनाएँ अपूर्व आनन्द की उद्‌गाथा हैं।

वल्लभ–संप्रदायः खण्ड दो' श्री वल्लभ सम्प्रदाय के विविध–स्वरूपों का सहजोद्घाटन करता है। भारतीय संस्कृति और साहित्य में श्रीवल्लभ संप्रदाय की भूमिका और अवदान सम्बन्धी इन आलेखों से अतीत और वर्तमान के दो छोर संगुम्फित हुए हैं। इसमें समाहित विशेष अनुसंधित्सकारी आलेखों में 'शुद्धाद्वैत दर्शन और पुष्टिमार्ग' (रामशरण पीतलिया) 'अष्टाक्षर मन्त्र और ब्रह्म सम्बन्ध' (भगवानदास मकरन्द) 'षोड़ष ग्रंथ' (पुरुषोत्तम पालीवाल) 'पुष्टि सम्प्रदाय में साहित्य–सृजन व गोस्वामि श्री हरिराय जी' (डा. विष्णुचन्द्र पाठक) 'वल्लभ संप्रदाय में गोस्वामी विट्ठलनाथजी के क्रिया कलाप' (गिरधरलालजी) गोस्वामी विट्ठलनाथजी (विट्ठल पारीक) 'पुष्टिमार्ग के प्रसिद्ध ग्रंथ और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी महत्ता' (डा. त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल) 'गुजरात और श्री वल्लभ–सम्प्रदाय' (डा. केशवराम) 'श्रीनाथजी के दर्शनों में 'घटा' की 'छटा' (सुश्री हेमाली व्यास) 'वर्तमान में पुष्टिमार्ग की कर्मस्थलीः बडौदा' (डा. विष्णु विराट चतुर्वेदी) 'खरास का लाला जी मन्दिर और उसकी सेवा–प्रणाली' (राकेश अजमेरा) 'चौपासनी और पुष्टिमार्गीय साहित्य' (गोपेश शरण आतुर) 'श्री वल्लभाचार्य' (प्रो. गिरीशचन्द चौधरी) 'पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के लक्षणः तुलसी कण्ठी व तिलक का महत्व' (दक्षा भाटिया) 'वल्लभ सम्प्रदाय में कलात्मक भक्ति का अध्यात्म' (भगवती प्रसाद देवपुरा) महत्वपूर्ण है। प्रत्येक आलेख स्वंय में शोध पत्र है तथा अनुसंधान के नये प्रतीक और प्रतिमान का संकेतक है। ''वल्लभ संप्रदाय का अध्यात्म'' नामक देवपुराजी का आलेख बहुत स्तरीय और गंवेषणात्मक है तथा अध्यात्म के नव द्वार खोलता है।

मेवाड़ भारत के गौरव, अस्मिता और महिमा का गायक है। उसकी प्रतिष्ठा, स्मृति और शौर्य जग–विदित है। उसका स्मरण आते ही एक ओर मन में वीरत्व का जागरण तो दूसरी ओर भारतीय अर्थ और जीवन्तता का आत्मबोध ा जाग्रत होता है। तृतीय खण्ड इस भावनानुभूति वश 'मेवाड' को समर्पित है। 'मेवाड़ खण्ड अनुक्रमणिकानुसार श्याम प्रकाश देवपुरा (मेवाड़ की माताएँः एक संक्षिप्त परिचय) प्रो. गिरीश चन्द्र चौधरी (भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द्र एवं मेवाड़) भगवती प्रसाद देवपुरा (मेवाड़ के सौन्दर्य स्थलः मोह महादेव एवं अवरी गंगा) पुरूषोत्तम पालीवाल (मेवाड़ के प्रसिद्ध पहाड और घाटियाँ भ्रमरराज की धूणी, बरदड़ की नाल, जरगा) अरविन्द कुमार देवपुरा (ताणा का श्रीनाथजी मन्दिर) डा. विजय कुलश्रेष्ठ (प्रागैतिहासिक स्थलः आयड़) प्रो. रघुनाथ सिंह (वीर शिरोमणि प्रताप का र्स्वगारोहण स्थलः चावण्ड) मनोहर कोठारी (प्रतापयुगीन ऐतिहासिक तीर्थ) डा. श्रीकृष्ण जुगनू (जौहर की ज्वाला में जलता चित्तौड़) की रचनाएँ मेवाड़ और मेवाड–पति, अप्रतिम स्वातंत्र्य और स्वाभिमान के प्रतीक राणा प्रताप के संकल्पित तपस्वी जीवन, साधना स्थलों से सम्बद्ध हैं। डा. ज्योतिपुंज की क़विता 'वीरभूमि मेवाड़ तेरी जय.हो' वीरभोग्या वसुन्धरा' की प्रतीक ' रण में जो याद आई, रानी की मोहमाया। हाड़ी सरीखी रानी, अपना ही सर कटाया। सेनानी बन के चमकी, रण में बजी यह भेरी–दुश्मन को इस धरा की मिटटी को भी चटाया। ताकत स्वाभिमानी, शालीनता विजय हो। यही यहाँ की रस्में, मेवाड़ तेरी जय हो।।७।। पुष्ठ १७६, मेवाड़ के शौर्य, पराक्रम की प्रतीक, वंहा की नारी–सम्पदा के त्याग और बलिदान को सहज प्रतिबिम्बित करती है। चित्तौड़ और मेवाड़ सम्बन्धी इस अनूठी और दुर्लभ सामग्री के संकलन के लिए सम्पादक तथा संरक्षक मण्डल बधाई के पात्र हैं।

प्रस्तुत कृति का चतुर्थ खण्ड 'श्रीनाथद्वारा–खण्ड' है जिसमें श्रीनाथद्वारा के रियासती गौरव–स्वरूप, संगीतज्ञों, शिक्षकों, बैण्ड, संस्कृतिवेत्ता, विशिष्ट जन परिचय, सिंघवी परिवोर सेवा आदि विविध विषयक साधि ाकार विद्वद् मंडल द्वारा आलेख सृजन हुआ है। इस खण्ड में मनोहर कोठारी (नाथद्वारा रियासत और उसकी गौरव महिमा) मुरलीधर सनाढ्य (नाथद्वारा के संगीतज्ञ) मनोहर कोठारी (नाथद्वारा के लब्ध प्रतिशिष्ट शिक्षकः

प. गौरी शकर शुक्लः एक आदर्श शिक्षक) शशिकान्त महाकाली (नाथद्वारा का श्रीनाथबैण्ड़) श्री दाऊलाल शर्मा (श्रीनाथद्वारा के सुविख्यात सस्कृति वेत्ता) संजय प्रकाश देवपुरा (विद्या विभाग श्रीनाथद्वारा) हेमाली व्यास (बैठकजी) रामवल्लभ सोमानी (नाथद्वारा मन्दिर पर होल्कर का आक्रमण) दिनेशचन्द्र शर्मा (भू वैकुण्ठः नाथद्वारा) प्रदीप पालीवाल (श्रीनाथजी मन्दिर के विभिन्न स्थानों की सेवा भावना) मनोहर कोठारी (विलक्षण प्रतिभा के धनीः मो. भाई लौहार) प्रभुदास वैरागी (नाथद्वारा की ब्रज चित्रकला और चित्रकार) भगवती प्रसाद देवपुरा (नाथद्वारा का एक वरदपुत्र जिसकी अब स्मृति ही शेष है) दाऊलाल शर्मा (पं. श्री आनन्दीलाल शास्त्री) पुरूषोत्तम पालीवाल (वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानीः श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी) श्याम प्रकाश देवपुरा (नाथद्वारा में सिंघवी परिवार की सेवा) डा. सुषमा शर्मा (प. ब्रजनाथ शास्त्रीः एक युग–पुरूष) मधुसूदन गोरवा (कज्जूलाल शास्त्री) डा॰ बाबूलाल शर्मा (श्रीनाथद्वारा के दो सुरह लेख) तथा श्री श्याम प्रकाश देवपुरा का (मनोहर कोठारी का जीवन वृत्त) जीवन वृत पठनीय, सुरूचिप्रद तथा ज्ञानवर्द्धक है। साहित्य मण्डल खण्ड में जहां भगवती प्रसाद देवपुराजी, रामशरण पीतलिया द्वारा विशेष कार्य एवं समारोह सम्बन्धी जानकारी दी गई वहीं विविधा में भगवानलाल बंशीलाल, (भारतीय संस्कृति में विश्वशान्ति, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय, एकता की भावना) आनन्द शर्मा (भक्तिमती मीराः जनश्रुतियों के झरोखे से) रामशरण पीतलिया (कृष्णभक्त मीरा की काव्य–साधना) डा. बी. एल. जोशी (मीरा की भक्ति भावना) डा. सुरेश पाण्डेय (प्राचीन भारतीय इतिहास में पुष्प कला) फतेहलाल गुर्जर अनोखा (विद्या विभाग, कांकरोली) तथा भगवती प्रसाद देवपुरा का रहीम सम्बन्धी आलेख सुपाठ्य, विचारणीय, मननीय तथा संग्रहणीय है।

समीक्ष्य कृति भारतीय संस्कृति, इतिहास, सहित्य, कला, दर्शन, त्याग, वीरता, शौर्य, धर्म, अध्यात्म की अलौकिक समन्विति है। इससे जहां अतीत क़ा दर्शन होता है वहीं भविष्य पथ पर चलने के लिए अपार चेतना तथा ऊर्जा की प्राप्ति होती है। सर्व सामग्री उच्च कोटि के विचार, चिंतन, मनन, अन्वेषण एवं गहन गवेषण की प्रस्तुति है। इस कृति के माध्यम से विश्व की अनन्य भाषायी और संस्कृति के जन भारतीय तत्व मीमांसा से परिचित होंगे और लाभ उठायेंगे। भुद्रण अभिनव, विश्व–स्तरीय, जिल्द टिकाऊ, मुख–पृष्ठीय मां शारदा का विद्यादायी चित्र आत्मिक शुद्धिकारी है। टंकन त्रुटियाँ कहीं नहीं।

प्रस्तुत कृति पठनीय, संग्रहणीय तथा सभी वैष्णवी–मनोवृत्तियों के पाठकों के लिए उपयोगी लाभप्रद हैं। मूल्य अधि नहीं। आशा है कि हिन्दी पाठक इससे लाभान्वित होंगे और 'श्री हरिशरणम्' की ओर प्रशस्त।

डा॰ चक्रधर नलिन, १४६ प्रभुटाउन, रायबरेली

समीक्षा : दो

प्रधान सम्पादक- श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा, प्रकाशक- साहित्य मण्डल, नाथद्वारा, पृष्ठ ४००, न्यौछावर ४५०/-

साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा विगत साठ वर्षो से साहित्य, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करता रहा है। अष्टछाप के महाकवियो, गुसांईजी, गो, गोकुलनाथजी, गो. हरिरायजी के स्मृति ग्रंथ, श्रीनाथजी अंक, कुम्भनदास अंक तथा हीरक जयन्ती अंक प्रकाशन के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करने वाले

ग्रंथ हैं। इस वर्ष साहित्य मंडल ने हीरक जयन्ती परिशिष्टांक का प्रकाशन किया है। हीरक जयन्ती परिशिष्टांक १. ब्रजखंड २. वल्लभ सम्प्रदाय खंड ३. मेवाड़ खंड ४. श्रीनाथद्वारा खंड ५. साहित्य मण्डल खंड और ६. विविधा खंड में विभाजित है। ब्रजखंड में ब्रज की महिमा, ब्रज की चित्रकला, लोकगीत, भगत परम्परा और वल्लभ सम्प्रदाय से सम्बन्धित सामग्री है। वल्लभ सम्प्रदाय खंड में शुद्धाद्वैत दर्शन, दीक्षा, प्रमुख आचार्य, आधारभूत ग्रंथ, वैष्णव–लक्षण आदि का विवेचन है। मेवाड़ खंड में वीरभूमि मेवाड़, महाराणा प्रताप, जौहर और मेवाड़ के सौन्दर्य का समावेश है। श्रीनाथद्वारा खंड में नाथद्वारा के विद्वानों, शिक्षकों, चित्रकारों, संगीतज्ञों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का परिचय है। साहित्य–मण्डल खण्ड में जिनमे विधालय, पुस्तकालय, पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष, अष्टछाप कक्ष, साहित्यकार कक्ष आदि विशेष उल्लेखनीय है। विविधा खंड में मीरा और रहीम की भक्ति और काव्य–साधना, पुष्पकला की प्राचीनता के साथ ही भारतीय संस्कृति की कतिपय मूलभूत विशेषताओं का सुन्दर विवेचन हुआ है। यह एक गौरव ग्रंथ है और संग्रहणीय संदर्भ ग्रंथ बन गया है।

वल्लभ चिम्तन जुलाई ९८

कुम्भनदास अंक

समीक्षा : एक

आ. श्री देवपुरा जी,

सादर जय श्री कृष्ण

कवि कुम्भनदास अंक पढ़ने का सौभाग्य मिला। मेरे वल्लभ सम्प्रदाय के अष्टछापीय परम भगवदीय महानुभावों में कवि कुम्भनदास अन्यतम हैं, उन्होंने सख्य भाव से ब्रजबिहारी को रिझाये हैं।

"दास कुंभन नि नाथ हरिदास वर्य धर नरका शीश स्वरूप अद्भुत बिराजैं," मन मन्दिर में विराजित उनके परम आराध्य विश्वेश्वर प्रभु श्रीनाथजी की लीला के गायन ने उनको स्वाभिमान, संतुष्टि और चरणाश्रय की दृढ़ता प्रदान की थी।

इतिहास साक्षी है 'सीकरी' वाली घटना का 'जाको मुख देखत दुःख उपजे वाको करनो पर्यो प्रणाम' कहना साधारण आदमी के साहस की बात कदापि नहीं हो सकती? जिस समय अकबर का सूर्य मध्याह्न में था वह चाहता तो कवि को कठोर से कठोर सजा दे सकता था किन्तु 'जो पति राखन हार है माखन चाखन हार' उसका कौन बाल बांका कर सकता है।

कुम्भनदासजी की विपन्नता उनकी त्यागमयी वृत्ति की परिचायक है स्वयं अकबर और राजा मानसिंह की भेंट को स्वीकार कर वे श्री सम्पन्न हो सकते थे किन्तु वे तो ठहरे श्री महाप्रभुजी के उपदेशों को आत्मसात् करने वाले। "गरीबी अपनाओं, अमीरी न चाहो" उनका ध्येय था।

लिखते लिखते श्रीमान् श्रीजी हजूर श्री गोविन्दलालजी महाराजश्री का स्मरण हो रहा है, अरबों की सम्पति के स्वामी होते हुए भी वे विदेह जनक की भांति जीवन भर रहे थे। उन पर कभी भी वैभव हावी न होने पाया था।

वर्तमान संदर्भ में विचार करें तो कवि श्री अधिक सामयिक हैं क्योकि आधुनिक जीवन शैली में जी कर मानव ने भले ही भौतिक सुख अर्जित कर लिया है, आत्मा के आनंद का तो तिरोधान हो गया है। इन सबके मूल में है हमारी चरित्रगत कमजोरी या अनैतिकता का व्यापक फैलाव। हमने धर्म के सही स्वरूप को भुलाकर मनमाने अर्थ लगा लिये हैं। अकिंचनों का पुष्टिमार्ग आज जिस तरफ जा रहा है उसे वापिस लौटाने में कई अवरोधक और स्वार्थ के विन्ध्याचल खड़े कर दिये गये हैं। खैर विषयान्तर हो रहा है। प्रसंग को यहीं समाप्त कर कवि कुम्भनदास अंक के आयोजक, लेखक, कवि और मार्गदर्शक सभी वंदनीय हैं, प्रणम्य हैं। सबको बहुत बहुत बधाई।

हरिनारायण नीमा, उज्जैन

समीक्षा : दो

सम्पादक श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा, पृष्ठ संख्या ७२, मूल्य रू. ४०/- प्रकाशक - साहित्य मण्डल, नाथद्वारा।

प्रस्तुत अंक १९९८ में साहित्य–मंडल द्वारा आयोजित पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। इसमें अष्टछाप के कवि श्री कुंभनदास के जीवन, मर्मान्तक प्रसंग, निस्पृह व्यक्तित्व का प्रभावपूर्ण चित्रण है। कुम्भनदास के काव्य का अनुशीलन करते हुए ब्रज संस्कृति को, उनके अवदान को भी स्पष्ट किया गया है। कुंभनदास के कतिपय महत्वपूर्ण पद और कवि के व्यक्तित्व का काव्यमय चित्रण भी है। समस्यापूर्ति के रूप में काव्य साधना की प्राचीन परम्परा का परिचय भी मिलता है। ग्रंथ कुंभनदासजी से सम्बन्धित पठनीय सामग्री से सम्पन्न है।

वल्लभ चिन्तन

हरसिंगार प्रवेशांक

समीक्षा : एक

हरसिंगार त्रैमासिक का प्रवेशांक पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। साहित्य मंडल द्वारा इसका प्रकाशन पाकर और भी अच्छा लगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यह एक ऐसे महान पुरूष को लेकर प्रारम्भ हुई है जिनका चरित्र बड़ा विराट था और इसी कारण यह पत्रिका भी बड़े विराट भावों को लेकर शुरू की गयी है। महाराजश्री के चरित्र की बहुत सी सुन्दर बातें जो नहीं मालूम थीं वे वैरागी जी के लेख में प्रकाश हुई है, यह बहुत बड़ा कार्य हुआ है। अन्य लेखों में भी महाराजश्री का जीवन क्रम जो लिखा गया है वो बड़ा अद्‌भुत है। इस पत्रिका को देख कर यह भावना होती है कि श्रीनाथद्वारा के सभी पूर्व के तिलकायत महाराजाओं का चरित्र प्रकाशित

हो। क्योंकि अभी तक इन महान पुरूषों का चरित्र सामान्य जनता को मालूम नहीं है। यह बात बहुत ही आवश्यक है। आशा है कि साहित्य–मण्डल अपने प्राण भगवती प्रसाद जी देवपुरा जी को प्रेरित कर यह कार्य भी करावेगा। इससे साहित्य–मण्डल की कीर्ति में बढ़ोत्तरी होगी। यह सभी श्री प्रभु की कृपा का प्रसाद है। साहित्य–मडल पर उनकी यह कृपा बनी रहे, यही कामना है।

पुनः पुनः ग्रंथ हेतु सम्पादक मंडल को बधाइयों सहित, .

प्रो. गिरीश चन्द्र चौधरी
भूगर्भ विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

समीक्षा : दो

गो. तिलकायित गोविन्दलाल अंक, सम्पादक – श्रींभगवती प्रसाद देवपुरा, प्रकाशक – साहित्य–मंडल, श्रीनाथद्वारा, शुल्क रू. ५५ वार्षिक। हरसिंगार का यह प्रवेशांक है। तिलकायित श्री के बहुआयामी व्यक्तित्व, प्रदेय, संस्मरणों और अवदान संबंधी आलेखों और निबन्धों से सुसज्जित यह अंक पठनीय, संग्रहणीय है। हिन्दी में पत्रिका का प्रकाशन एक साहस का कार्य है। आशा है, 'हरसिंगार' माँ भारती के भंडार को सदैव सुवासित करता रहेगा।

वल्लभ चिन्तन

समीक्षा : तीन

आदरणीय श्री. देवपुराजी,

कलानिधि भगवान श्रीनाथजी के दिव्य धाम श्रीनाथद्वारा में साहित्य–मण्डल द्वारा 'हरसिंगार' का प्रकाशन होना एक महत् कार्य सिद्ध होगा, ऐसी मेरी मान्यता है। नित्यलीलास्थ महामहिम गो. तिलकायत श्री १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज की पुनीत स्मृति और उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के लिये समर्पित 'हरसिंगार' का प्रथम अंक सर्वोत्तम पत्रिका के रूप में साहित्य जगत में प्रस्तुत हुआ है।

मण्डल के अध्यक्ष आ. श्री. मनोहरजी कोठारी प्रधानमंत्री आप स्वंय, आ. श्यामजी और सहयोगीजनों का इस सारस्वत अनुष्ठान में सहयोग सर्वथा प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

आपके सृजन कर्म के लिये जितना भी लिखा जाये कम ही होगा। वल्लभ दर्शन का अध्ययन आपकी प्रज्ञा, बुद्धि और मनीषा अद्भुत है। एक वर्ष से भी कम अवधि में हीरक जयंती ग्रंथ प्रकाशन प्रक्रिया के साथ–साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के समर्थन में अंग्रेजी हटाओ आंदोलन, अष्टछापीय कवि कुंभनदास अंक, हीरकजयंती परिशिष्टांक और इसी क्रम में हरसिंगार को मूर्तरूप देना वाक्पति वल्लभ की कृपा का परिचायक है।

प्रस्तुत प्रवेशांक – हरसिंगार को गोविन्द की वस्तु गोविन्द को समर्पित कर आपने गोविन्द प्रभु के श्रीचरणों में सच्ची श्रद्धांजलि प्रकट की है।

'हरसिगार' जैसा कि पत्रिका का नाम है हर 'शिव' का पर्याय है, सिंगार सुन्दरता (शिवा) का और जहां शिव और सुन्दर है वहां सत्य तो अन्तर्निहित होता ही है। अतःएव हरसिंगार सत्य, शिव, सुन्दर की महिमा से मण्डित बनेगा ही।

"हरसिंगार", साहित्य–मण्डल को गांधी उद्यान में श्रद्धा और विश्वास के स्नेहनीर से सींचा जायेगा तो इसके सुकुमार पुष्पों की मधुर सुवास दिग्दिगंत में प्रसारित होगी जिससे पत्रिका का उद्देश्य पूरा होगा।

बहुत बहुत धन्यवाद।

हरिनारायण नीमा, उज्जैन,

हरसिंगार शौर्य अंक

समीक्षा : एक

हरसिंगार का शौर्य अंक (अप्रेल–जून १९९८) मिला, उत्कृष्ट प्रशस्य और पठनीय। सम्पादकीय में राजस्थान के महाकवियों के वीर काव्य द्वारा यहां के महान योद्धाओं का विरूदगान कर समस्त राष्ट्रभाषा पाठकों में नई चेतना का जागरण किया है, एतद हार्दिक अनुशंषां के पात्र है।

समीक्ष्य अंक के प्रमुख आलेखों में 'शौर्य साधना का महत्व तथा 'पार्वती' महाकाव्य, (डा. विष्णुचन्द्र पाठक) 'राजस्थानी कवियों की शौर्य साधना' (श्याम प्रकाश देवपुरा) 'शौर्य के आधुनिक प्रतिमान (राजेन्द्र शंकर भट्ट) 'महाकवि भूषण और उनके चरितनायक' (मनोहर कोठारी) 'ब्रजभूमि के कवि सोमनाथ का वीर काव्य'(डा॰ विष्णुचन्द्र पाठक) 'महाकवि श्याम नारायण पांडेय का शौर्य वर्णन' (श्री भगवती प्रसाद देवपुरा) 'भारत की ऊर्जस्वित पत्रकारिता की शौर्यगाथा 'प्रताप' (रामशरण पीतलिया) 'मैना का बलिदान' (लल्लन प्रसाद व्यास) 'मेवाड का महावीर 'उड़ना पृथ्वीराज' (पुरूषोत्तम पालीवाल) 'नर पुंगव तेजावत और भीलों का बलिदान' (मनोहर कोठारी) 'स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल से प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाएँ, (डा. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी) 'महान वीरांगना महारानी दुर्गावती' (हेमाली व्यास) 'भगतसिंह से मेरी अंतिम भेंट' (जयदेव कपूर) 'भरतपुर महाराज सूरजमल (विट्ठल पारीक) उल्लेखनीय प्रभावी तथा मन मस्तिष्क पटल पर अमिट छाप छोड़ने वाले हैं।

शौर्य–अंक की विशिष्ट कविता–धर्मिता में 'वीर शहीदों की माता' 'देशभक्त की जय जय।' (डा॰ चक्रध ार नलिन) 'बलिदानी वीरों की याद में' (देवकीनंदन कुम्हेरिया) 'कृष्णा का बलिदान' (पुरुषोत्तम देवपुरा) स्वांतत्र्य यज्ञ की दीप्तशिखा (श्रीकृष्ण शर्मा) 'स्वतन्त्रता का स्वर्ण जयन्ती वर्ष' (शिवनारायण उपाध्याय 'शिव') महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें पढकर मन और आत्मा जहां स्वाभिमान और तेजस्विता से गर्वित्त हो उठता है, वहीं पाठकगण को बांछे हैं। खिलना स्वाभाविक हैं।

सभी सामग्री उपयोगी, विचारणीय तथा संग्रणीय है। मुखपुष्ठ श्रीकृष्ण द्वारा शंख ध्वनि अत्यंत आकर्षक तथा रोचक है। हर पृष्ठ पर राणा प्रताप का लघु चित्र हममें वीरत्व का जोश भर देता है।

डा॰ चक्रधर नलिन, संपादक 'महावाणी', रायबरेली

समीक्षा : दो

बहुत पहले एक कविता पढ़ी थी 'यह मत समझो' उसकी एक पंक्ति मुझे अब भी स्मरण है। वह पंक्ति थी ''मे पृथ्वीराज का एक पत्र, वापस प्रताप बुला दूंगा''। तब मुझे इस पृथ्वीराज के विषय में अधिक पता नहीं था, बाद में हुआ और इस पत्र का महत्व अमिट प्रभाव छोड़ गया। इस पत्र की विशद चर्चा श्यामप्रकाश देवपुरा ने प्रशंसनीय लेख में की है। महाकवि भूषण, श्याम नारायण पाण्डेय की अपनी कृतियों का सजीव वर्णन भी इस विशेष अंक में किया गया है जो सर्वथा उचित एवं श्लाध्य है। आधुनिक काल की वीरता ''मैना का बलिदान, महान वीरांगना दुर्गावती'', और नरपुंगव तेजावत जी विषयक लेखों में समविष्ट की गई है। 'प्रताप' (पत्रिका) की शौर्य गाथा भी पठनीय है। इस प्रकार यह अंक शौर्य की दृष्टि से संग्रहणीय और पठनीय दोनों है और आज की दुनिया में शौर्य को उत्तेजित संगठित करने में महत्त्वपूर्ण साधन है, यद्यपि यह भी सत्य है कि आज 'शौर्य' के नये अर्थ हो गए है, और उसका मुख्य उद्देश्य 'विश्व शांति' बन गया है जिसमें युद्ध शौर्य नहीं, सामंजस्य पर बल दिया जाता है। तथापि, वीरभूमि राजस्थान का यह यशगान बहुत सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ है।

अंक को पढ़कर कुछ काले धब्बे भी दिखाई पड़ते है जैसे तेजावत जी विषयक लेख में वहाँ के सामन्ती शासन द्वारा उनको दी गई यातनाएँ, कारावास। मन कह उठता है मेवाड़ में काश ऐसा न किया गया होता। उड़ना पृथ्वीराज वाले पुरूषोत्तत पालीवाल के लेख में आए विष दिए जाने के षड़यन्त्र, श्रीनगर के ठाकुर कर्मचन्द्र पंवार का ''मशहूर लुटेरा'' होना। मध्ययुग के ये कलंक अब नहीं रहे, प्रसन्न होने की बात है।

मुझे 'कवि सोमनाथ का वीरकाव्य' (डा. विष्णुचन्द्र पाठक) लेख बहुत अच्छा लगा, इसलिए कि इनके विषय में अधिक जानकारी अभी केवल विद्वानों में ही है, इनका अधिक किया जाना चाहिए, जनता को जानकारी दी जानी चाहिए। प्रथम वीरकाव्य पृथ्वीराज रासो के विषय में भी सामग्री होनी चाहिए।

यों तो सुझाव कितने ही दिए जा सकते है, परन्तु सीमित पृष्ठों में जो जानकारी इसमें संकलित की गई है, वह इसे 'चांद' के फांसी अंक, हिन्दू पंच के 'बलिदान अंक' जैसे चर्चित अंको की श्रेणी मे बिठाएगा, निवेदन है कि शौर्य को उत्तेजना देने वाली सामग्री देते रहें, देश की वीरता को बढ़ाने वाली सामग्री की उपादेयता कभी कम नहीं होती। हार्दिक बधाइयां

बाबूराम वर्मा

समीक्षा : तीन

मै लौटा प्रवास से ज्योंही, देखी डाक तुरन्त।
मुझे मिले ये अंक साथ ही, देखे अथ हो अन्त।।
जिज्ञासा अभिलाषा जैसी, वैसे ही अनुकूल।
सुन्दर सज्जा, सुन्दर मुद्रण, सुन्दर रचना फूल।।
जितनी करूं प्रशंसा थोड़ी, फिर संजय फिर श्याम।
ये हाथ दो आँखें ये दोनो, बुद्धि हृदय ललाम।।
शौर्य अंक अनुकूल शौर्य के, शंख निनदित कृष्ण।
फूंके प्राण सृजनकारों में, सबकी भाषा उष्ण।।
क्या कविताएँ, क्या रचनाएँ, लेखन अनुपम श्रेष्ठ।
अद्भुत तुम उससे भी अद्भुत, निखरी कला यथेष्ठ।।
तुम उत्कृष्ट सबही रूपों में, लेखक व समम्पादक।
पत्र कारिता में उतरे तो, श्रेष्ठ सभी विधि लायक।।
क्या ममत्व अपनत्व भरा है, क्या माधुर्य मिठास।
हुआ जा रहा दिग्दर्शन यह, माध्यम ग्रंथ प्रकाश।।
हर श्रृंगार बने हर एक का, प्राणों का श्रृंगार।
पाटोत्सव के ग्रंथ सभी हैं, जन जन कंठा हार।।
चलती रहे लेखनी सुन्दर, सतत सृजन में लीन।
स्वस्थ रहो तुम मण्डल के संग, आत्मज पिता प्रवीण।।
अभिनन्दन अभिवादन मय है, मेरी यह अभिव्यक्ति।
देता रहे श्रीनाथ प्रभु नित, अभिनव सृजन सशक्ति।।
और हटाओं अंग्रेजी का यह अनुरोध प्रबल।
निश्चित ही सक्रिय बनेंगे, हिन्दी प्राण अटल।।

कार्यक्रम पर एक दृष्टि-

आयोजन भी देखा और संयोजन भी,
आलोड़न भी देखा और समर्पण भी,
सम्पादन भी देखा और समापन भी,
देखा जो अपूर्व था वह अपनापन भी,,
अद्भुत था नजारा सब विमोहित थे,
शैली थी, सलीका था, सब प्रफुल्लित थे,
आयोजन वह एक था जो मैने देखा।
स्तब्ध सब, अवाक् सब, क्या करें लेखा।।

सम्पादक संयोजक के प्रति :

स्थान दिया ग्रंथ में, इसके लिए आभार।
पात्र समझा आपने, उसके लिए आभार।
स्नेह ऐसे ही सदा होता रहे साकार।
बरसा करे हम पर सदा यों आपका दुलार।।
हे सम्पादक साहित्यिक कवि लेखक धर्म धुरीन।
अमर रहे श्रम सृजन तुम्हारा युग युग नित्य नवीन।।

✍ पुरुषोत्तम देवपुरा, मावली

हरसिंगार अंग्रेजी हटाओं अंक

समीक्षा : एक

आदरणीय देवपुरा जी, सादर नमस्कार।
"हरसिंगार" का अंग्रेजी हटाओं अंक मिला। धन्यवाद !

अंक बहुत अच्छा है। संपादकीय से ही जो यथार्थ का प्रवाह सामने से गुजरना प्रारंभ होता है, तो कई प्रश्न और कई प्रेरणादीप प्रज्वलित कर के ही थमता है और जो मूल प्रश्न हमारा राष्ट्रभाषा के प्रति गर्व, आत्माभिमान है, उसका पैदा होना; वह पैदा करने में "हरसिंगार" का यह अंक सफल होगा। आप तो बधाई के पात्र हैं ही साथ ही भविष्य आपका ऋणी भी रहेगा।

यह एक विडंबना ही कही जा सकती है कि सिंहासन पर बैठते ही सब रंग बदलने लगते हैं। तात्पर्य यह कि हम किसी से कोई आशा नहीं कर सकते। हमें अपने आत्माभिमान की रक्षा के लिए स्वयं लड़ना होगा। ''अंग्रेजी हटाओ आंदोलन'' को देश के कोने–कोने में पहुँचाना होगा। हर भारतीय को अंग्रेजी परस्तों के स्वार्थपोषित षड्यन्त्रों को पहचान कर उसका अंत करना ही होगा।

आशा है आप स्वस्थ व सानंद होंगे।

राजा अवस्थी, आजाद चौक, कटनी

समीक्षा : दो

आदरणीय श्री देवपुरा जी,

आपके द्वारा प्रेषित त्रैमासिक ''हरसिंगार'' का अंक ३–४, वर्ष १ जुलाई, दिसम्बर ९८ मिला। पढ़ कर पत्रिका मन को भा गई। सम्पादकीय झकझोर देने वाला है। बिना अनुदान लिए आप इस संस्था का उत्तम रूप में संचालन कर रहे हैं– एतदर्थ आप का प्रयास अभिनन्दनीय है।

पद्य खण्ड के अन्तर्गत प्रकाशित चौबीस कविताएँ राष्ट्रभाषा हिन्दी का उद्घोष करने वाली हैं। गद्य खण्ड के सभी सोलह लेख पठनीय और मननीय बन पड़े हैं। ये सभी लेख राजभाषा हिन्दी की सर्वांगीण उभति के लिए सम्प्रेरक हैं। विविधा खण्ड में अंग्रेजी लाबी के षड़यन्त्र का पर्दाफाश मिलता है, साथ ही देशी–विदेशी साहित्यकारों के हिन्दी विषयक विचार मिलते हैं। समीक्षा खंड के अन्तर्गत 'हीरक जयन्ती परिशिष्टांक', 'कुंभनदास अंक' और 'हरसिंगार के प्रवेशांक' विषयक पाठकों एवं विद्वानों की समीक्षाएँ स्पष्ट करती हैं कि ये तीनों अंक आपके द्वारा स्थापित मील के पत्थर हैं। उपनिषद् खण्ड में भी हिन्दी का ही आख्यान मिलता है और भारतीयों के लिए हिन्दी के प्रति आग्रह और अंग्रेजी के व्यामोह से मुक्ति का संदेश मिलता है।

कुल मिला कर प्रस्तुत अंक अपनी श्रेष्ठ सामग्री, कविताओं, लेखों और सुन्दर मुद्रण आदि ही दृष्टि से संग्रहणीय और अभिनन्दनीय बन पड़ा है।

हमारा साधुवाद–

डा॰ पुष्पा चौरसिया ६/२७०, चन्द्रालय, फ्रीगंज, उज्जैन

समीक्षा : तीन

हरसिंगार : (त्रैमासिक)। संपादकः- भगवती प्रसाद देवपुरा, प्रकाशकः- साहित्य-मण्डल श्रीनाथद्वारा-३१३३०१ पृष्ठ १३५ः वर्षः १ अंकः ३,४ मूल्यः तीस रूपये।

समीक्षित 'अंग्रेजी हटाओ अंक' पद्य खण्ड, गद्य खण्ड विविधा खण्ड 'समीक्षाएं' उपनिषद्–खण्ड 'काव्य खण्ड' में विभाजित है। सामयिक सम्पादकीय में आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी के नाम पर हिन्दी दिवस मनाने के अरण्यरोदन पर बेबाक विचार प्रस्तुत कर देश के भाषा पीठ से अंग्रेजी हटाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। आपने जीवन में हिन्दी को अपनाने का जो प्रण करने या लेने का संकल्प व्यक्त किया तथा काले अंग्रेज

की मानसिकता परिवर्तन की सलाह दी वह समीचीन है। मुख पृष्ठ पर ''जिसको हिन्दी से प्यार नहीं, वह कैसा हिन्दुस्तानी है'' हिन्दी के माथे चन्दन है अभिनंदन है अभिनंदन है।' होगी कोई भाषा रानी पर हिन्दी तो पटरानी है।' 'यह देव नागरी अपनी है इसकी माला जपनी है।' 'हिन्ददेश की भाषा हिन्दी, आओ सब श्रृंगार करें।' हिन्दी है जन–जन की भाषा, हिन्दी नहीं तमाशा है' 'हिन्द देश की भाषा हिन्दी, हम सब उससे प्यार करें।' 'यह देश ऋणी है हिन्दी का, यह बात न हमें भुलानी है।' बच सके फसल आजादी की हिन्दी की बाड़ लगानी है' के पांच चित्रों के साथ उद्घृत काव्यांश हिन्दी के प्रति हमारी सहज चिन्ता को व्यक्त करते हैं। प्रश्न उठता है कि हिन्दी का दुर्भाग्य कब समाप्त होगा तथा उसे अपना गरिमामय उद्घोषित स्थान कब प्राप्त होगा, समय की प्रतीक्षा में सभी राष्ट्र प्रेमी देशभक्त जन आतुरता से प्रतीक्षाकुल है।

प्रस्तुत त्रैमासिक का पद्य खण्ड सर्वाधिक प्रभावी, मन में अग्नि जलाने वाला तथा प्रभावोत्पादक है। हिन्दी भाषा के गौरव–गान सम्बन्धी प्रमुख कविताओं में 'हिन्दीः माथे की बिन्दी' (डा. सारस्वत मोहन मनीषी) 'हिन्दी को अपनाओ' (डा. स्वर्ण किरण) जय हिन्दी (ड़ा. गणेशदत्त सारस्वत) हिन्दी और राजनीति' (डा. परमलाल गुप्त) हिन्दी (डा. गणेशदत्त) भाषा की मिठास' (ए. अरविन्दाक्षन) हिन्दी है अस्मिता हमारी' (डा. आनन्द नारायन शर्मा) 'राष्टभाषा हिन्दी के प्रतिः अभिनंदन है अभिनंदन है' (श्रीकृष्ण शर्मा) 'दे न सके जो भाषा' (श्याम सुन्दर घोष) 'भारती हमारी मां (डा. सत्यकामं शिरीष) अटलजी से (पुरूषोत्तम देवपुरा), 'हिन्दी कितनी प्यारी है' (डा. बलराज मिश्र) 'कारा तोडो भारतवासी (डा. पी. के. चन्द्रन) 'तोड़िये जंजीरें: संस्कृति से जुडों' (डा. धनश्याम व्यास) 'हिन्दी का श्रृंगार' शिव नारायण उपाध्याय 'शिव' 'जनभाषा हिन्दी (जगदीश चन्द्र शर्मा) 'अंगरेजी हटाओ' (रामशरण पीतलिया), 'हिन्द की भाषा हिन्दी है' (डा. त्रिभुवननाथ शर्मा मधु) 'विकट परिस्थिति आज' (किशनवीर यादव) 'हिन्दी बहुजन की वाणी है' (डा. विश्वदेव शर्मा) 'हिन्दी हैं हम हिन्दी बोलें' (डॉ. पुष्पा चौरसिया) 'यदि हम हिन्दी से प्यार करें, (लक्ष्मी चन्द्र शर्मा 'मंयक') 'जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है, (डा. ज्योति पुंज पण्डया, भगवान मकरन्द, हरि शर्मा उस्ताद, लक्ष्मीचन्द्र शर्मा 'मंयक') उल्लेख्य, विवेच्य और ह्रदयान्दोलित करने वाली हैं। इनमें राष्ट्रभाषा प्रेम जगाने, उसे गर्व से अपनाने और राष्ट्रप्रेम से जोड़ने की प्रेरणात्मक शक्ति है।

गद्य खण्ड के प्रमुख सुप्रतिष्ठित लेखकों में सर्वश्री पोलि विजय राधव रेडडी (हिन्दी की उपेक्षा के लिए हिन्दी भाषी कम जिम्मेदार नहीं) गजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी (हिन्दी का गौरव बढाओं) डा. शिव प्रसाद शुक्ल (हिन्दी के उत्थान में हिन्दी फिल्मों का योगदान) डा॰ बाबूराव जोशी (हमारी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो, राष्ट्रभाषा हो हिन्दी) डा. सुषमा शर्मा (राजभाषा के रूप में हिन्दी) डा॰ आरसु (हिन्दी साहित्य का केरलीय संदर्भ) शिवनारायण उपाध्याय 'शिव' (यदि मैं तानाशाह होता तो हिन्दी एक दिन में आती : महात्मा गांधी) साहित्य वाचस्पति भगवती प्रसाद देवपुरा (आखिर ये राजनेता यह घिनौना खेल क्यों खेलते हैं) डा॰ मीरा दीक्षित (हिन्दी उत्थान के लिए आखिर हम क्या करें) आचार्य डा॰शंकर राव कप्पिकेरी (दुश्चक्रों की शिकार : राजभाषा हिन्दी), प्रो॰ डा॰ दीनानाथ शरण (अंग्रेजी के बिना सद्गति कहाँ), डा॰ब्रजविहारी निगम (मातृभाषा और राष्ट्रभाषा) डा॰ हर्षनंदिनी भाटिया (राजभाषाः संपर्क भाषा हिन्दी) वन्दना वीथिका (अंग्रेजी की अनिवार्यता क्यों) विश्वम्भर प्रसाद गुप्त बंधु (अंग्रेजी लॉबी के षड्यंत्र ने फिर सिर उठाया) राजेन्द्र भाटिया (मानसिक गुलामी) के आलेख हिन्दी के अतीत, वर्तमान तथा भविष्य का रेखांकन करते हैं। इसमें मधुसूदन गौरवा, पुरूषोत्तम

पालीवाल, श्याम प्रकाश देवपुरा के क्रमशः अहिन्दी भाषी साहित्यकारों के हिन्दी के बारे में विचार, और राजनेता यह कहते हैं' 'साहित्यकारों के हिन्दी के प्रति उद्‌गार "विदेशियों के हिन्दी के बारे में कथन" हिन्दी की विशिष्टताओं तथा महत्व की स्वीकारोक्ति प्रगट करते हैं' 'साहित्यकारों के परिचय के साथ ही वह शर्मनाक पत्र भी पढने को मिला जिसके दुश्चक्र में अमेरिका, इग्लैंड तथा फ्रास के इसाइयों के दबाव में फ्रांसी केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी में अपना कामकाज करती है। विद्वत् प्रवर रामशरण पीतलिया, विट्ठल पारीक, डा. घनश्याम व्यास, सत्यकाम 'शिरीष', डा० स्नेहलता के आलेख उपयोगी और पठनीय हैं। प्रस्तुत हिन्दी विषयक अंक बेजोड़, अप्रतिम और संग्रहणीय है तथा हिन्दी का भाषायी इतिहास प्रस्तुतिकरण में उदाहरणीय है।

समीक्षकः डा. चक्रधर 'नलिन',
अध्यक्ष रचनात्मक संघ, रायबरेली

समीक्षा : चार

हरसिंगार, वर्ष १ अंक ३–४, 'अंग्रेजी हटाओ अंक'

साहित्य–मण्डल अंग्रेजी का उसके अनुचित स्थान पर कब्जा जमाए रखने के विरुद्व है और न्याय तथा औचित्य दोनो दृष्टियों से उसकी जगह हिन्दी को लाने के लिए कृत संकल्प हैं। अभी पिछले कुछ दिन हुए उसने एक पुस्तक भी इस विषय पर प्रकाशित की थी जिसमें देश के गणमान्य विचारकों के लेख, कविताएँ आदि संकलित किए गए थे। यह विषय उनकी पीड़ाओं से इतना अधिक जुड़ा हुआ है कि मण्डल ने यह संयुक्त विशेषांक भी उसी मर्म छूने वाले विषय को लेकर प्रकाशित किया है।

कविताओं का खण्ड बहुत अच्छा बन पड़ा है, हिन्दी का गुणगान तथ्याधारित और मार्मिक है जिसकी टेक 'जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है', कही जा सकती है। प्यार तो सभी को होगा इसमें सन्देह नहीं, परन्तु हमारे देश में अपने सकुंचित स्वार्थो के कारण बहुत सारे लोग, वर्ग ऐसे भी है जो हिन्दी आने में अडंगा डालते हैं, उसके आने का विरोध करते हैं, तरह–तरह यदि "तब" लगाते है, हिन्दी की कमियाँ गिनाते हैं, और अपरोक्षत अंग्रेजी का पक्ष समर्थन करते हैं।

इसी प्रकार ज्यादातर लेखों का स्वर भी आन्दोलनात्मक हैं, कहीं–कहीं प्रखर और तेजस्विता भरा भी, जैसे भगवतीप्रसाद देवपुरा जी का यह अंश 'धिक्कार है इस राजनीति को जो देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी को तिलांजलि देकर एक विदेशी गुलामी की प्रतीक भाषा अंग्रेजी को लोगो पर थोप रही है"। कुछ लेख आँखें खोलने वाले भी हैं जैसे हिन्दी की उपेक्षा के लिए हिन्दी भाषी कम जिम्मेदार नहीं (पौलि विजय राघव रेड्डी) का यह अंश "नौकरियों के मोह में पड़ कर यदि हिन्दी भाषी अंग्रेजी को पकड़े रहेंगे और हिन्दी की उपेक्षा करते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं, जबकि हिन्दी भाषी प्रदेशों मे अंग्रेजी राजभाषा बन जाएगी, तब भी जैसे कि वे अंग्रेजी के राजभाषा के कारण अपने को पिछड़े हुए पा रहे है, हिन्दीतर भाषियों के मुकाबले में अपने को पिछडा हुआ पाएंगे' हिन्दी साहित्य का केरलीय संदर्भ' (डा. आरसु) जानकारियों से भरा लेख है। बहुत अच्छा। प्रो० दीनानाथ शरण का व्यंग्यपूर्ण लेख भी अक्षछा लगा, परन्तु 'गंभीर चिन्तन' वह विदूषक जैसा लग रहा है, इसी प्रकार "फिल्मों का योगदान भी बोलने वाली हिन्दी के प्रसार में तो ठीक है परन्तु हिन्दी का यह युग अथवा कार्य पूरा कर चुका, और उस दिशा में चलचित्र और प्रदर्शन जो भूमिका निबाह रहे हैं उसकी ओर प्रो.

दीनानाथ शरण ने जो अंगुलि उठाई है वह चिन्ता ही बढाती है। अच्छा हो, हम हिन्दी वाले 'गंभीर' बातों की और ज्यादा ध्यान दें।

डा. हर्षनन्दिनी भाटिया का लेख संविधान और विधि पर आधारित है और अपनी जगह ठीक है। कठिनाई तब होती है जब इन संवैधानिक प्रावधानों का पालन नहीं किया जाता अथवा उन्हें मनमाना अर्थ दे दिया जाता है, अथवा शीघ्रता के कारण न कर पाने का तर्क दे दिया जाता है। व्यवहार वस्तुतः ऐसी दशाओ में संविधान के मर्म से काफी दूर चला जाता है।

दो लेख ऐसे हैं जो हिन्दी की 'आन्दोलन करो' लीक से हटकर हैं और आत्मविश्लेषणार्थ इनकी चर्चा अवश्य की जानी चाहिए। पहला, वन्दना वीथिका का 'अंग्रेजी के अनिवार्यता क्यो? वे कहती है– "आज हिन्दी की स्थिति अत्यन्त दयनीय है और इसकी पूरी जिम्मेवारी है देश के नेताओं पर, सरकार की गलत नीतियो पर।...... लोग हिन्दी को हेय दृष्टि से देखते हैं।......... समझ में नहीं आता कि हिन्दुस्तान में ही हिन्दी की ऐसा दुर्दशा क्यों? आज तो हिन्दुस्तान में ही हिन्दी कैद हो गई है। उसे बंधनमुक्त करना होगा।" (पृ. ७४ व ७५) पर कैसे?

दूसरा लेख है डा. मीरा दीक्षित का (पृ. १३०–२)। उनका यह अंश विचारणीय है 'अंग्रेजी स्कूलों को कोसकर, गाली देकर काम नहीं चलेगा, बल्कि उनके कौशल की बराबरी कर उन्हें पछाडना चाहिए। यहां बच्चों को उत्तीर्ण करने और उनके सर्वांगीण विकास के मानदण्ड कठोर होते हैं।" तात्पर्य स्पष्ट है हमें हिन्दी (स्कूलों) के लिए भी ऐसा ही करके उनसे तुलनीय (बल्कि बढ़कर) परिणाम प्रस्तुत करने चाहिए। परन्तु कैसे?

एक अन्य अंश 'हिन्दी को सम्पूर्ण राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे पहले केवल हिन्दी भाषी प्रान्तों की पूर्णरूपेण राजभाषा बनाना होगा' (पृ. १३२) डा. मीरा का एक अन्य लेख (पृ. ५८–६०) भी है जिसमें उन्होंने एक सूत्र दिया है अन्य भारतीय भाषाओं के संदर्भ में "गले मिलकर गिले दूर करें। "परन्तु हिन्दी को वास्तविक राजभाषा या राष्ट्रभाषा बनाने या बनवाने के लिए केवल हटाने से काम नही चलेगा। मेरा विचार है कि इसके लिए हिन्दी को "सर्वोपयोगी" अपरिहार्य (यानी जिसके बिना काम ही न चले) भाषा बनाना होगा।

यह विशेषांक बहुमूल्य है। डा. घनश्याम व्यास का लेख एक गौरव भरा योगदान है। हिन्दी विषयक बडे आदमियो की उक्तियों का संकलन बहुत उपयोगी है। हिन्दी की समस्याओं का अच्छा दिग्दर्शन है (अंग्रेजी को बढ़ाने के लिए 'शर्मनाक पत्र' को उद्धत करना उपयोगी है, परन्तु क्या यह ऐसी 'खोज' है जिसे कोई पहले से नहीं जानता। अंग्रेजी को टिकाए रखने में गड़े पांव अखिल भारतीय सेवाओं (भारतीय प्रशासन सेवा अंग्रेजी नाम आई. ए. एस.) के हैं, यद्यपि उनमें भी इक्के दुक्के हिन्दी समर्थक हैं परन्तु 'अनुशासन' के नाम पर सबसे बड़ा सब पर डर छाया रहता है, और यहाँ तो भारत का प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी भी अपनी परिस्थितियों के कारण यह कहने को विवश हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी भाषण करना भारत की अपेक्षा कहीं अधिक सरल है।

भारत की स्थिति सचमुच दयनीय है कि यहाँ अच्छी से अच्छी और देश के लिए हितकर किंवा अनिवार्य बातों तक का विरोध करने वाले मिल जाते है। मिलते ही नहीं, वे विरोध के लिए सभी तरह के हथकण्डे अपनाने के लिए स्वतन्त्र होते हैं।

हरसिंगार का यह विशेषांक इस दुःख स्थिति का निवारण कर सके। इसके लिए आवश्यक है कि इसका लक्ष्य कभी सामने से आझल न हो और हम निरन्तर बिना थके बिना झुके उसकी ओर बढ़ते चले जाएँ, धीरे-धीरे ही सही परन्तु बिना मुड़े। १५ वर्ष की दी गई छूट को अनन्तकाल तक चलने वाली छूट न बनाएं। लक्ष्यों को पूरा करने में ईमानदारी बरतें, न पूरा करने वालो को यथोचित दण्ड भी दें। तभी होगा यह, अन्यथा नहीं।

✍ बाबूराम वर्मा,

समीक्षा : पांच

मान्यवर देवपुरा जी,

नमस्कार ! रजिस्टर्ड डाक से 'अंग्रेजी हटाओं अंक'' के साथ ही 'हरसिंगार' का 'शौर्य-अंक' भी मिला। धन्य हैं आप, धन्य है आपकी संस्था, दूर कर दी मेरी मनोव्यथा ! पूरा देश हर-हाल बदहाल है और उदासीनता, तेजहीनता और निराशाओं में डूबा हुआ ! ऐसे विकट समय में आपका 'शौर्य- अंक' हम आम-लोगों में उत्साह का संचार करता है. . . . नसों में उष्ण रक्त का प्रवाह करता हैं। अपने समय में कभी बुद्ध ने, कभी ईसा ने, कभी कबीर ने हताश-निराश जनता में जागरण लाकर उत्साह जगाया था . . . . और हिन्दी जगत् में वही काम आज आपने किया है –

'' फेंकता हूँ लो तोड़-मरोड़
अरी निष्ठुरे ! बीन के तार;
उठा चाँदी का उज्ज्वल शंख
फूँकता हूँ भैरव हुंकार ! ;;

'हरसिंगार' के 'शौर्य अंक' के आवरण-पृष्ठ पर कृष्ण का यही जयघोष निनादित है।

इस अंक में वीरता और शूरता के धनी कवि-कलाकारों, ऐतिहासिक महापुरूषों पर आपने भरपूर सामग्री दी है और अंक को पठनीय, संग्रहनीय ऐसा बनाया है जो बहुत दिनों तक स्मरण किया जाता रहेगा।

अंक ३-४ आर्थात् ''अंग्रेजी हटाओं'' वास्तव में बहुत बढ़िया निकला है। आपने हिन्दी के समर्थन में हिन्दी के हित में, हिन्दी को यथोचित न्याय दिलाने के लिए जैसा बढ़िया अंक निकाला है, संपूर्ण हिन्दी-जगत् में अनूठा है, बेमिसाल है !

कविताएँ, लेख, सूक्तियाँ, समीक्षाएँ सब एक दूसरे की जबाब हैं, और सब है, ला-जबाब ! हर तरह से आपने हिन्दी को उठाने की कोशिश की है। काश, हिन्दी के नाम पर बनी संस्थाएँ ऐसा कुछ कर पातीं।

यह अंक पठनीय और संग्रहणीय ही नहीं अपितु चिंतनीय है। तमाम हिन्दी जनों को और सरकार को इस पर चिंतन, मनन और कार्यान्वयन करना चाहिए।

मोटे, साफ अक्षरों में इस पत्रिका के इस विशेषांक की छपाई धर्म-ग्रंथ जैसी है।

✍ **प्रो.डा॰ दीनानाथ 'शरण' दरियापुर, पटना**

हर सिंगार

समीक्षा : छः

अंग्रेजी विरोध की खातिर ''हरसिंगार'' ने यह १४० पृष्ठ का मोटा अंक निकाला है। बड़ी ललक से आद्यन्त पलट जाने पर भी केवल नारेबाजी और फतवेबाजी के सिवा कोई ठोस कार्यक्रम हाथ नहीं लगा। ''अंग्रेजी हटाओं'' आन्दोलन वालों ने जो बाते दशकों पूर्व कही थी, उन्हें ही बार बार पूरे अंक में दुहराया गया है। अधिकतर लेख भारत की बहुभाषिकता, भाषयी अस्मिता और भाषा परिवर्तन व विकास की भाषा वैज्ञानिक समझ का परिचय देने में समर्थ नहीं लगे।

पोलि विजयराघव रेड्डी हाथ धोकर हिन्दी भाषियों के पीछे पड़े हुए हैं जबकि यह सच है, कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में न तो अंग्रेजी राजकाज की भाषा है और न सामान्य संपर्क की। कुछ अंगरेजीदा साहबजादों के कारण पूरे हिन्दीभाषी समुदाय को गाली देना चर्चित होने का छिछला स्टंट तो हो सकता है परन्तु इसे शिष्टता नहीं माना जा सकता। गजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी ने भी अंग्रेजी पढ़ाये जाने पर आँसू बहाए हैं, परन्तु उन परिस्थितियों की चर्चा नहीं की है जिनके चलते भारतीयों को यह जहर पीना पड़ रहा है। ''हिन्दी साहित्य का केरलीय संदर्भ में'' अनेक बार घीसीपीटी सूचनाओं को दुहराया गया है। डा॰ बाबूराव जोशी, भगवती प्रसाद देवपुरा, डा॰ मीरा दीक्षित, डा॰ ब्रज बिहारी निगम, डा॰ हर्षनन्दिनी माटिया तथा डा॰ स्नेहलता श्रीवास्तव के लेख सुचिंतित हैं और हठधर्मिता से मुक्त हैं।

'पूर्णकुम्भ', दिसंबर-९८

(पत्रिका दीर्घा)

समीक्षा : सात

साहित्य मंडल नाथद्वारा ने हिन्दी दिवस को अंग्रेजी हटाओं दिवस के रूप में मनाया

राजस्थान की सुविख्यात अग्रणी साहित्यिक संस्था साहित्य–मंडल के तत्वावधान में १४ सितम्बर, ९८ को हर वर्ष की भाँति ''अंग्रेजी हटाओं दिवस'' के रूप में बड़े भव्य कार्यक्रमों सहित मनाते हुए अंग्रेजी के सम्मोहन से जनता को सावधान रहने की अपील की गई। प्रातः १० बजे एक विशाल रैली निकाली जिसमें देश भर से पधारे अनेक हिन्दी सेवियों, विद्वानों, वरिष्ठ नागरिकों व संस्थाओं द्वारा संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बालकों ने भाग लिया। रैली में लोग बैनर लेकर नारे लगा रहे थे।

हिन्दी दिवस पर दो बजे संस्था के प्रेक्षागार में मुख्य समारोह आयोजित किया जिसमें विद्यालय की बालिकाओं द्वारा ''भाषा–भगिनि'' नाटिका का प्रभोवात्पादक मंचन किया। देश की प्रमुख भाषाओं के रूप में बालिकाओं ने भाषागत क्षेत्र कें पहनावें में उस भाषा के साहित्य का परिचय दिया, अन्त में हिन्दी का स्वागत किया। भारत की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है, और सब भाषाएँ बहिने हैं, बहनें आपस में प्रेम करती हैं, लड़ती झगड़ती नहीं हैं। हिन्दी सबसे बड़ी बहन है अतः सभी भाषाओं ने उसे श्रृंगारित कर उसकी अभ्यर्थता की तब सारा हाल तालियों की गड़गडाहट से गूंज गया।

मुख्य अतिथि श्री नरहरि ठक्कर, श्रीनाथ जी के बड़े मुखिया एवं अध्यक्ष मंत्रिमण्डल के मुख्य निष्पादन अधिकारी जी थे। मंच पर संस्थाध्यक्ष श्री मनोहर जी कोठारी, स्वतंत्रता सेनानी श्री नरेन्द्र पाल सिंह चौधरी आदि थे।

पाठशाला की बालिकाओं ने सरस्वती वन्दना की। संस्था के अध्यक्ष मनोहर कोठारी ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके पश्चात् प्रमुख हिन्दी सेवी, कामवन के श्री रामशरण पीतलिया, नागपुर के श्री घनश्याम व्यास, कानपुर के डा॰ सत्यपाल शिरीष, झाबुआ की श्रीमती डा॰ स्नेहलता ने पत्र वाचन किया।

इस अवसर पर हिन्दी सेवी उदयपुर के दर्शनसिंह रावत, उड़िसा के डा॰ मणीन्द्र महन्ती, नागपुर के डा. घनश्याम व्यास, कानुपर के डा॰ सत्यकाम शिरीष को शाल, इकलाई, श्रीनाथजी की छबि एवं संस्था के प्रकाशनों की भेंट कर सम्मानित किया और प्रशस्ति–पत्र प्रदान किये।

इस अवसर पर उदयपुर के डा॰ श्रीकृष्ण जुगनू तथा ज्योति पुंज पण्ड्या, कामवन के श्री विट्ठल पारीक "जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है" शीर्षकान्तर्गत काव्य पाठ किया।

संस्था के प्रधानमंत्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा द्वारा सम्पादित "हर–सिंगार" का अंग्रेजी हटाओ अंक का मुख्य अतिथि द्वारा लोकार्पण किया गया तथा देवपुरा जी ने सभी आगुन्तकों के सहयोग के लिए आभार प्रदान किया।

✍ दर्शनसिंह रावत, उदयपुर
साभार– 'भारती', मुम्बई हिन्दी विद्यापीठ

अंग्रेजी हटाओं आन्दोलन

समीक्षा : एक

परमादरणीय संपादक जी,

मेरे दो तीन पत्र भेजने के बाद आज दिनांक १६–१२–६८ को 'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' नामक ग्रंथ रजिस्टर्ड डाक से मुझे प्राप्त हुआ। पुस्तक अर्थात् ग्रंथ भेजने के लिए सर्वप्रथम आप मेरा अभिवादन स्वीकार करें। आप सचमुच धन्यवाद के पात्र है। आपकी सह्रदयता ने मेरा मन मोह लिया है।

आपको दूसरी बार मैं पुनः धन्यवाद देता हूँ इस ग्रंथ के सफल प्रकाशन और इसकी साज–सज्जा के लिए। मुझे ये ग्रंथ भले ही एक वर्ष के बाद मिला लेकिन इस ग्रथ के बारे मे मैं अपना विचार आज ही प्रस्तुत करूँगा। आपने ग्रंथ मे गद्य एवं पद्य के माध्यम से हिन्दी को सर्वोच्य स्थान दिलाने का जो संकल्प लिया है, उसके लिए आप सचमुच ही बधाई के पात्र है। भारत वर्ष के विद्वानो के विचार एवं दूर देश अर्थात् विदेशी लोगो के विचार हिन्दी के बारे में जानकर अत्यंत प्रसन्नता होती है। हमारे देश के ही कुछ अंग्रेजो की अवैध

। सतानो के कारण हिन्दी को उसका सही दर्जा प्राप्त नहीं हो सका। मालूम नहीं इन अवैध संतानो को अपने देश से ज्यादा प्यारी दूसरे के देश की भाषा प्रिय क्यूँ लगती है।

संपादक जी मैं आपसे विनम् निवेदन करूँगा कि आप अपनी संस्था की गतिविधियो के बारे में मुझे पत्र द्वारा सूचित करेगें और समय समय पर जो संस्था के द्वारा ग्रंथो का लोकार्पण हो, उसकी भी सूचना मुझे देगें। मैं सदा आपको अपना सहयोग अपनी लेखनी के माध्यम से देता रहूँगा।

मनोजकुमार सिन्हा, दुर्गेश्वरी सदन, महाराजाहाता, आरा (भोजपुर)

समीक्षा : दो

यह सच कहा गया है कि विचारों का आदर संपूर्ण ब्राह्माण्ड में होता है। समूचे वातावरण को एक गूंज के साथ समवेत स्वर मिलता है, जो एक एकता का, शांति का प्रतीक है। भारत को स्वतंत्र हुए ५० वर्ष से अधिक वर्ष हो गये हैं पर हम कई क्षेत्रों में इतने सफल नहीं हो पाए हैं जितनी सफलता चाहते हैं। इन्हीं कई क्षेत्रों में भाषा क्षेत्र है। हमें अफसोस है कि अंग्रेज भारत छोड़ गए पर हमें अंग्रेजी भाषा का लबादा पहना गए जिससे हमारी हिन्दी भाषा में कमजोरी आ गई है। इस कमजोरी का कोई फायदा न उठाए इसी का हल हमें मिलकर करना है। कमजोर को सताना प्रकृति का नियम है। कमजोरी को दूर कैसे करें, समवेत स्वर में इस समस्या का हल करना है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत कृति है जो अहिंसा के पाठ के साथ–साथ हिन्दी भाषा के गौरव की श्री वृद्धि करती है। संपादन की दृष्टि से देवपुराजी का कार्य सराहनीय है। मुखपृष्ठ एकता के सूत्र को दर्शाती है; जिसमें आवाज है, संकल्प है और गौरव भी है। भाषा की दृष्टि से संपूर्ण कृति स्तरीय, ओजपूर्ण, प्रेरक है– दिशा बोध को हर पंक्ति बल देती है। संपूर्ण सामग्री कर्त्तव्य, संकलन की परिधि है। हमारा देश नारा प्रधान है, लोकतंत्र शासन है अतः हमें बोलने का, लिखने का संवैधानिक आधिकार है। इन्हीं मौलिक, अधिकारों के बल पर हम कर्त्तव्यनिष्ठ हैं। प्रस्तुत कृति इसी कथन को बल देती है जिसमें संकल्प है, साहस है, विश्वास है। इस कृति में तीन खंड है, (१.) पद्य खंड, (२.) गद्य खंड और (३.) राष्ट्रभाषा हिन्दी पर विद्वानों के विचारों का संकलन। पद्य खंड में संकलित कविताएँ हैं। गद्य खंड में महानुभावों के विचारों का संकलन है जो संकलपों के साथ जागृति पैदा करते हैं। तीसरे खंड में विचारों का संचयन है जो हमें प्रेरणा देते हैं। हिन्दी भाषा की अलख जगाकर भाषा के प्रति जागरूक होने का दावा करते हैं– संपूर्ण सामग्री विचारों का मंथन है जिसमें प्रेरणा के स्रोत यत्र–तत्र दिखाई देते हैं। प्रथम खंड में जो कविताएँ हैं– कविगणों की आजपूर्ण वाणी है– हिन्दी भाषा की महिमा, स्तवन के साथ–साथ उस पर आई कठिनाइयों की झलक है तो कठिनाइयों को दरकरने का नुस्खा भी है। हर पंक्ति गौरवपूर्ण होने का दावा करती है, दिश।बोध करवाती हर पंक्ति शीर्षक के साथ कला पक्ष और भाव पक्ष को सौंदर्य देती है– कहीं संकल्प है तो कहीं कर्त्तव्यबोध क्योंकि कवि ही सृष्टा

है, भविष्य दृष्टा है, समाज सुधारक है। कवि की हर कविता की हर पंक्तियाँ हमें दिशाबोध कराती है जैसे हिन्दी में ही काम करो, विश्व मंच पर स्थान दिलाओं, 'मुक्त देश की भाषा' नामक कविता में भगवती शरणजी की पंक्तियाँ उदाहरण के रूप में –

'यह देश हमारा जीवन, हिन्दी धड़कन है
जीवन धड़कन के बीच व्यर्थ व्यवधान न हो'

इस प्रकार पद्य खंड हर कवि की हिन्दी के प्रति रूझान है साथ ही प्रेरणा के स्पंदन हैं।

गद्य खंड में कई आलेख है। जो विचारोत्तेजक हैं– हर विद्वान के आलेख चिंतन, मंनन के पर्याय हैं। हिन्दी भाषा के इतिहास के पृष्ठों को खोलती हैं, साथ ही भाषा पर आए मंडराते बादलों को हटाने पर जोर के साथ–साथ निराकरण करने का निर्णयात्मक पहलू है। देवपुराजी ने अंग्रेजी की दास्ता की पीड़ा को असह्य बताते हुए हिन्दी भाषा के प्रश्न और राष्ट्र की लिपि पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। संकलित लेख ऐसे भी हैं जिनमें राष्ट्रभाषा के तिरस्कार के कारण आक्रोश भरा हुआ है। इस प्रताड़ना को दूर करने के लिए कुछ धमाका तो चाहिए इसी को इंगित करती हुई कृति की संपूर्ण सामग्री राष्ट्रभाषा हिन्दी की संपूर्ण स्थितियों को स्पष्ट करती है। ग्रंथ की हर अच्छाइयों के पीछे लेखकों के विचार हैं, हर शीर्षक उद्‌गारों के साथ सोचने को विवश करते हैं। जैसे 'बढ़ते टी.बी. चैनलों और हिन्दी के प्रति उनकी भूमिका' में लेखक ने इस बात से भी आश्वस्त किया है कि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, सुबह का भूला सांझ को लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता। श्याम प्रकाश देवपुरा जी ने हिन्दी दिवस को दिखावा पर अपने विचारों में करनी और कथनी को दर्शाया है। मनोहर कोठारी ने भारतीय न्यायालयों में हिन्दी की स्थिति से हमें जानकारी दी है। संजय प्रकाश ने राष्ट्रभाषा, राजभाषा हिन्दी की दशा और विषय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। कैलाश बिहारी वाजपेयी ने हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा क्यों है को बताकर हिन्दी को माँ का दर्जा दिया है। राजेन्द्रशंकर जी भट्ट ने देश की स्वाधीनता का अर्थ बताते हुए हम हिन्दी के लिए क्या कर रहे हैं की वास्तविकता दर्शाई है। इस प्रकार हर आलेख इस बात से आश्वस्त है कि वह दिन जरूर आएगा जब अंग्रेजी को हटाना होगा। डा॰ विष्णुचंद्र पाठक जी ने अपने आलेख में कहा है कि हिन्दी में भाषा का रस लोक भाषाओं से ही आएगा। डा॰रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ ने डा॰ रघुवीरजी की हिन्दी सेवा को सराहते हुए, उनकी उम्मीदों को पूरा करना ही रघुवीरजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि कहा है। यह पूर्ण कृति विचारों का लेखा जोखा तथा दस्तावेज है जो संकल्प के साथ कर्तव्य की ओर मुखरित करती है।

समीक्षक- डा॰ सुषमा शर्मा,
साभार- समाचार जगत, जयपुर

साहित्य-मण्डल

राजस्थान की गौरवशाली धरती के दक्षिण अंचल में साहित्य, संस्कृति तथा शिक्षा को समर्पित संस्थान ''साहित्य मण्डल'', श्रीनाथद्वारा की स्थापना १९३७ में हुई थी।

वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी तथा प्रधानमंत्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा हैं।

संस्थान राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं ब्रजभाषा के प्रचारप्रसार में अग्रणी रहते हुए साहित्य सृजन के नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। साहित्य–मण्डल एक संस्था ही नहीं बल्कि एक प्रतिष्ठान की तरह है, जिसकी विविध प्रवृत्तियों की झलक यहाँ प्रस्तुत है–

केन्द्रीय पुस्तकालय :- साहित्य–मण्डल के विशाल पुस्तकालय में ३५,००० पुस्तकें, अनेक हस्त लिखित ग्रंथ तथा देशभर की पत्र पत्रिकाओं के सजिल्द संग्रह मौजूद हैं तथा इनके पाठकों की संख्या लगभग दो हजार है।

बाल पुसतकालय :- नाथद्वारा नगर की चौपाटी पर स्थित बाल पुस्तकालय में लगभग १०००० पुस्तके हैं तथा उन्हें पढ़ने वाले ८०० बच्चे हैं।

वाचनालय :- पुस्तकालय के साथ ही नाथद्वारा की आम जनता के लिए १४० प्रत्रिकाओं का एक वाचनालय संचालित है, जिसमें सम्पूर्ण देश की विविध पत्र पत्रिकाओं को अनोखा संकलन मौजूद है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय :- संस्था के विद्यालय में लगभग ६७५ विद्यार्थी ३० शिक्षक तथा अन्य सहयोगी हैं। विद्यालय परिसर में विशाल इमारत, खेलके मैदान तथा कक्षाओं के कमरे सुख सुविधायुक्त हैं।

अष्टछाप कक्ष :- इस कक्ष में वल्लभ संप्रदाय एवं अष्टकवियों के विविध विषयों तथा अनेक अनेक चित्रों से सुसज्जित कृतियाँ देखने को मिलसकेंगी। साहित्यकारों के लिए यह प्रेरणादायक एवं अमूल्य निधि है।

साहित्यकार कक्ष- इस विशाल कक्ष में प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ चित्र लगाये गये हैं। विद्यार्थियों के लिए यह कक्ष ज्ञानवर्धक तथा दर्शनीय है।

पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष :- इसमें सैंकडों काल कवलित पत्र पत्रिकाओं को रखा गया है, जिससे विद्वान साहित्यकार पत्रकार विद्यार्थी तथा शोधक लाभान्वित होते रहते हैं।

ब्रजभाषा समारोह :- प्रति वर्ष श्रीनाथजी के पाटोत्सव के अवसर पर ब्रजभाषा से संबंधित साहित्यकारों का सम्मान, कवि सम्मेलन, परिसंवाद तथा संगीत के आयोजन नियमित होते हैं।

हिन्दी दिवस :- प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस को ''अंग्रेजी हटाओं दिवस'' के रूप में मनाते हुए एक पुस्तक प्रकाशित कर जनमानस में हिन्दी के प्रति निष्ठा का संचार किया जाता है।

साहित्य गोष्ठी :- साहित्य–मण्डल में विविध अवसरों पर ''साहित्य संगोष्ठी'' कार्यक्रम होते हैं। हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के साहित्य कारों को आमंत्रित कर ''विचार संवाद'' तथा उनका अभिनन्दन किया जाता है।

त्रैमासिक पत्रिका :- संस्था ने एक त्रैमासिक पत्रिका ''हरसिंगार'' का प्रकाशन २० जनवरी १९९८ से प्रारंभ किया है। पहला अंक गोविन्दलालजी महाराजश्री को समर्पित है। इसका विमोचन तिलकायत श्रीराजीवजी महाराजश्री द्वारा किया गया है। इस प्रकार नाथद्वारा का साहित्य मण्डल देश के साहित्यकारों, कवियों एवं पत्रकारों के लिए एक अनुपम प्रयोगशाला है। संस्थान ने अब तक लगभग १५ ग्रंथों का प्रकाशन किया है। राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा साहित्य के लिए संस्थान एक वरदान है।

बसन्त त्रिपाठी राजविलास, ६० गायत्रीनगर, मावली जं०

साभार– नवनीत 'मासिक', अक्टूबर–९८

प्रगति और प्रवाह

गत वर्ष **पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह** दिनाक: १८,१६ फरवरी, १६६८ को आयोजित था। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक १८ को **'श्री कुम्भनदास उपनिषद्', साहित्यकार सम्मान समारोह एवं कुम्भनदास ग्रंथ का लोकार्पण सम्पन्न हुआ।**

इस समारोह के मुख्य अतिथि गोस्वामि तिलकायित पूज्यपाद दाऊजी महाराजश्री थे। श्रीनाथजी के बड़े मुखिया श्रीनरहरिजी, श्रीमान् निष्पादन अधिकारी श्री गजानन्दजी, डॉ॰ श्री विष्णुचन्द्रजी पाठक, श्री रामशरणजी पीतलिया स्वतंत्रता सेनानी श्री नरेन्द्रपालसिंह चौधरी एवं संस्थाअध्यक्ष श्री मनोहर जी कोठारी उपस्थित थे। आगन्तुक महानुभावों का परम्परानुगत तिलक, माला तथा शाल से स्वागत सत्कार किया गया। कदम्ब साहित्य संस्थान कामवन के श्री भूपेन्द्र भरतपुरी ने श्रीनाथ प्रभु की वन्दना कर कार्यक्रम का श्रीगणेश किया। तत्पश्चात् संस्थाध्यक्ष श्री कोठारीजी ने संस्था का संक्षिप्त परिचय देते हुए सब आगत महानुभावों का स्वागत किया। इसके उपरांत पूज्यपाद गोस्वामि महाराजश्री ने समारोह के उदघाटन की औपचारिक घोषणा की।

आलेख वाचन

समारोह के प्रथम सत्र में आलेख वाचन कार्यक्रम था। विषय इस प्रकार थे -

श्रीनाथजी के अनन्य भक्त कुम्भनदासः काव्यमय वर्णन

कविवर कुम्भनदासः जीवन के मर्मान्तक प्रसंग और काव्य का विषय

श्री कुम्भनदास का निस्पृह व्यक्तित्व और उनकी श्रीनाथजी के प्रति असीम आस्था

श्री कुम्भनदास का ब्रज संस्कृति को अवदान

और वाचक थे -

डा॰ भगवतशरण चतुर्वेदी, जयपुर

ड्रा॰ रामदास शर्मा, भरतपुर

डा॰ त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल, मथुरा

डा॰ जीवनसिंह, अलवर

और इस कार्यक्रम के संयोजक थे साहित्य मण्डल, नाथद्वारा के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री पुरूषोत्तम पालीवाल। चारों ही आलेख वाचक महानुभावों का अपने गम्भीर अध्ययन के बल पर आलेखों का ऐसा मर्मान्तक प्रस्तुतिकरण था कि उपस्थित जनसमुदाय भाव विभोर होकर सुनता रहा।

साहित्यकार सम्मान समारोह :- इस कार्यक्रम के संयोजक थे कदम्ब साहित्य संसथान कामा के अध्यक्ष श्री रामशरण जी पीतलिया। *सम्मान्य मान्य साहित्यकार थे –*

श्री राममोहन, जयपुर	*डा॰ त्रिभुवननाथ शर्मा, बाराबंकी*
डा॰ जगदीश लवानिया, हाथरस	*श्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया, गोवर्द्धन*
श्री जमनालाल पालीवाल, श्रीनाथद्वारा	*श्री विट्ठल पारिक, कामवन*

श्री भूपेन्द्र भरतपुरी एवं श्री भगवानदास मकरन्द ने ब्रज साहित्यकारों का गद्य–पद्यात्मक परिचय दिया। श्री पुरूषोतम पालीवाल एवं श्री मधुसूदन गोरवा के प्रत्येक साहित्यकारों को तिलक करने एवं माला पहनाने के पश्चात् पूज्यपाद महाराजश्री ने सबको शाल ओढ़ाई, निष्पादन अधिकारी जी ने प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया, श्रीनाथजी के बडे मुखियाजी ने श्रीनाथजी का स्वर्णिम चित्र तथा संस्थाध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी ने ११०० रूपये नकद एवं श्री श्याम देवपुरा ने संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य भेंट किया। दुःख इस बात का रहा है कि श्री विट्ठल पारिक के स्वजन का देहावसान हो जाने के कारण उन्हें भीम से ही कामवन लौटना पड़ा, अतः उनका सम्मान अगले पाटोत्सव पर्व पर होगा।

श्री राममोहन जी, जयपुर वालों ने साहित्यकार महानुभावों की ओर से इस कार्यक्रम के लिए संस्था कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया।

कुम्भनदास अंक का लोकार्पण :- *तत्पश्चात् पूज्यपाद महाराजश्री ने इस अवसर पर प्रकाशित अष्टछाप के सुप्रसिद्ध कवि 'कुम्भनदास' अंक का लोकार्पण किया। अंक के प्रबन्ध सम्पादक श्री श्याम देवपुरा संयोजक थे।*

समापन :- पूज्यपाद महाराजश्री के आशीर्वाद एवं संस्था प्रधानमंत्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा के आभार प्रदर्शन के पश्चात् समारोह के समापन की घोषणा की गई ।

पाटोत्सव विराट ब्रज-भाषा कवि सम्मेलन :- रात को ठीक नौ बजे संस्था प्रेक्षागार में विराट ब्रज–भाषा कवि सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। मुख्य संयोजक थे डा॰ विष्णुचन्द्रजी पाठक।

कवि सम्मेलन में निम्नलिखित कविमहानुभाव उपस्थित थे –

श्री ब्रजेन्द्र चकोर, सरमथुरा	*श्री धनेश फक्कड़, भरतपुर*
श्री शिवसागर शर्मा, आगरा	*श्री भूपेन्द्रपुरी, कामवन*
श्री भगवानदास मकरन्द, कामवन	*श्री देवकीनन्दन लवानिया, हाथरस*
डा॰ जगदीश लवानिया, हाथरस	*डा॰ त्रिभुवननाथ शर्मा, बाराबंकी*
डा॰ भगवतशरण चतुर्वेदी, जयपुर	

कवि सम्मेलन देर रात तक चला। कवि महानुभावों ने एक ओर जहाँ वर्तमान राजनैतिक एवं सामाजिक विद्रूपताओं पर खूब कटाक्ष किये वहाँ दूसरी ओर हास्य–श्रृंगार, तथा करूण रस पर भी पर्याप्त कविताएँ प्रस्तुत कीं। सम्पूर्ण प्रेक्षागार श्रोताओं से खचाखच भरा था, उस स्थिति में जबकि मन्दिर मण्डल ने पाटोत्सव के इसी पर्व से 'रिसाले की चौक' में रासलीला का आरम्भ किया था।

बिदाई समारोह :-

१६.२.६८ को प्रात नौ बजे डॉ॰ श्री विष्णुचन्द्र जी पाठक, जयपुर की अध्यक्षता एंव डा॰ श्री सुरेश पाण्डे, वृन्दावन के मुख्य आतिथ्य में कक्षा ८ के बालकों का बिदाई कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, ब्रज–भाषा समारोह में पधारे हुए सभी साहित्यकार एवं कवि महानुभाव भी इस अवसर पर उपस्थित थे। संयोजक थे प्रधानाध्यापक श्री गोपीकान्त त्रिपाठी।

सर्व प्रथम कक्षा ७,८ के बालक बालिकाओं ने अपने अग्रेजों को बिदादी। तत्पश्चात् श्रीमान् पाठक एवं पाण्डे साहब ने छात्रों को पुरस्कार वितरण किये। संयोजक थे श्री नोरतमल वर्मा।

कक्षा ८ के बालकों ने इस अवसर पर कृष्णकालीन 'मोहभंग' नाटिका का भावविभोर कर देने वाला मंचन किया जिससे उपस्थित सभी महानुभावों ने पर्याप्त प्रशंसा की। नाटिका की संयोजक थी सुश्री लीना गिरनारा।

तदनन्तर सामूहिक भोज का आयोजन हुआ जिसमें विद्यालय के सभी बालक, आगत महानुभाव गण. अध यापक बन्धु एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए।

ठीक २ बजे परम पूज्या बहूजी महाराजश्री के मुख्यातिथ्य में समारोह का शुभारंभ हुआ। मंच पर डॉ॰ विष्णुचन्द्रजी पाठक, तथा श्री रामशरणजी पीतलिया भी विराजमान थे। समारोह के संयोजक श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा ने तिलक इकलाई, शाल भेंटकर आगन्तुक महानुभावों का स्वागत किया।

प्रथम सत्र

स्वतंत्रता सेनानी सम्मान समारोह :-

इस समारोह के अन्तर्गत परम पूज्या श्रीमती बहूजी महाराजश्री के आदेश से डा॰ श्री विष्णुचन्द्र पाठक ने नाथद्वारा नगर के निम्नलिखित स्वतंत्रता सेननी महानुभावों को संस्था की ओर से शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। तिलक किया श्री श्यामप्रकाश देवपुरा ने और समारोह का संयोजन किया संस्था के प्रधान मंत्री ने।

१. *श्रीमान् नरेन्द्रपालसिंहजी चौधरी*
२. *श्रीमान् चतुर्भुजजी भाटिया*
३. *श्रीमान् मनोहरजी कोठारी*
४. *श्रीमान् गणेशलालजी पालीवाल*
५. *श्रीमान् जमनालालजी भुखमारिया*
६. *श्रीमान् राजेन्द्रसिंहजी चौधरी*
७. *श्रीमान् छन्नूसिंहजी चौधरी*
८. *श्रीमान् रामचन्द्रजी बागोरा*
६. *श्रीमान् जमना प्रसादजी जोशी*
१०. *श्रीमान् रामबाबूजी सनाढ्य*
११. *श्रीमान् भगवानदासजी गुर्जर*
१२. श्रीमान् लीलाधरजी गुर्जर
१३. श्रीमान् जुगलकिशोर जी चौधरी
१४. श्रीमान् नरोत्तमजी चौधरी
१५. श्रीमान् मदनमोहनजी सोमटिया
१६. श्रीमान् शंकरलालजी चण्डालिया
१७. श्रीमान् आनन्दीलालजी गोरवा

श्री फतहलालजी बापू और श्री पुरूषोत्तमजी मेनेजर कार्यक्रम में नहीं पहुँच पाये।

इस सत्र में समस्या पूर्ति कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। समस्या थी –

*१. **कवित्त** – मनमूरत समाई है ।*

*२. **सवैया** – जगदीनन की पत राखनहारो ।*

इस रोचक कार्यक्रम के पूर्तिकार थे– श्री भूपेन्द्र भरतपुरी, श्रीभगवानदास मकरन्द, डा॰ रामदास, श्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया, श्री जमनालाल जमनेश ।

द्वितीय सत्र :

सन् ६७ में संस्था के कार्यकाल को ६० वर्ष पूर्ण हो जाने के उपलक्ष्य में 'हीरक जयन्ती' समारोह आयोजित किया गया था उस समय समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पत्रिका के प्रबंध निदेशक डा॰ गुलाब कोठारी थे। ***उस समय संस्था के निम्नलिखित कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया था -***

श्री नारायणलाल वर्मा
श्री ओमप्रकाश देवपुरा
श्री रघुवीर वर्मा (मरणोत्तर)
श्री भगवानलाल पालीवाल
श्री पुरूषोत्तम पालीवाल
श्री मांगीलाल धोबी
श्री रघुनाथ कुम्हार
श्री मदनलाल सनाढ्य
श्री रतनलाल गुर्जर (संस्था सहायक)
श्री श्यामप्रकाश देवपुरा
श्री गोपीकान्त त्रिपाठी
श्री राकेश अजमेरा
श्री अम्बादेवी सनाढ़य
श्री नरेन्द्रपाल चौधरी (वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी)
श्री चिरंजीवलाल शर्मा "कलाकार" (वरिष्ठ कलाकार)
श्री अमृतलाल कीर्तनकार (वरिष्ठ संगीतज्ञ)
श्री देवीलाल सोलंकी (वरिष्ठ समाज सेवी)
श्री पोपटभाई राजकोट (पत्रकार)

उसी क्रम में इस वर्ष भी निम्नलिखित कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया ।

श्री चुन्नीलाल व्यास
श्री रमणलाल दीक्षित
श्री जमनादास पालीवाल
श्री रामकिशोर अजमेरा (जयपुर)
श्री जगदीश पुरोहित
श्री गोपाल भाटिया
श्री मगनलाल पालीवाल
श्री मधुसूदन गोरवा
श्री मदनसिंह सिसोदिया
श्री जुगलकिशोर बागोरा
श्री मदनलाल सियाल
श्री अर्जुनलाल शर्मा 'बापू'
श्री नोरतमल वर्मा
श्री शंकरलाल पालीवाल
श्री सुरेशचन्द्र व्यास
श्री रमेशचन्द्र सोमानी
श्री अरविन्द कुमार देवपुरा (उदयपुर)
श्री प्रकाश काबरा
श्री श्याम राठी
श्री सुनील भाटिया
श्री रमेशचन्द्र पुरोहित
श्री संजयप्रकाश देवपुरा
श्री विनोद कुमार पालीवाल
सुश्री हेमाली व्यास
श्री प्रेमशंकर जोशी

विगत दो वर्षों से राज्य मे कक्षा ८ की परीक्षा बोर्ड द्वारा ली जा रही है। इसके अन्तर्गत जिलास्तर पर इस विद्यालय के छात्र श्री लोकेश बापना ने तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

प्रतिवर्ष मन्दिर मण्डल द्वारा जन्माष्टमी पर्व पर निकाली जाने वाली झाँकी में इस विद्यालय द्वारा प्रस्तुत झाँकी नगर स्तर पर प्रथम आती रही हैं। इस बार कक्षा ६ के छात्र श्री राहुल सुराणा 'मुरली मनोहर' बने थे। झाँकी में जिस–जिस बार संस्था ने भाग लिया, उन सभी में उसने प्रथम स्थान ही प्राप्त किया और पुरस्कार अर्जित किया।

इस वर्ष देलवाड़ा में सम्पन्न उ.प्रा.वि. खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग ले कर विद्यालय के छात्रों ने हॉकी में प्रथम तथा बेडमिण्टन मे द्वितीय स्थान अर्जित कर खेल चेम्पियनशिप प्राप्त की। इन्हीं बालकों ने भीम में जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया।

इस वर्ष शिक्षक दिवस पर ५ सितम्बर, १९९८ को विद्यालय के श्रेष्ठ शिक्षक–शिक्षिकाओं – श्रीमती हेमलता सनाढ्य, श्रीमती प्रभाकिरण लोधा, सुश्री ज्योत्स्ना सनाढ्य, सुश्री प्रमिला त्रिपाठी तथा श्री भरत कुमावत को प्रशस्ति–पत्र एवं इकलाई प्रदान कर सम्मानित किया गया।

दिनांकः १४ सितम्बर, १९९८ को संस्था द्वारा दो दिवसीय "अंग्रेजी हटाओं" समारोह का आयोजन किया गया था जिसमें देश भर से अनेक विद्वान हिन्दी–सेवी तथा पत्रकार महानुभवों ने भाग लिया था। इस अवसर पर निकाली गई 'अंग्रेजी हटाओ' रैली मे भाग लेने वाले विद्यालय के बालकों के अनुशासन की नगर के प्रबुद्धनागरिकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। समारोह के अवसर पर खचाखच भरे संस्था प्रेक्षागार के मंचसे बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत "भाषा–भगिनी हिन्दी" नामक लघु नाटिका का प्रस्तुतिकरण इतना श्रेष्ठ था कि सभी मंत्रमुग्ध से देखते ही रह गये। नाटिका समाप्ति पर देर तक गूँजी तालियों की गड़गड़ाहट इसकी श्रेष्ठता का प्रमाण थी। नगर में भी कई दिनों तक इस की चर्चा रही।

तत्पश्चात् श्रीनाथजी के बड़े मुखिया श्री नरहरिजी ठक्कर के मुख्य आतिथ्य और मन्दिर मण्डल के मुख्य निष्पादन अधिकारी श्री गजाननजी शर्मा की अध्यक्षता में समारोह का शुभारंभ हुआ। संस्थाप्रधान श्री मनोहर जी कोठारी के साथ वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री नरेन्द्रपाल सिंह चोधरी, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री गणेशलाल सांचीहर एवं जिला भाजपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र बागोरा भी मंच की शोभा बढ़ा रहे थे। सर्वप्रथम विद्यालय की बालिकाओं नें "जय हैं हिन्दी रानी" वन्दना की, श्री मनोहरजी कोठारी ने सब आगन्तुक महानुभावों का स्वागत किया। इसके पश्चात् श्री रामशरण पीतलिया तथा विट्ठलपारीक, कामवन; डा॰ स्नेहलता श्रीवास्तव, झाबुआ; श्री विट्ठलदास जोशी, नाथद्वारा ने क्रमशः "हिन्दी को बढ़ाओ, देश बचाओ" हिन्दी के विरूद्ध किये जाने वाले पड़यंत्र को ध्वस्त करना हिन्दी सेवियों का काम है; मानसिक दासता त्यागें और हिन्दी में काम करें; हिन्दी राष्ट्रभाषा क्यों ? आखिर हम हिन्दी की उन्नति के लिए क्या करें; 'काले अंग्रेज और हिन्दी'; विषयों पर भावपूर्ण आलेख वाचन प्रसतुत किये, जिन्हें श्रोताओं ने काफी सराहा।

काव्यपाठ का विषय था–

'जिसको हिन्दी से प्यार नहीं, वह कैसा हिन्दुस्तानी है।'

प्रस्तुतकर्त्ता थे– प्रसिद्ध पत्रकार और साहित्यकार डा॰ श्रीकृष्ण जुगनू तथा डा॰ ज्योति पुँज, उदयपुर,

श्री विट्ठलपारिक, कामवन एव डा॰ सत्यकाम शिरीष, कानपुर।

हिन्दी सेवी सम्मान समारोह के अन्तर्गत डा॰ मणीन्द्र मोहन्ती, केन्दुजर (उड़ीसा) दर्शनसिंह रावत, उदयपुर; डा॰ घनश्याम व्यास, नागपुर डा॰ सत्यकाम शिरीष, कानपुर। इस समारोह में आज हैदराबाद से डा॰ विजयराघव रेड्डी, रायबरेली से डा॰ चक्रधर नलिन, कोट्टयम से डा॰ अभयदेव, चेन्नई से डा॰ बालशौरी रेड्डी, जुन्नारदेव से श्री कृष्ण शर्मा और गुलबर्ग से डा॰ शंकरराम कप्पीकेरी परिस्थितिजन्य विवशतावश उपस्थित नहीं हो सके थे। सम्मानित सज्जनों को मुख्य अतिथि महोदय तथा संस्थाध्यक्ष और प्रधानमंत्री द्वारा शाल ओढ़ा कर श्रीनाथजी का स्वर्णिम चित्र, प्रशस्ति-पत्र तथा संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य भेंट किया गया।

इसी अवसर पर संस्था द्वारा प्रकाशित हरसिंगार त्रैमासिक के 'अंग्रेजी हटाओं विशेषांक' का लोकार्पण भी किया गया तथा उपस्थित महानुभावों को विशेषांक की प्रतियाँ भेंट की गई।

इसके अनन्तर मुख्य अतिथि के उद्‌बोधन एवं संस्था प्रधानमंत्री के सभी के सहयोग के प्रति आभार प्रदर्शन के साथ ही कार्यक्रम समापन की घोषणा की गई।

दिनांकः २६ सिम्बर १९९८ को विद्यालय एवं संस्था कार्यकर्त्ताओं द्वारा 'श्रीउमयेश्वर महादेंव' में वन विहार कार्यक्रम आयोजित हुआ। मार्ग के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का भी अवलोकन कर लाभ उठाया गया।

इस वर्ष विद्यालय की दो शिक्षिकाओं को भी भाव-भीनी विदाई दी गई जिसमें ३० सितम्बर को श्रीमती गंगा जोशी को शिक्षा शास्त्री प्रशिक्षणार्थ जाने एवं १४ नवम्बर ९८ को सुश्री लीना गिरनारा को स्वयं की शादी होने से विदाई दी गई।

दिनांकः २६ अक्टूबर से १ नवम्बर के मध्य विद्यालय स्तर पर आयोजित खेल-कूद, साहित्यिक व साँस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। खेल-कूद में कबड्डी, खो-खो, बेडमिण्टन, रिंग, स्पोर्ट्स में लब्बी कूद, ऊँचीकूद, विभिन्न दौड़ें, गोला फेंक, भाला फेंक, थाली फेंक, रस्साकसी तथा साहित्यिक-साँस्कृतिक कार्यक्रमों में बाद-विवाद, कविता पाठ, निबन्ध, संस्मरण, कहानी, चुटकुला, सामान्यज्ञान, चित्रकला, एकल व समूह गान, वेश-वैचित्र्य, एकाभिनय प्रतियोगिताएँ सम्मिलित थीं, जिनमें बालकों ने सोत्साह भाग लिया।

दिनांकः १.१.९९ को राजस्थान के नवनिर्वाचित शिक्षामंत्री माननीय बी.डी. कल्ला ने संस्था का अवलोकन किया। उन्होंने अष्टछाप कक्ष, पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष, साहित्यकार कक्ष तथा हस्तलिखित ग्रंथों का प्रदर्शनी कक्ष देखकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने प्रेक्षागार मे पहुँचकर संस्था के उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों और अध्यापकों को उद्‌बोधित किया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में मादक मदार्थों तथा दूरदर्शन के भयावह कार्यक्रमों से बचने की सलाह दी।

गणतन्त्र दिवस १९९८ विद्यालय एवं संस्था द्वारा समन्वित रूप से परम्परित ढंग से मनाया गया और विभिन्न कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया। सदैव की भाँति रिसालाचौक में सामूहिक कार्यक्रम उपजिलाधीश एवं नगर के वरिष्ठ नागरिकों तथा राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के सानिध्य में आयोजित किया गया। यहाँ पर प्रस्तुत पी.टी. एवं अन्य कार्यक्रमों में इस विद्यालय के बालकों ने भी भाग लेकर सराहनीय प्रदर्शन कया। इस अवसर पर संस्था द्वारा इस विद्यालय के बालकों को मिठाई भी वितरित की गई।

अभिनन्दन कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के पश्चात् कदम्ब ब्रज साहित्य संस्थान, कामवन के अध्यक्ष एवं संस्था के वरिष्ठतम सहयोगी श्री रामशरण जी पीतलिया को एक विशिष्ठ अभिनन्दन–पत्र संस्थाध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी द्वारा भेंट किया गया। संयोजक थे भगवती प्रसाद देवपुरा। अन्त में परम आदरणीया बहूजीमहाराजश्री द्वारा हीरक जयन्ती परिशिष्टांक का लोकार्पण किया गया तथा ग्रंथ की प्रतियाँ भेंट दी गई। मुख्य अतिथि के उद्‌बोधन एवं संस्था प्रधानमंत्री के आभार के पश्चात् समारोह के समापन की घोषणा की गई।

इसी दिन रात्रि को नौ बजे कदम्ब साहित्य–संस्थान, कामवन के २२ कलाकारों द्वारा "कुम्भनदास भगत सांगीत" (संतन का कहा सीकरी सों काम) मंचित किया गया। यह कार्यक्रम इतना रोचक, भव्य एवं आकर्षक था कि दर्शकगण देर रात तक इसे देखते रहे।

संस्था प्रधानमंत्री श्रीदेवपुरा का सारस्वत सम्मान -

साहित्य–मण्डल के प्रधानमंत्री, श्रीभगवती प्रसादजी देवपुरा की ब्रजभाषा सेवा की सराहना करते हुए 'अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संगम', मथुरा की ओर से दिनांक ११ नवम्बर,१९९८ को 'साहित्य–भूषण' उपाधि प्रदान करते हुए सम्मान प्रदान किया गया।

राष्ट्रभाषा सेवा, अनेक ग्रंथो एंव 'हरसिंगार' साहित्य त्रैमासिक के सम्पादन–प्रकाशन के रूप में श्री देवपुरा की सेवाओं को देखते हुए ' हिन्दी साहित्य सम्मेलन – प्रयाग' ने दिनांक १५ नवम्बर १९९८ को सूचना केन्द्र सभागार–जयपुर में 'साहित्य–वाचस्पति' से अलंकृत करते हुए सम्मानोपाधि प्रदान की ।

सम्मेलन द्वारा प्रयाग से बाहर समारोह आयोजित कर पहली बार किसी साहित्यकार को उपाधि प्रदान की गई है। समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के कार्यवाहक राज्यपाल महामहिम श्री एन. एल. टिबरवाल थे। अध्यक्षता राजस्थान के उपमुख्यमंत्री श्री हरिशंकर भाभड़ा ने की।

अन्य कार्यक्रम :

केन्द्रीय पुस्तकालय, बाल पुस्तकालय एवं वाचनालय ये तीनों विभाग पूर्ववत् चल रहे हैं। किन्तु दूरदर्शन के कारण पाठकों की संख्या में, सदस्य संख्या बढ़ने के बावजूद कमी आई है। इस सत्र में पुस्तक संख्या ३४७२७ से बढ़कर ३५८०६ हो गई। इस प्रकार १०८० पुस्तकें इस वर्ष बढ़ीं। इस वर्ष का पुस्तक भेंटदाता सम्बन्धी विवरण नीचे दिया गया है– गतवर्ष दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक मिलकर कुल १२१ पत्र–पत्रिकाएँ आती थीं वे बढ़कर १४२ हो गई हैं। केन्द्रीय पुस्तकालय की पाठक संख्या १७१० और बाल पुस्तकालय की ७३६ वर्तमान में हैं।

भेट पुस्तकों की

क्र.	नाम भेंटदाता	संख्या	मूल्य राशि
१.	राजस्थान साहित्य अकादमी–उदयपुर	८३	२५०१/–
२.	श्रीमान् श्याम सुन्दरजी व्यास–इन्दौर	४५	२३६०/–
३.	श्रीमान् विश्वदेवजी शार्मा–मुंबई	२३	२३४५/–
४.	राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी–जयपुर	३१	२०१४/–
५.	श्रीमान् प्रकाश चन्द्रजी सनाढ्य	८०	१५००/–
६.	सौ. विमला सत्यनारायण स्मारक निधि–मुंबई	२४	१०३४/–
७.	श्रीमान् माँगीलालजी धोबी	३७	७४५/–
८.	श्रीमान् मुकेशजी लखौटिया	४२	६१४/–
९.	श्रीमान् रामचन्द्रजी उपाध्याय	३८	४६८/–
१०.	श्रीमान् दामोदरजी भाटिया	४७	४८०/–
११.	श्रीमान् सौभाग्यमल जी सिंघवी	२६	४८०/–
१२.	अजमेरा बुक कम्पनी– जयपुर	१५	३१०/–
१३.	श्रीमान् सी.पी. व्यासजी–चित्तौड़गढ़	१	३००/–
१४.	श्रीमान् घनश्यामजी व्यास–नागपुर	३	२५०/–
१५.	श्रीमान् त्रिभुवननाथ जी साँचीहर	१०	१६५/–
१६.	श्रीमान् सत्यकामजी 'शिरीष' –कानपुर	५	१४५/–
१७.	श्रीमान् गोपालप्रसाद जी मुद्गल	२	११०/–
१८.	श्रीमान् जगदम्बाप्रसाद जी 'कमल'–हाथरस	१	१००/–
१९.	श्रीमान् कौशलनन्दन जी गोस्वामी	१	६०/–
२०.	श्रीमान् गयाप्रसाद जी तिवारी'मानस'	१	५०/–

विद्यालय के क्रियाकलाप

डा॰ विश्वदेव शर्मा ने अपने पूज्य पिता श्री शिवकुमारजी शर्मा, जो संस्था के संस्थापक भी थे, की स्मृति में प्रतिवर्ष साहित्य मण्डल विद्यालय के बालकों के लिए ३६००/– छात्रवृत्ति देना निर्धारित किया है। तदनुसार इस सत्र मं परीक्षोपरान्त निम्नलिखित बालकों को उनकी ओर से एक भव्य समारोह में निम्न प्रकार छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

१. श्री लोकेश बापना कक्षा ८ ए : श्रीमती गोमतीदेवी बिसनदेई छात्रवृत्ति, मिडिलबोर्ड परीक्षा में, राजसमन्द जिले में, तृतीय स्थान प्राप्त ।

२. सुश्री वर्षा माली कक्षा ७ बी : श्रीकाशीनाथ ब्रह्मदेव छात्रवृत्ति उच्च प्राथमिक कक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त

३. सुश्री चंचल काबरा ६ बी : श्रीमती चन्द्रवती प्रभादेवी छात्रवृत्ति कक्षा ३से ८ तक सर्वोच्च उपस्थिति (छात्रा वर्ग)

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

पाटोत्सव-९८

स्वागत



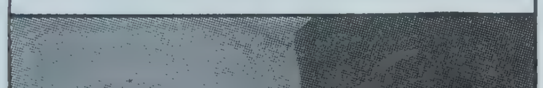
समारोह की मुख्य अतिथि पूज्या बहूजी महाराज का संस्था आगमन पर स्वागत करते संस्था प्रधानमन्त्री

अभिनन्दन



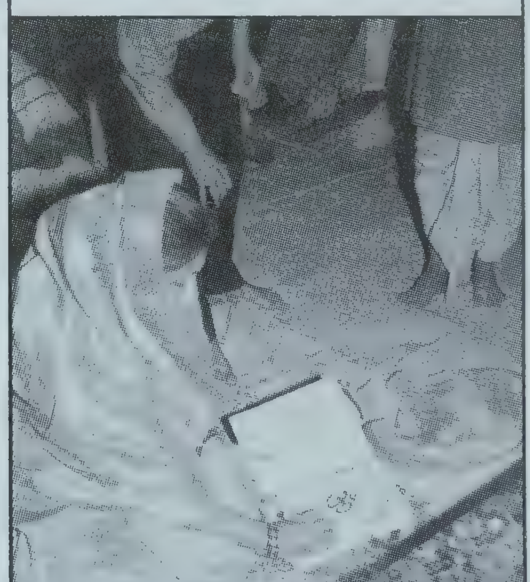
संस्था द्वारा श्रीरामशरण पीतलिया को अभिनन्दन पत्र भेंट करने से पूर्व, पूज्या बहूजी महाराज, श्री मनोहर कोठारी एवं श्री भगवती प्रसाद देवपुरा

लोकार्पण



संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ
हीरक जयन्ती परिशिष्टांक का लोकार्पण करती
पूज्या बहूजी महाराज, समीप हैं ग्रन्थ के सम्पादक
श्रीभगवती प्रसाद देवपुरा एवं प्रबन्ध सम्पादक
श्याम प्रकाश देवपुरा

लोकार्पित



हीरक जयन्ती परिशिष्टांक के लोकार्पण के पश्चात्
उस पर अपने हस्ताक्षर करती
पूज्या बहूजी महाराज

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

पाटोत्सव-९८

स्वागत



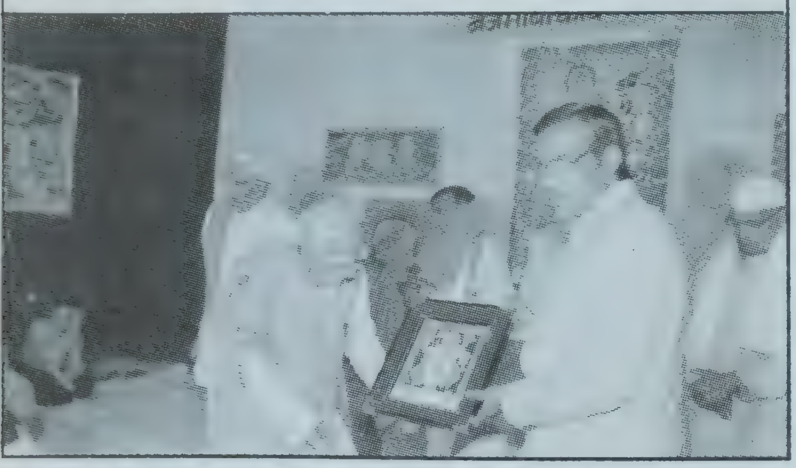
समारोह के मुख्य अतिथि पू॰ति॰ श्रीराजीवजी (दाऊजी) महाराजश्री का तिलक कर स्वागत करते संस्था प्रधानमंत्री

स्वागत



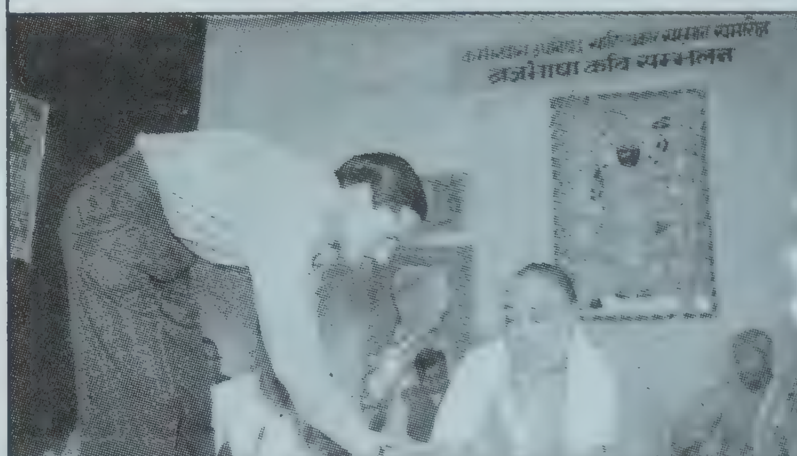
सम्मानित साहित्यकार सर्वश्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया, श्रीराममोहन, श्रीजमनेश एवं श्रीलवानिया का तिलक लगाकर स्वागत करते संस्था प्रधानमंत्री

सम्मानित साहित्यकार



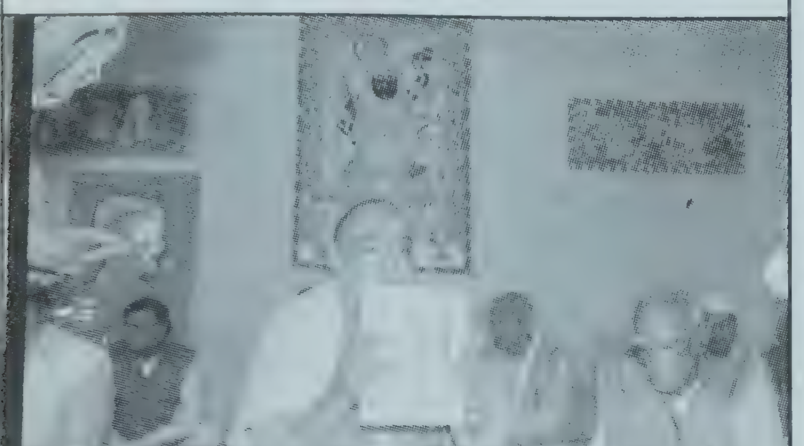
डा॰ जगदीश लवानिया को संस्था की ओर से श्रीनाथजी की तस्वीर भेंट करते श्रीनाथजी के बड़े मुखिया श्रीनरहरि ठक्कर

लोकार्पण



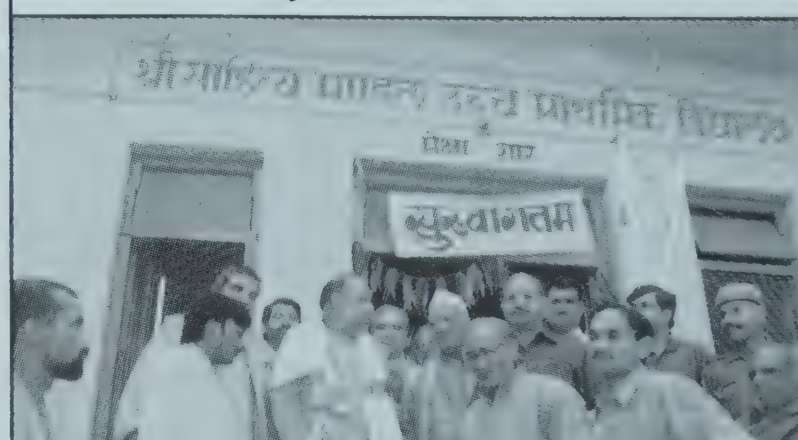
पाटोत्सव पर प्रकाशित कुम्भनदास अंक पू॰ तिलकायितश्री को लोकार्पण हेतु प्रस्तुत करते श्री श्यामप्रकाश देवपुरा

लोकार्पित



कुम्भनदास अंक "लोकार्पित" करते पूज्यपाद महाराजश्री समीप विराजमान है श्रीनाथजी के बड़े मुखिया श्री नरहरि ठक्कर

प्रस्थान



पूज्यपाद महाराजश्री कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात् प्रस्थान करते हुये साथ में है श्रीमनोहर कोठारी, श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा, डा॰ विष्णुचन्द्र पाठक

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

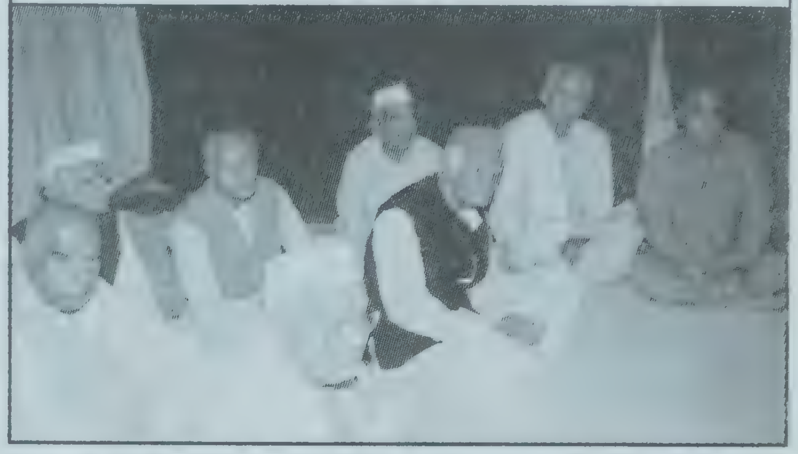
स्वतन्त्रता सैनानियों का सम्मान-बच्चों की बिदाई-शौर्य अंक का लोकार्पण

स्वागत



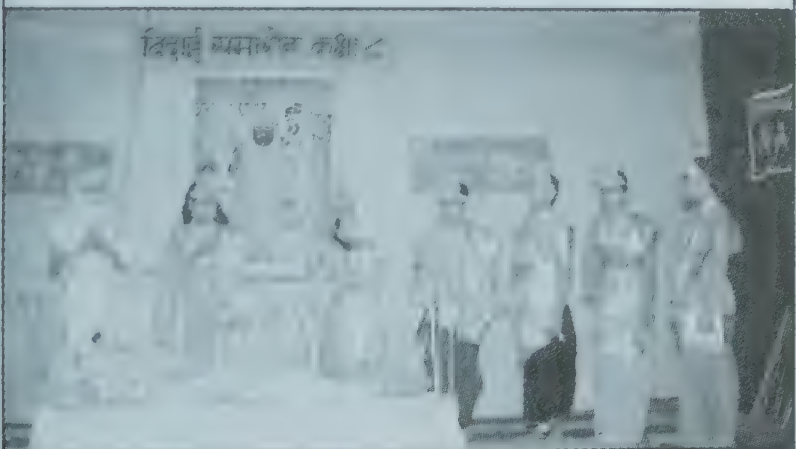
स्वतन्त्रता सेनानी महोदय का तिलक से स्वागत करते श्याम देवपुरा, समीप हैं डा० विष्णुचन्द्र पाठक एवं श्री मनोहर कोठारी

मंच



स्वागत के पश्चात् मंच पर विराजमान स्वतन्त्रता सैनानी महानुभाव

नाटिका-मंचन



कक्षा ८ के बच्चों की बिदाई कार्यक्रम के अवसर पर प्रस्तुत नाटिका "शर शैय्या पर भीष्म" का मंचन करते विद्यालय के बालकगण

पुरस्कार वितरण



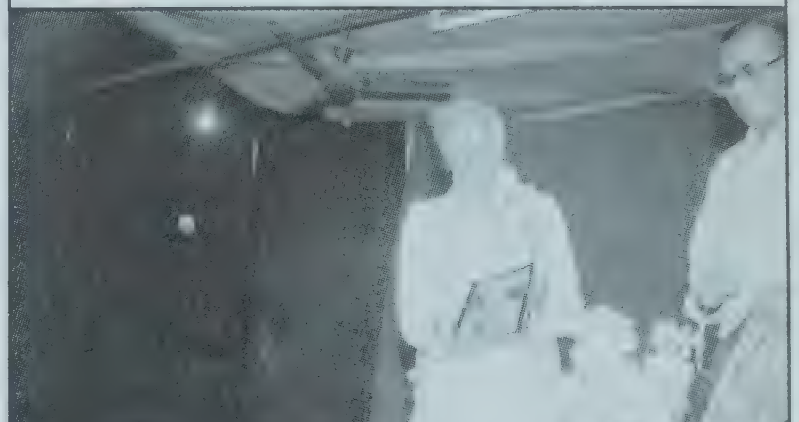
बिदाई कार्यक्रम के अवसर पर बच्चों को पुरस्कार वितरण करते डा० सुरेश पाण्डेय एवं डा० विष्णुचन्द्र पाठक

भेंट



बिदाई लेने वाली कक्षा ८ (ब) की बालिकाओं द्वारा भेंट आपातकालीन ट्यूब लाईट ग्रहण करते संस्थाध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी

लोकार्पण



हरसिंगार के "शौर्य" अंक का लोकार्पण करते श्रीनाथजी के बड़े मुखिया नरहरि ठक्कर समीप हैं सह-सम्पादक श्री पुरुषोत्तम पालीवाल

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

भगत सांगीत का मंचन एवं शिक्षा निदेशक (प्रा॰शि॰) का कार्यक्रम

भगत-सांगीत



कदम्ब कामवन के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत भगत-सांगीत "कुम्भनदास" के मंचन का एक दृश्य

स्वागत



"कुम्भनदास" भगत-सांगीत में कृष्ण बना विद्यालय का छात्र प्रद्युम्न प्रकाश देवपुरा

स्वागत



शिक्षा निदेशक (प्रा॰शि॰) श्री जोधावत महोदय का उत्तरीय द्वारा स्वागत करते संस्था प्रधानमन्त्री

लोकार्पण



पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष का अवलोकन करते शिक्षा निदेशक महोदय, स
है- जि॰ शिक्षाधिकारी श्री धर्मचन्द जैन, संस्था प्रधानमन्त्री एवं श्याम देव

स्वागत



पधारे हुये संभागीय शिक्षाधिकारियों का उत्तरीय से स्वागत करते संस्था कार्यकर्त्ता श्री रघुनाथ कुम्हार

संगोष्ठी

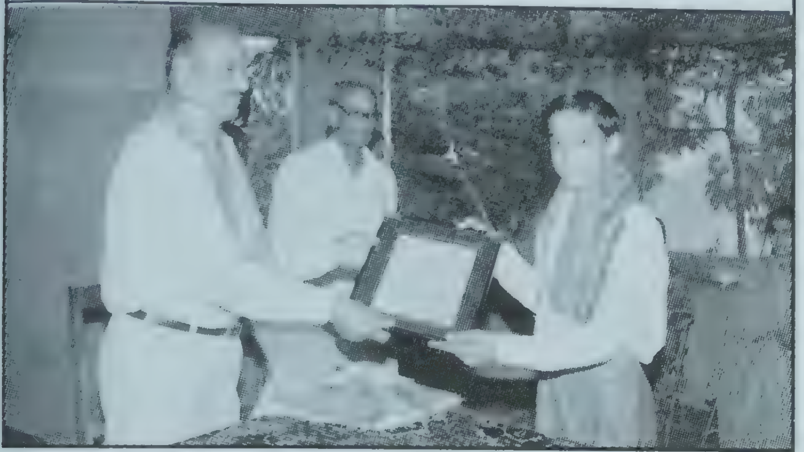


संभागीय शिक्षाधिकारियों की संगोष्ठी के अवसर पर संस्था की ओर स
लेटर पेड एवं पेन भेंट करते संस्था कार्यकर्त्ता श्री पुरुषोत्तम पालीवाल

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

विभिन्न-कार्यक्रम

प्रतिभा-सम्मान



मिडिल बोर्ड परीक्षा में जिले में तृतीय स्थान प्राप्त छात्र लोकेश बापना को प्रशस्ति-पत्र भेंट करते उप-जिला शिक्षाधिकारी श्री जवानसिंह शिशोदिया

अवलोकन



संस्था में बिराजे वीणा के सम्पादक डा० श्यामसुन्दर व्यास, मध्य में डा० वेद प्रताप वैदिक एवं उद्‌बोधन देते प्रतिदिन के सम्पादक श्री ललित टंडन

विद्यालय-कार्यक्रम



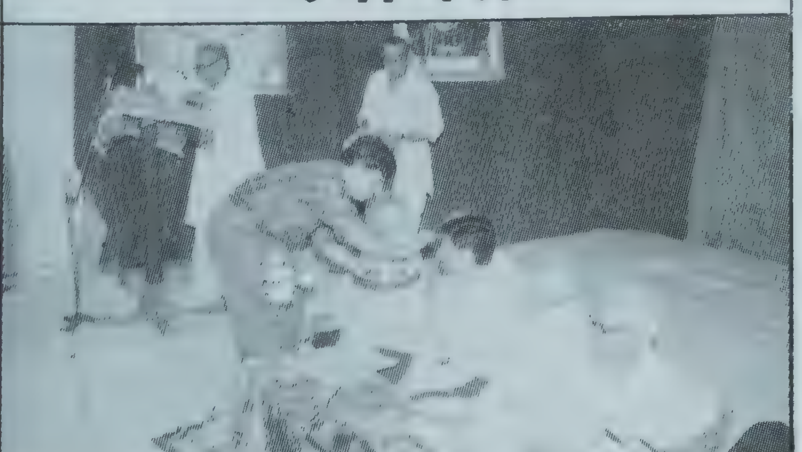
विद्यालय के बालकों द्वारा प्रस्तुत वैश्य-विचित्र कार्यक्रम के अवसर पर लिया गया एक सामूहिक चित्र

मंचन



अंग्रेजी हआओ दिवस १४ सितम्बर पर विद्यालय की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत भाषा-भगिनी नाटिका के मंचन का एक दृश्य

स्वागत



१४ सितम्बर पर मंच पर बिराजमान अतिथियों का स्वागत करते संस्था कार्यकर्त्ता श्री मधुसूदन गौरवा

स्वागत



१४ सितम्बर पर पधारे सम्मानित साहित्यकारों को तिलक लगाते प्रधानाध्यापक श्री गोपीकान्त त्रिपाठी एवं माल्यार्पण करते श्री चिरञ्जीव लाल शर्मा "कलाकार"

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

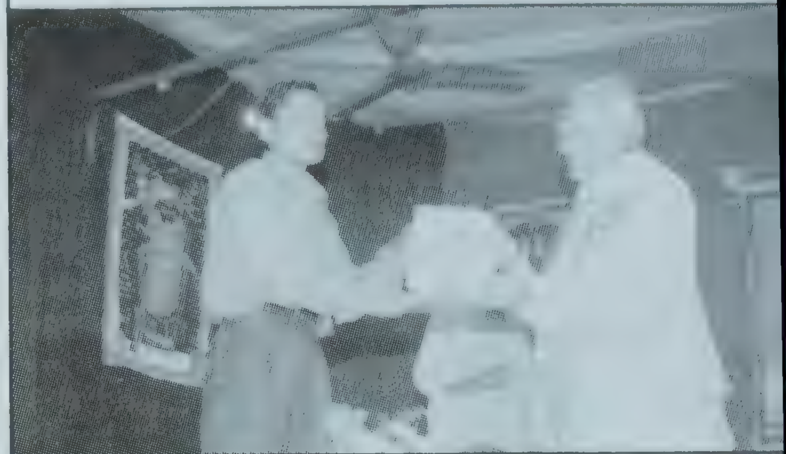
अंग्रेजी हटाओ दिवस-९८

स्वागत



१४ सितम्बर पर पधारे सम्मानित साहित्यकार एवं अन्य मेहमानों का उत्तरीय द्वारा स्वागत करते श्री श्याम देवपुरा

लोकार्पण



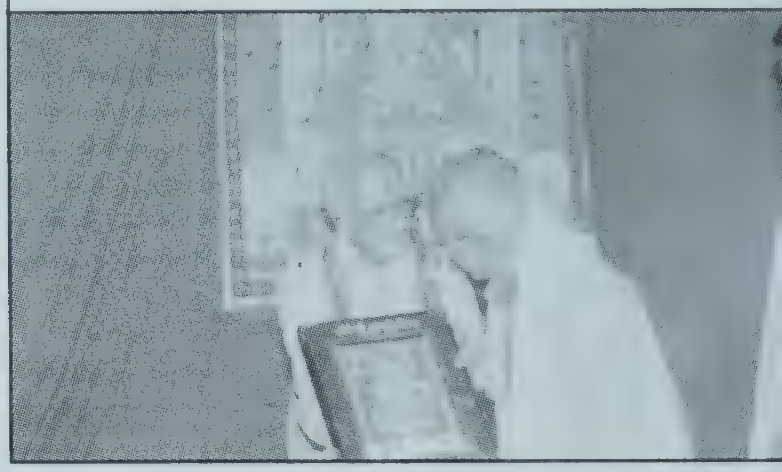
१४ सितम्बर पर प्रकाशित हरसिंगार के 'अंग्रेजी हटाओ' अंक का लोकार्प
करते मुखियाजी श्री नरहरि ठक्कर साथ में हैं प्रबन्ध सम्पादक श्याम देवप

सम्मानित साहित्यकार



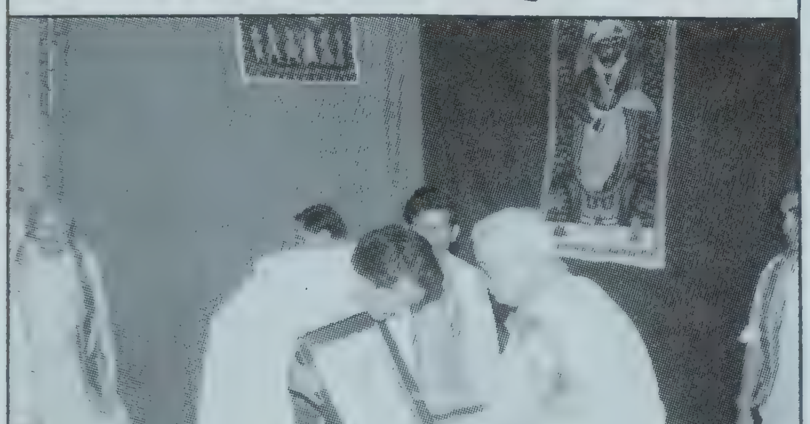
श्री सत्यकाम शिरीष, कानपुर को संस्था की ओर से श्रीनाथजी की तस्वीर प्रदान करते श्री मुखियाजी

सम्मानित-साहित्यकार



डा॰ घनश्याम व्यास, नागपुर को संस्था की ओर से श्रीनाथजी की तस्वी
भेंट करते मुखियाजी

सम्मानित-साहित्यकार



श्री दर्शनसिंह रावत, उदयपुर एवं डा॰ महेन्द्र मोहन्ती, केन्दुझर को प्रशस्ति-पत्र भेंट करते संस्थाध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी

दहन



अंग्रेजी से सम्बधित सामग्री के दहन कार्यक्रम के अवसर पर अंग्रेजी साम
का दहन करते संस्था प्रधानमन्त्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ
विभिन्न-कार्यक्रम

अंग्रेजी हटाओ रैली



संस्था द्वारा १४ सितम्बर पर आयोजित विशाल अंग्रेजी हटाओ रैली का एक दृश्य

वेणु वादक श्रीकृष्ण



मन्दिर-मण्डल द्वारा जन्माष्टमी पर आयोजित झांकी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त झांकी में विद्यालय का छात्र राहुल सुराणा

भेंट



श्री गोपालदास पारीख द्वारा प्रदत्त छः रनर्स ट्राफियाँ ग्रहण करते संस्थाध्यक्ष एवं प्रधानमन्त्री

विद्यालय-कार्यक्रम



वैश्य विचित्र कार्यक्रम में राहुल सोमाणी (राम) प्रियंका देवपुरा (कृष्ण) एवं प्रद्युम्न देवपुरा (बलराम) के रूप में

संस्था की विभिन्न गतिविधियाँ

शिक्षा मन्त्री महोदय द्वारा संस्था अवलोकन

साहित्य-भेंट



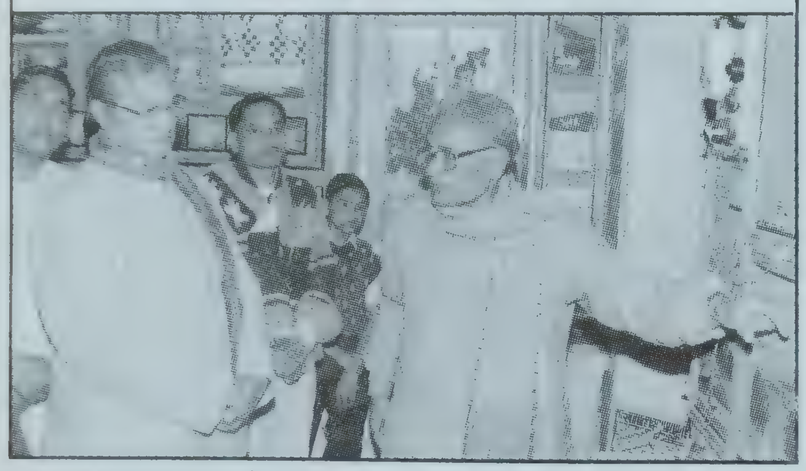
माननीय शिक्षा मन्त्री बी॰डी॰ कल्ला महोदय के नाथद्वारा आगमन पर संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य भेंट करते श्याम देवपुरा

आगमन



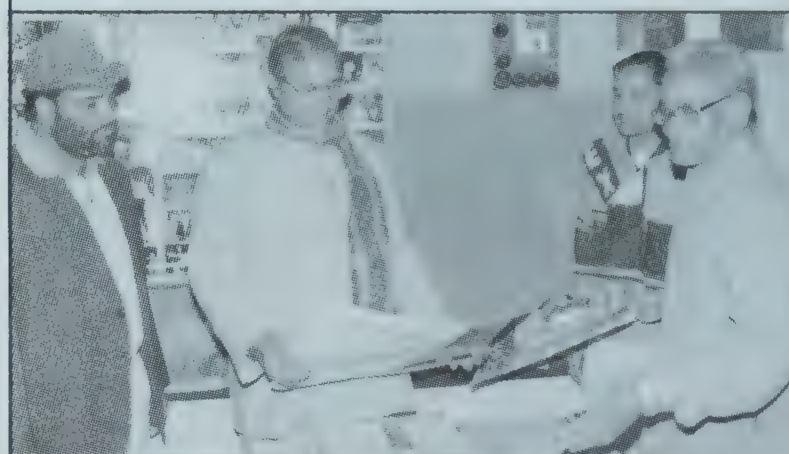
संस्था में आगमन पर कक्ष में बिराजे शिक्षामन्त्री महोदय एवं अन्य महानुभावगण

अवलोकन



माननीय शिक्षामन्त्री महोदय को संस्था के अष्टछाप कक्ष के बारे में जानकारी देते संस्था प्रधानमन्त्री श्री देवपुरा

अवलोकन



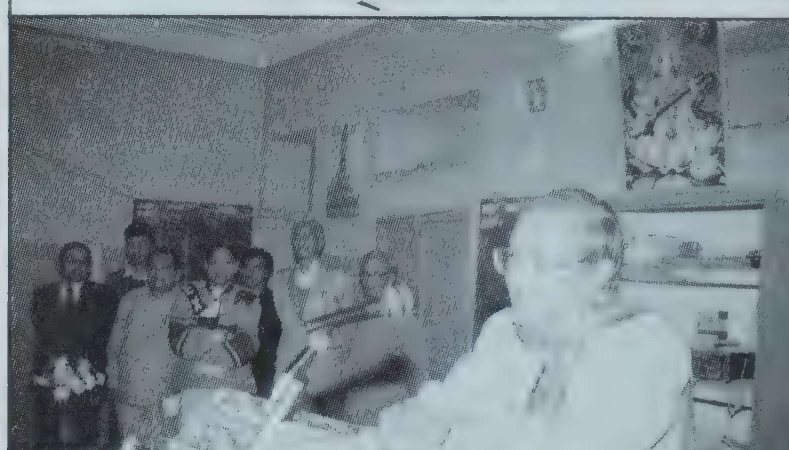
काल कवलित पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष का अवलोकन करते माननीय शिक्षा मन्त्र महोदय, समीप है श्री लक्ष्मीनारायण गुर्जर, संस्था प्रधानमन्त्री एवं श्याम देवपु

अवलोकन



साहित्यकार कक्ष का अवलोकन करते माननीय शिक्षा मन्त्री साथ में है उप-निदेशक (प्रा.शि.) श्री गुरू सा., जि.शि.अ. (प्रा.शि.) श्री धर्मचन्द जैन

उद्‌बोधन



विद्यालय के बालकों को उद्‌बोधित करते माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय समीप हैं शिक्षाधिकारीगण एवं संस्था कार्यकर्त्ता

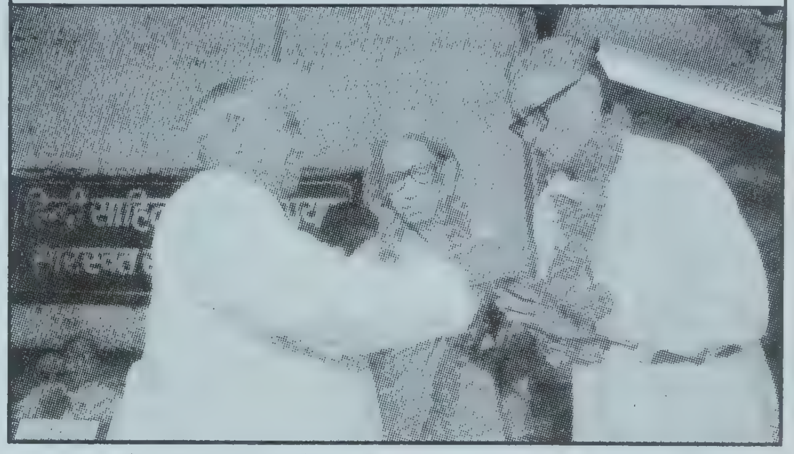
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
साहित्य-वाचस्पति सम्मान समारोह
सूचना केन्द्र, जयपुर

अतिथिगण



श्री भगवती प्रसाद देवपुरा के सम्मान में आयोजित "साहित्य वाचस्पति" कार्यक्रम के अवसर पर सभागार में विराजमान अतिथिगण

स्वागत



कार्यक्रम के अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट महोदय श्री देवपुरा का माल्यार्पण कर स्वागत करते हुये, मध्य में है श्री विजयवर्गीय जी

स्वागत



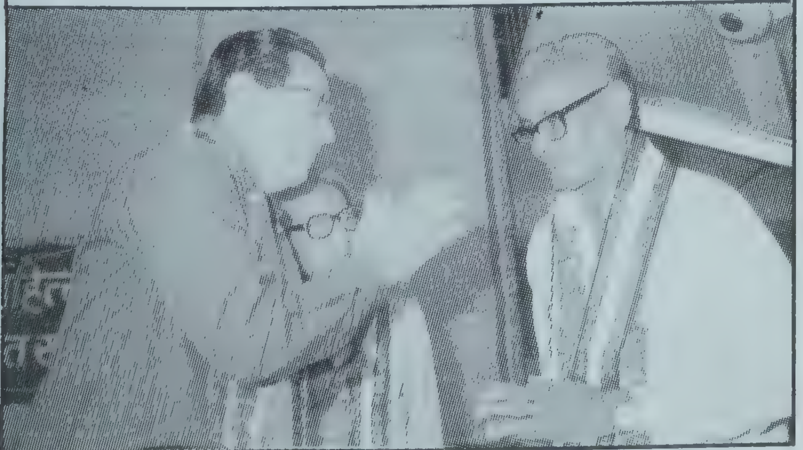
कार्यक्रम के अवसर पर श्री देवपुरा का स्वागत करते सम्मेलन के प्रधानमन्त्री श्री श्रीधर शास्त्री महोदय

मंच



मंच पर श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट, उपमुख्यमन्त्री श्री भाभडाजी, महामहिम राज्यपाल श्री नवरंगलाल टिबरेवाल, श्री विजयवर्गीयजी एवं श्री भगवती प्रसाद देवपुरा

सम्मान



श्री भगवती प्रसाद देवपुरा का उत्तरीय द्वारा सम्मान करते उप मुख्यमन्त्री श्री हरिशंकर भाभडा महोदय

मंच



कार्यक्रम के अवसर पर मंच पर श्री श्रीधर शास्त्री, श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट, श्री भाभडाजी, महामहिम राज्यपाल महोदय एवं श्री देवपुरा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
साहित्य-वाचस्पति सम्मान समारोह
सूचना केन्द्र, जयपुर

अभिनन्दन



सम्मेलन द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च उपाधि "साहित्य-वाचस्पति" महामहिम राज्यपाल महोदय से ग्रहण करते श्री भगवती प्रसाद देवपुरा

उद्बोधन



सूचना केन्द्र के सभागार में आयोजित सम्मान समारोह के अवसर पर उद्बोधन देते श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा

साहित्य-भेंट



संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य महामहिम राज्यपाल महोदय को भेंट करते श्री देवपुरा मध्य में श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट

सम्मान



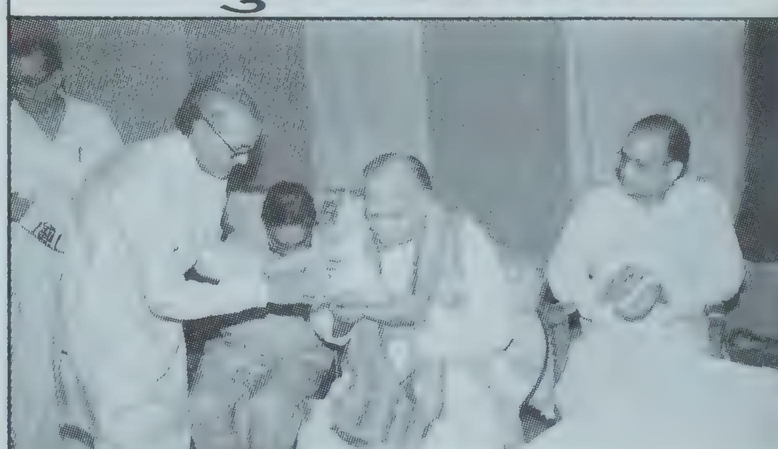
कार्यक्रम के अवसर पर महामहिम राज्यपाल महोदय का साहित्य-मण्डल क ओर से उत्तरीय द्वारा सम्मान करते श्री श्याम देवपुरा

सभागार



कार्यक्रम के अवसर पर सूचना केन्द्र के सभागार में बिराजमान अतिथिगण

मथुरा-कार्यक्रम



ब्रज साहित्य-संगम, मथुरा के अधिवेशन में संगम के महामन्त्री श्री राजेश दीक्षित महोदय को श्रीनाथजी का प्रसाद एवं उत्तरीय भेंट करते श्री देवपुरा

४. श्री पीयूष सारड़ा कक्षा ५ ए : श्रीमती किरणदेवी सुरेशनाथ छात्रवृत्ति कक्षा ३ से ८ तक सर्वोच्च उपस्थिति (छात्र वर्ग)

५. श्री राजकुमार माली कक्षा ५ ए : श्रीमती रामेश्वरीदेवी शिवकुमार छात्रवृत्ति प्राथमिक कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त (छात्र वर्ग)

६. सुश्री चेष्टा जैन कक्षा ४ बी : श्रीमती फूलवती देवी दुर्गादत्त छात्रवृत्ति प्राथमिक कक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त (छात्रा वर्ग)

उपर्युक्त सभी छात्र–छात्राओं में से प्रत्येक को ६००/– रू. नकद तथा प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

श्री गोपालदासजी पारिख ने बच्चों के प्रोत्साहनार्थ ६ छोटी–बड़ी चल ट्राफियाँ प्रदान कीं । सत्र १९९७–९८ की आठवीं कक्षा के छात्र–छात्राओं ने भी अपने विदाई समारोह के अवसर पर विद्यालय को ग्लास ईगल (कक्षा ८ 'अ') एमरजेन्सी ट्यूब लाइट (कक्षा ८ 'अ') भेंट कीं ।

संस्था द्वारा संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालय द्वारा भी अनेक गतिविधियों का संचालन किया गया, जो निम्न प्रकार हैं-

इस वर्ष १५ जून १९९८ को शिक्षा निदेशक (अतिरिक्त) महोदय की उपस्थिति में संस्था प्रेक्षागार में संभागीय शिक्षा अधिकारियों की प्रशासनिक बैठक का आयोजन विद्यालय के सहयोग से सम्पन्न हुआ जिसमें संभाग के उपनिदेशकों, डाइट के प्रधानाचार्यो जिला शिक्षा अधिकारियों आदि को मिला कर कुल ५० के लगभग अधिकारियों ने भाग लिया।

विद्यालय में छात्रों का प्रवेश मई में करते हुए कक्षाओं का गठन भी कर लिया गया था, किन्तु शेष बालकों का प्रवेश कार्य जुलाई १९९८ में पूर्ण हुआ। इस वर्ष कुल छात्र संख्या ६२२ व कुल कक्षाएँ २० हैं। वर्तमान में कुल २५ शिक्षक–शिक्षिकाएँ कार्यरत हैं जिनमें एम.ए., बी.एड – १, बी.ए, बी.एड – ३, बीए – ७, हायर सेकेण्डरी एस.टी.सी – २ तथा ६ अप्रशिक्षित हैं। तीन सहायिकाएँ भी हैं।

कक्षाओं में पढ़ाई आरम्भ होने के साथ ही सहशैक्षिक गतिविधियों पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया। दैनिक प्रार्थना मे ही नैतिक शिक्षा को सम्मिलित करते हुए सूक्तियों, लघुकथाओं, एतिहासिक उदाहरणों, सामाजिक कार्यों आदि के साथ–साथ समाचारों का छात्रों द्वारा विधिवत प्रस्तुतिकरण किया जा रहा है।

शनिवारीय कार्यक्रम भी नियमित आयोजित होते हैं जिनमें वादविवाद, कविता पाठ, अन्त्याक्षरी, चुटकुला प्रतियोगिता, कहानी–कथन, संस्मरण, एकल–गान आदि प्रवृत्तियों को सम्मिलित किया गया है। एक–एक विषय पर ही पूर्व सूचना देकर कार्यक्रम रखे जाते हैं ताकि छात्रों को तैयारी का अवसर मिल सके।

वर्ष भर में मनाये जाने वाले उत्सवों की योजना भी जुलाई–९८ में तैयार करली गई थी और उसी के अनुसार उत्सव, जयन्तियाँ आदि मनाई जाती हैं। उत्सव से सम्बद्ध प्रवचनों के अतिरिक्त कविता, गीत–संगीत एवं अभिनय से सम्पन्न यह कार्यक्रम वास्तव में बालकों के लिए प्रेरक है। बच्चे भी पूर्ण उत्साह से इसमें भाग लेते है।

इस वर्ष स्वाधीनता पर्व विद्यालय में मनाने के साथ संगम स्तर पर भी बालकों ने भाग लिया। इस अवसर पर बालकों को संस्था की ओर से मिठाई में प्रसाद वितरित किया गया।

साहित्य मण्डल-एक परिचय

सन् १६३७ में स्थापित, सरकार द्वारा क्रमांक १ पर पंजीकृत तथा श्रीनाथद्वारा की एक मात्र साहित्यिक, साँस्कृतिक एवं शैक्षणिक यह संस्था, राजस्थान प्रान्त का अग्रणी प्रतिष्ठान है। अपने स्वर्णिम जीवन में यह संस्था कई उतार-चढ़ाव देख चुकी है। इसके तत्वावधान में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य-रत्न', महिला विद्यापीठ की विद्या-विनोदिनी तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'राष्ट्रभाषा रत्न' तक की परीक्षाएँ आयोजित होती थीं, जिन्हें अब स्थगित कर दिया गया है। संस्था की वर्तमान में निम्नलिखित गतिशील प्रवृत्तियाँ हैं :-

केन्द्रीय पुस्तकालय ः इस विशाल पुस्तकालय में लगभग ३५८०६ पुस्तकों, अनेक हस्तलिखित ग्रंथों एवं साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्र–पत्रिकाओं से विनिर्मित जिल्दों का अपूर्व संग्रह है। वर्तमान में पुस्तकालय की पाठक सदस्य संख्या १७१८ है।

बाल पुस्तकालय ः चौपाटी पर संचालित इस पुस्तकालय में लगभग १०,००० पुस्तकें हैं तथा यहाँ की पाठक सदस्य संख्या ७२१ है।

वाचनालय ः सम्पूर्ण देश से विभिन्न विषयों से विभूषित १४२ पत्र–पत्रिकाओं से युक्त श्रीनाथद्वारा का यह अनोखा वाचनालय है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय ः इस विद्यालय में ६२२ छात्र–छात्राएँ, २५ अध्यापक तथा ३ सहायिकाएँ हैं। यह २० सेक्शनों में विभक्त है। कक्षा–कक्ष फर्नीचर, विद्युत् पंखों आदि से सुव्यवस्थित है तथा परिसर सुन्दर वाटिका एवं खेल मैदानों से युक्त है।

रंगमंचीय कार्यक्रम ः संस्था के निजी रंगमंच पर वर्षभर में अनेक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

ब्रजभाषा-समारोह ः प्रतिवर्ष श्रीनाथजी के पाटोत्सव के अवसर पर ब्रजभाषा से सम्बद्ध साहित्यकारों का सम्मान, कवि–सम्मेलन, परिसंवाद, भगत–सांगीत आदि के आयोजन किये जाते हैं।

अंग्रेजी हटाओ दिवस ः गत ३० वर्षों से हिन्दी आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष १४ सितम्बर को एक पुस्तिका प्रकाशित कर जनमानस में हिन्दी के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है।

अष्टछाप कक्ष : वल्लभ संप्रदाय एवं अष्टछापी कवियों के विविध विषयों एवं अनेकानेक चित्रों के विभूषित यह कक्ष दर्शनार्थियों, साहित्कारों आदि के लिए दर्शनीय है।

पत्रिका कक्ष-ः विभिन्न काल कवलित, अनुपलब्ध तथा वर्तमान में महत्त्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं के संग्रह से विनिर्मित सजिल्द ग्रथों का यह कक्ष संस्था की अनुपम निधि है।

साहित्य-संगोष्ठी : संस्था की स्थायी गतिविधियों में 'साहित्य-संगोष्ठी कार्यक्रम' का अपना अलग स्थान है। विविध कार्यक्रमों के आयोजन के साथ ही इसके अन्तर्गत विभिन्न स्थानीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय स्तर के हिन्दी व उसकी सहायक भाषाओं के साहित्यकारों तथा साहित्य-सेवियों का अभिनन्दन संस्था द्वारा किया जाता है।

साहित्यकार कक्ष : इस विशाल कक्ष में साहित्यकार कक्ष का निर्माण किया गया है इसमें लगभग २०० सुप्रसिद्ध प्राचीन और अर्वाचीन साहित्कारों के चित्र, उनका व्यक्तित्व और कृतित्त्व प्रदर्शित करते हुए, लगाए गए हैं। संस्था का यह स्थायी कक्ष, ज्ञानवर्धक और दर्शनीय है।

पत्रिका प्रदर्शनी कक्ष : यह कक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय के पास ही स्थायी रूप से बनाया गया है। इसमें सैकड़ों काल-कवलित पत्र-पत्रिकाओं को प्रदर्शनार्थ रखा गया है। विद्वानों , साहित्यकारों, पत्रकारों और शोधार्थियों के लिए यह अद्भुत और महत्त्वपूर्ण कक्ष है।

प्रकाशन : संस्था ने अब तक १० ग्रंथों का प्रकाशन किया है, वे हैं :-

१. अष्टछाप स्मृति ग्रंथ
२. गुसाईं विट्ठलनाथ स्मृति ग्रंथ अंक
३. पाटोत्सव स्मृति ग्रंथ
४. गोस्वामी हरिराय स्मृति ग्रंथ
५. गोस्वामी गोकुलनाथ स्मृति ग्रंथ
६. श्रीनाथजी अंक
७. हीरक जयन्ती ग्रंथ
८. अंग्रेजी हटाओ आंदोलन
६. हीरक जयन्ती परिशिष्टांक
१०. कुम्भनदास अंक
११. ब्रज कोकिल : नन्ददास

इनके अतिरिक्त प्रतिवर्ष पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह के अवसर पर एक स्मारिका और अंग्रेजी हटाओं आन्दोलन के अवसर पर 'अंग्रेजी हटाओ' पुस्तिका प्रकाशित की जाती है। १४ सितम्बर, १६६७ को संस्था ने महत्वपूर्ण "अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन" ग्रंथ प्रकाशित किया है।

त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशन : चिर प्रतीक्षित त्रैमासिक पत्रिका हरसिंगार का प्रकाशन कर संस्था ने एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इसका प्रवेशांक नि.ली.ति. गोविन्दलालजी महाराजश्री को समर्पित था एवं इसका लोकापर्ण आपश्री की पुण्य तिथि २० जनवरी, १६६८ को वर्तमान तिलकायित श्री राजीवजी (दाऊजी) महाराजश्री द्वारा किया गया। इसके पश्चात् "शौर्य अंक", "अंग्रेजी हटाओ अंक" तथा "नन्ददास अंक" प्रकाशित हुए हैं।

संस्था शीघ्र ही ऐसे ग्रंथों का भी प्रकाशन कर रही है जो अब अलभ्य हैं

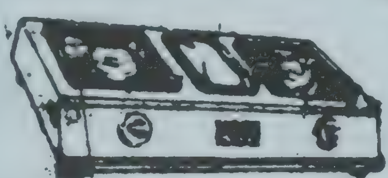
भगवती प्रसाद देवपुरा

॥ श्री हनुमते नमः ॥

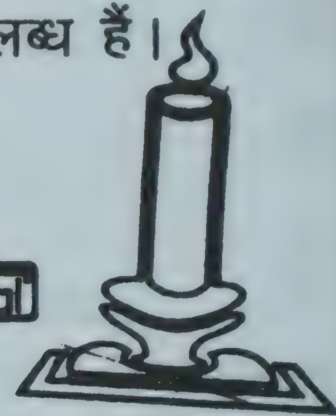


हार्दिक शुभकामनाएँ

हमारे यहाँ विभिन्न मॉडलों में टिकाऊ, सुरक्षित, मजबूत एवं उत्तम क्वालिटी के एल. पी. जी. स्टोव उपलब्ध हैं।



- **ईको फ्लेम**
- **पेनो सोनिक**
- **सुपर लक्ष्मी**



विशेषताएँ:

हमारे यहाँ गैस चूल्हे के पार्ट्स, कैंटीन बर्नर, थ्री बर्नर, फोर बर्नर, गैस पाईप, हलवाई भट्टी, कुक एण्ड ग्रील बर्नर आदि उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

श्रीनाथ गैस हाउस

चौपाटी बाजार, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान)

निवास : 02953-30712

☆ एक बार सेवा का मौका दीजिये ☆